# बुराँश

# संयुक्तांक - 2022


**संरक्षक**

डॉ. योगेन्द्र चन्द्र सिंह (प्राचार्य)

**प्रधान सम्पादक**

डॉ. पुष्पा रानी (असिस्टेंट प्रोफेसर)
हिन्दी विभागाध्यक्ष

**सह सम्पादक**

डॉ. सुनील कुमार (हिन्दी विभाग)
डॉ. जमशेद अंसारी (अंग्रेजी विभाग)
डॉ. सचिन सेमवाल (संस्कृत विभाग)

**छात्र सम्पादक**

कु. साक्षी बिष्ट (बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष)
कु. कलावती (बी.ए. प्रथम वर्ष)

**पत्रिका सम्बन्धी विवरण**

1- प्रकाशन स्थल : तलवाड़ी (चमोली)
2- प्रकाशन अवधि : वार्षिक
3. प्रकाशक का नाम : डॉ. योगेन्द्र चन्द्र सिंह, प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी-थराली
(चमोली) उत्तराखण्ड

**मुद्रक**

उत्तरायण प्रकाशन, हल्द्वानी



सर्वाधिकार - प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, तलवाड़ी (चमोली)


मैं डॉ. योगेन्द्र चन्द्र सिंह घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार सत्य हैं।

**डॉ. योगेन्द्र चन्द्र सिंह,**
**प्राचार्य/प्रकाशक**

# महाविद्यालय कुल गीत

आई है हिमवन्त शिखर से।
सरस ज्ञान की सुर लहरी।
पर्वत-पर्वत घाटी-घाटी
ज्ञान पिपासू हैं आये
जैसे बढ़ती बनती जाती
पिण्डर नद की नव लहरी। आयी है.....

देवदारू के इन्हीं द्रुमों से
बांज वनों की इसी छवि से
नये कलेवर लेकर ये
ज्ञान-अर्चना की देहरी। आयी है.....

नन्दा भी घूंघट पट से
पुलकित होकर देख रही
गिरिजा के आँगन में गूँजी
मधुर शारदा स्वर लहरी। आयी है.....

मूर्त रूप ले लेंगे सपने
तनिक परिश्रम हम कर लें
यही सोच त्रिशूल-धरा ने
बाँह जरा अपनी रख दी। आयी है.....

वह अजस्त्र ऊर्जा का सागर
वह अथाह अणुओं का त्रिशूल
प्रतिदिन प्रातः काल त्रिशूल
सूर्य रश्मियों से कहती
आयी है हिमवन्त शिखर से
सरस ज्ञान की सुर लहरी। आयी है.....

(शब्द रचना श्री नवीन कुमार नैथानी
संगीत रचना डॉ0 हेमन्त कुमार शुक्ला)

# प्राचार्य की कलम से-

*''भारत मानव जाति का पालना, मानव भाषण का जन्मस्थान, इतिहास की जननी, पौराणिक कथाओं की दादी और परम्परा की परदादी माँ है। मनुष्य के इतिहास में हमारी सबसे मूल्यवान और सबसे शिक्षाप्रद सामग्री केवल भारत में ही रखी गई है।''*

**-मार्क ट्वेन, प्रसिद्ध अमेरिकी साहित्यकार**

*''भारतीय दार्शनिकों का प्राचीन ज्ञान घोषित करता है, ''यह माया है, धोखे का पर्दा, जो नश्वर लोगों की आंखों को अंधा कर देता है, और उन्हें एक ऐसी दुनिया को निहारता है जिसके बारे में वे यह नहीं कह सकते कि यह है या नहीं : क्योंकि यह है एक सपने की तरह। यह रेत पर धूप की तरह है जिसे रेगिस्तान का पानी मानकर दूर तक चला जाता है, या रस्सी के टुकड़े को वह सांप समझ लेता है।''*

**-आर्थर शोपेनहावर, प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक, द वर्ल्ड ऐज़ विल एण्ड आइडिया (खण्ड 3 का 1)**

संधानपरक भारतीय मनीषा को रेखांकित करत उपरोक्त आप्तकथन, जिनमें ''**तत विजिज्ञासस्व**''- सृष्टि और उससे परे 'उसे' जानने की तीव्र गहन इच्छा परिलक्षित होती है, यदि इस संवाद के निमित्त आधारभूत प्रस्थान बिन्दु मान लिया जाय, तो निश्चित रूप से कहना होगा कि- आज के **सत्योत्तर दौर (पोस्ट-ट्रूथ ईरा)** के विस्मयकारी अस्मंजसयी आभासिक समय में '**भारतीयता' (इंडियननेस)** के विषय में बात करना बहुत कठिन हो गया है। यह इसलिए नहीं कि यह अपरिभाषेय है, हालाँकि अपनी जगह वह बात भी सही है, बल्कि इसलिए कि इसका सही चेहरा इतने रूप बिगाड़-आइनों से घिर गया है कि वह स्वयं के विषय में संशयग्रस्त हो उठा है। इन विकृति दर्पणों ने इसका कोई न कोई आयाम दबा दिया है। किसी ने इसकी लम्बाई पर बल दिया और इसे आध्यात्मिकता की जिराफी लकीर बना दिया। किसी ने इसकी सामाजिकता पर बल दिया और इसे एकदम बौनी हथिनी बना दिया, किसी ने इसको मूर्त आकार देने की कोशिश में चपटी बना दिया। इस स्थिति में जरूरी हो जाता है कि दर्पणों के घेरे से व्याख्याओं से सताई भारतीयता को पहले मुक्त किया जाय, तब इसके बारे में कोई 'भागीरथ' बात शुरू की जाय।

भारतीयता का मूलरूप ऊर्ध्वमूल है। यह बरगद है, न्यग्रोध है, जिसका विकास ऊपर की शाखाओं में तो होता है, नीचे भी ये शाखाएँ फेंकता है। यह अनेकमूल है, एकमूल नहीं। यह मूल सहित उखड़कर भी नष्ट नहीं होती। कबीर ने इसको '**मरजीवा**', तांत्रिकों ने '**छिन्नमस्ता**', वैष्णवों ने '**दरद दिवानी**' तो गीता में यह '**ब्रह्महवि**' है। इसमें जीने की अदम्य आकांक्षा है। भारतीयता उस सदाजीवा की तरह रसगर्भ है, जिसे हरी-भरी देखना हो तो अपना पानी उसे आप दें। आप में पानी है तो वह हरी-भरी है। भक्त रैदास ने भी पानी को ही पुकारा और कहा '**प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी; प्रभुजी, तुम दिया हम बाती।**'

भारतीयता काफी हद तक उन्मूल की जा चुकी है, बहुत से लोगों ने उसे जंगली घास माना और आधुनिकता के आग्रह को ऐसी जंगली घास

चाहिए, जो कंकरीट के कैदखानों में भी हरी रह सके, बल्कि घर के भीतर भी हरी रह सके, पर उसे जलते हुए चट्टान के ऊपर खुले आकाश को चुनौती देने वाली सदाजीवा नही चाहिए। भारतीयता भयंकर निराई और जहरीली दवाओं के छिड़काव से काफी हद तक घर, बाहर सर्वत्र नष्ट की जा चुकी है। वह केवल नंगी चट्टानों की दरारों में, नदी के ऊँचे कगारों की संधियों में और घने जंगलों की घनी छाया में बसी-बची हुई है। हाँ, उस किसान की कृपा से भी बची है, जो गेहूँवाद का शिकार नहीं हुआ, जिसे जौ की रोटी और बाजरे की रोटी अब भी मीठी लगती है।

भारतीयता की यह दुर्दशा इसलिए हुई कि वह शोभा या प्रसाधन या सजावट नहीं है। यह दूसरी बात है कि कबीर के वचनामृतों का गंडा बंधवाकर लोग प्रगतिशीलता में दीक्षित हो गए; पर वे लोग भी कबीर पर जीना चाहते हैं, कबीर को जीना नहीं चाहते; क्योंकि उन लोगों को अपना घर थोड़े ही फूँकना है। उनकी लुआठी शब्दों की लुआठी है, जिससे केवल शब्द सुलगाए जा सकते हैं। भारतीयता को अपना पानी देना, उसको आलोकित करने के लिए बाती बनाकर अपनी देह अर्पित करना – यह दुष्कर होता जा रहा है, इसीलिए भारतीयता प्रसुप्त है, मृत होना तो वह जानती ही नहीं।

कमल को अधिकतर लोगों ने ऊपर से ही देखा है, पर जल के भीतर के भाग को आप देखें तो कमल का जितना फैलाव ऊपर दिखता है, उतना ही जादुई फैलाव नीचे भी है, उसके अनेक मूल हैं। प्रत्येक मूल से या ग्रंथि से अलग प्ररोह फूटे हुए हैं, पर सब एक नाल से जुड़े हुए हैं। उस नाल में चन्द्रमा की किरणों की तरह सूक्ष्म धवल अनंत सूत्र हैं। नाल एक है, खड़ा है, नाल के भीतर और जल के बाहर लहरा रहा है। यह नाल बड़ा खुरदुरा होता है, कोमल मृणाल तंतुओं का यह कोश ऊपर से मुलायम नहीं होता। भारतीयता का नाल दंड है सत्य, निरंतर आलोक के लिए प्रतीक्षमाण, सूर्य आए और अर्घ्य देने के लिए तैयार, निरंतर जल से अधिक पंक से संबंध जोड़े हुए सच्चाई की जमीन होनी चाहिए, उसका देश-काल होना चाहिए। **'सत्येनोत्तमिता भूमिः।'**

सत्य की प्रतीति दो तरह से होती है- एक होती है निश्छल, निष्कपट भाव से। शबरी, निषाद और गोपी राम और कृष्ण को निश्छल भाव से साधते हैं, इसीलिए वे भक्ति की चरम सचाई हैं। वे राम और कृष्ण को अपने लिए नहीं, राम और कृष्ण के लिए साधते हैं। सत्य की दूसरी प्रतीति होती है निर्ममता से, छुरी की तेज धार से। युधिष्ठिर निर्ममतापूर्वक अपने प्राणप्रिय भाई, अपनी प्राणाधिका द्रौपदी की समीक्षा करते जाते हैं, पीछे नहीं देखते। वे ही युधिष्ठिर नरक में पहुंचते ही अपने बन्धुओं की दुर्दशा नहीं देख पाते और उनकी खातिर नरक में ही रहना पसंद करते हैं। सत्य निर्मम होता है, सर्व के आग्रह से, उसी सर्व के आग्रह से वह करुण भी होता है। सत्य की दो धाराएं हैं – अपार करुणा और निर्ममता।

भारतीयता में सत् चिद् आनंद की बात आती है; अस्ति, भाति और प्रियं की बात आती है; सत्य, दान, दया और तप की बात आती है। इस अतंरभूत सत्यानुसंधित्सा से अपने आप दो बातें उद्भूत होती हैं – एक तो बौद्धिकता का आग्रह, **'न हि ज्ञानेन सदृशं विद्यते'**, ज्ञान की तरह पवित्र वस्तु इस मानव-लोक में नहीं है। यह ध्यान देने

योग्य है कि इस ज्ञान का यह अर्थ नहीं है कि 'ज्ञानी' कहलाने के लिए आत्मपरीक्षण के नाम पर अपनी संस्कृति की कमजोरी पहचानते रहें और कोसते रहें कि मैं 'भारतीय' कहलाने में लज्जा का अनुभव करता हूँ। ज्ञान का अर्थ यह भी नहीं कि दूसरों में जो-जो खूबियाँ हमारी बतलाई, उनके प्रतिबिंबित ज्ञान को अपना ज्ञान मान लें। ज्ञान में ज्ञाता सामहित होता है, यह पूरे प्रणिपात (अपनी पूर्ववर्ती परम्परा के प्रति विनम्र भाव), परिप्रश्न (प्रश्न के बारे में प्रश्न) और सेवा से आता है। ज्ञान के ये तीन चरण बहुत महत्वपूर्ण हैं, बिना विनम्र हुए परम्परा को पूरी तरह से ग्रहण नहीं कर सकता। विनम्र होने का अर्थ है अपने को एकदम रिक्त कर देना। फिर आता है परिप्रश्न, कितने प्रश्न क्यों अनुत्तरित हैं; इन प्रश्नों का उत्तर हम स्वयं प्राप्त करें और प्राप्त करना यथेष्ट नहीं है, प्राप्त करके उन्हें हम अर्पित करें दूसरों की सेवा के लिए। ज्ञान की प्रक्रिया में अपने को तोड़ना और जोड़ना दोनों शामिल हैं। वह अमावस्या भी है, पूर्णिमा भी।

भारतीययता में तर्क-परिशुद्धता में निरंतर बल रहा है, पर तर्क का प्रयोजन तर्क नहीं है, प्रयोजन है जो तर्क के आगे चले जाता है। उस तर्कातीत को साधने के लिए तर्क आवश्यक है, क्योंकि दूसरे के तर्क के परास्त हो जाने का अनुभव जब तक अपने तर्क की पूरी प्रक्रिया में नहीं आता तब तक वह अनुभव झूठा रहता है। तर्क की अपर्याप्तता का ज्ञान तर्क से ही सम्भव है। बुद्ध और शंकराचार्य दोनों ने तर्क की पद्धति इसी उद्देश्य से अपनाई। शंकराचार्य के परवर्तियों - स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, महात्मा गाँधी इत्यादि ने भी इस परम्परा को जाग्रत रखा और अपने को होम करते हुए अदभ्य साहस के साथ सत्य का निरूपण किया। यानि ज्ञान संपत्ति नहीं है, वह आत्म-अतिक्रमण है, ज्ञान के यज्ञ में ज्ञानी स्वयं समिधा बनता है, तभी वह यज्ञ पूर्ण होता है। जैसा कि **प्रसिद्ध हिन्दी कवि, कुँवर नारायण** कहते हैं-

*एक शून्य है*
*मेरे और तुम्हारे बीच*
*जो प्रेम से भर जाता है।*

*एक शून्य है*
*मेरे और संसार के बीच*
*जो कर्म से भर जाता है।*

*एक शून्य है*
*मेरे और अज्ञात के बीच*
*जो ईश्वर से भर जाता है।*

*एक शून्य है*
*मेरे हृदय के बीच*
*जो मुझे मुझ तक पहुँचाता है।*

सत्य से दूसरी चीज जो अपने आप निकलती है, वह है संकल्प, सम्पूर्णता का भाव, आप्यायित होने का भाव, रसनिर्भर होने का भाव। कुछ जीवन शैलियाँ हैं, जो आशा पर जीती हैं, आशा दिलाती हैं - तुम्हें स्वर्ग मिलेगा, पाप से मुक्ति मिलेगी, ईश का अनुग्रह मिलेगा। मगर भारतीयता ऐसी कोई भी आशा नहीं दिलाती, वह आमंत्रित करती है- चलों संपूर्णता की ओर, सर्वमयता की ओर, खाली होकर भरने की ओर, रिक्त से अतिरिक्त की ओर, व्यक्त से अव्यक्त की ओर।

यह सर्वमयता, यह सर्वात्म भाव प्रायः गलत समझा जाता है और लोग इसका मजाक उड़ाते हैं। मानवतावादी दृष्टि से विद्या विनय-संपन्न

ब्राह्मण और श्वपाक चांडाल को समदृष्टि से देखना तो ठीक है, हालांकि कोई देखता नहीं, केवल कथा सुनाता है समदर्शिता की या रुपक बांधता है, पर कुत्ते और मनुष्य को सम देखना तो अजीब बात है। भला यह, या फिर मनुष्य और गाय या हाथी समान कैसे हो सकते हैं! मनुष्य तो मनुष्य ही है। ऐसा समझने वाले एक तो मनुष्यता के अहंकार से पीड़ित हैं और दूसरे उनके लिए समता का अर्थ है दो भिन्न बाजुओं की बराबरी। पर सर्वात्मभाव मानने वालों की दृष्टि में मनुष्य ऐसा विशिष्ट नहीं है और समता का अर्थ भिन्न वस्तुओं की बराबरी नहीं, अपितु एक तत्व से ओतप्रोतता है। समता की भावना होती है तो भेद नहीं रहता, भेद होता है व्यक्ति के स्तर पर। भारतीयता का उपक्रम व्यक्ति को निरंतर सामान्यीकृत करता है, व्यष्टि से निरंतर विभाजित करता है बृहत्तर समष्टि में। यह सर्वमयता ढोंग बनती है तो जरुर सर्वनाश करती है और यह भी सच है कि यह ढोंग बनी और आज भी बनी हुई है।

ढोंग बनने के कारण स्पष्ट हैं। बिना करुणा के सर्वमयता का कोई आधार नहीं बनता। करुणा के बिना सर्वमयता हवा में टँगी रहती है। करुणा अहिंसा का विधि रूप है, अहिंसा तो निषेध का, जीवन के खंडनात्मक निषेध का निषेध है, पर करुणा उसकी परिपूर्ति है। करुणा दोनों को छूती है, जो करुणा करता है और जो करुणा का पात्र होता है। वस्तुतः कारुणिक वह है, जो करुणा के पात्र से अधिक करुणा से आपूरित हो जाय। बुद्ध ने आम्रपाली को तब अंगीकारा, जब उसका अभिमान जर्जर हो गया और उसे आशा भी नहीं रही कि अब उसे कोई पूछेगा। करुणा का एक अन्य अभिलक्षण है उसकी निर्विकल्पता, निरपेक्षता। सभी अन्य धर्म उसके सापेक्ष होते हैं। वह साक्षात् भगवद्विग्रह होती है। एकनाथ जी गंगाजल की कॉवर लेकर अर्चन करने जा रहे थे। रास्ते में एक गधा प्यास से मर रहा था। उन्हें लगा नारायण तृषातुर है, उन्होंने कॉवर उसके मुंह में उड़ेल दी और घर लौट आए, अर्चन सफल हो गया। करुणा भारतीयता की महाशक्ति है। ज्ञान को 'हीरा' कहा गया है, करुणा को कमल, ज्ञान पुंस्तत्व है, करुणा नारी तत्व। जब-जब नारी-तत्व उपेक्षित हुआ, तब-तब भारतीयता ह्रास की ओर गई, तब-तब ढोंग बढ़ा, पुरुष दंभ बड़ा और उससे उभरने के लिए किसी-न-किसी रूप में आत्म-विसर्जन करने वाला नारी-तत्व सक्रिय हुआ और तभी संन्तुलन आ पाया। वैष्णव भक्तों ने, शाक्तों ने और निर्गुण संतों ने - सबने नारी-तत्व को साधकर ही पाखंड का निराकरण किया। हमारे पूर्ववर्ती युग में रामकृष्ण परमहंस और महात्मा गाँधी ने इसी तत्व को साधा। पर हमारे समाज में दंभ घर किए हुए है, वह टूटता नहीं, उसके कारण समाज जरूर टूट जाता है।

आज करुणा का स्रोत फिर सूख गया है और किनारे विलग हो गये हैं, उन्हें जोड़ने वाले सेतु नये-नये बन रहे हैं, पर किनारे सेतु से कहीं एक दूसरे को छू सकते हैं, वे तो धारा के मुख से एक-दूसरे से जुड़ते हैं। भेद और स्तर इन सेतुओं से और बढ़ते ही जा रहे हैं। देश को एक करने में न कानून सफल है, न शिक्षा, न समतावादी राजनीतिक दर्शन; क्योंकि सभी व्यक्ति को केन्द्र में रखते हैं, सर्व के लिए व्यक्ति के हृदय में और व्यक्ति के लिए सर्वमय के हृदय में जब तक करुणा की धारा उद्वेलित नहीं होती, तब तक एकता का अनुभव नहीं होता जो वस्तुतः समता का पर्याय है।

भारतीयता के शिव-मस्तक पर

सौंदर्य की जो ज्योति है, वह ज्योति चन्द्रमा अपने को सम्पूर्ण रूप से सूर्य के द्वारा निगीर्ण करा कर प्राप्त होती है। यह कला अमृता इसी माने में है कि मरकर भी यह मरी रहे, इसने भरा, यह खाली हुई तो भी भरने के व्यापार से भरी। भारतीयता की जीवन दृष्टि इसी अमृतत्व की सतत साधना है। अमृत पाना नहीं, दूसरों के लिए अमृत होते रहना ही अमृतत्व है।

भारतीयता के उपरोक्त ज्ञान-मीमांसक अधिष्ठापना के 'श्रेयस' संदर्भात्मक विमर्श के मानकीकरण पर मूल्यांकन करने के पश्चात् निश्चित रूप से हम पाते हैं कि आज के 'अवारा पूंजीवादी' वैश्विक दौर के द्रुतगति से दौड़ते-भागते समय में अपविकास और अपसंस्कृति की अंधी दौड़ ने हमारी जीवन शैली से मानवीय एवं उदात्त मूल्यों को विलुप्त कर दिया है। लेकिन यदि हमें सम्यक् विकास के सोपानों को तय करना है तो सबसे अहम है- श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अंगीकृत करना और उनकी सार्थक अभिव्यक्ति। इस दृष्टिकोण से महाविद्यालयीन पत्रिका सार्थक अभिव्यक्ति का एक शुरूआती सशक्त मंच बनती है, जिस पर विद्यार्थियों की बहुआयामी लेखन प्रतिभाओं का कलात्मक प्रतिबिम्बन की प्रस्तुति हो पाती है।

ऐसे ही विनीत प्रयास को संजोये 'बुरांश' का यह वर्तमान संयुक्तांक कोविड महामारी के लम्बे चुनौतीपूर्ण अवरोध के बाद युवा साहित्यिक सृजनात्मकता के विभिन्न आयामों, भावनाओं, विचारों एवं आलेखात्मक संवेदनाओं के साथ-साथ सत्रीय गतिविधियों तथा पाठ्येत्तर क्रियाकलापों का एक प्रवहमान समेकित समावेशन है। 'बुरांश' में छात्रों के ज्ञान-बोध को विकसित करने की प्रवृति तथा उनमें पठन-पाठन के प्रति रूझान उत्पन्न करने की प्रेरणा समाहित है। आशा है कि यह प्रयास छात्रों की संकोची प्रवृति को दूर कर नए आत्मविश्वास का संचरण करने में समर्थ होगा तथा छात्रों में सकारात्मक सार्थक चिंतन विकसित करने में सहायक होगा।

अंत में, ज्ञान की अधिष्ठात्री कमलासनी माँ सरस्वती को नमन, जिनकी अनुकम्पा से यह कार्य पूर्ण हो पाया। समस्त संदेशदाताओं, महाविद्यालय परिवार, जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष इस कार्य में सहयोगी रहे, विशेषत: विद्यार्थी वर्ग का आभार, जिन्होंने कहीं से कुछ ज्ञान प्राप्त कर, कहीं संकलन कर, कहीं स्वरचित भावाभिव्यक्ति के माध्यम से अपनी प्रतिभा को स्थापित करने का सराहनीय प्रयास किया। विशेष आभार समस्त सम्पादक- मण्डल, प्राध्यापकों एवं मुद्रणकर्ता उत्तरायण प्रकाशन का जिनके सहयोग और सामंजस्य से यह गुरुतर कार्य पूर्णता प्राप्त कर सका।

'बुरांश'- महाविद्यालयीन पत्रिका का यह संयुक्तांक आप सभी को इस आशा और विश्वास के साथ अर्पित कि हिमक्षेत्रे 'बुरांश' के सुवास पुष्पन के समान ही आप सब अपने जीवन में भी सतत् गतिशील वह जीवंत रहकर अपने क्षेत्र, समाज और देश को गौरवान्वित करेंगे।

इसी भाव-मन से.....

**(डॉ. योगेन्द्र चन्द्र सिंह)**
प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय,
तलवाड़ी (चमोली)

# सम्पादक की कलम से-

**''सार जंगल में त्वि ज क्वे न्हां रे क्वे न्हां,**
**फुलन छै के बुरूंश! जंगल जस जलि जां,**

**सल्ल छ, दयार छ, पई अयांर छ,**
**सबनाक फाड़न में पुडनक भार छ,**
**पै त्वि में दिलैकि आग, त्वि में छ ज्वानिक फाग,**
**रगन में नयी ल्वै छ प्यारक खुमार छ।**

**प्रसिद्ध छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत**

सर्वविदित है कि ''बुरांश'' जंगल में उच्च पर्वतीय स्थलों पर उगने वाला एक बसंती पुष्प है। यह अपनी रंगत और खूबसूरती के लिए जग प्रसिद्ध है। इसकी अभिप्रेरणा को आत्मसात करती महाविद्यालय पत्रिका- 'बुरांश' की रंगत और खूबसूरती उन विद्यार्थियों की हैं, जो सुदूर ग्रामीण पर्वतीय ग्रामाञ्चल से यहाँ आते हैं तथा जिनकी तरूणाई की मौलिक अभिव्यक्ति जिन डायरी से बाहर निकलकर इस पत्रिका के माध्यम से आत्मभिव्यक्ति का मंच पाती हैं। इस प्रकार- 'बुरांश' पत्रिका प्रबुद्ध महाविद्यालय परिवार समेत युवा होते मनोभावों का एक अनुपम दर्पण है। बुरांश के खिलने से वसंत युवा होता है और उसका यौवन छिपाए नहीं छिपता। बुरांश की भांति युवा मन हजारों संघर्षों, सपनों का स्वयं में आ रहे बदलाव को अपनी लेखनी से करता है। छात्र जीवन बड़ा ही चुनौतीपूर्ण होता है। **सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम्। सुखार्थी वा त्यजते विद्या विद्यार्थी व त्यजेत।।**

जिस प्रकार भीषण पर्वतीय ठंड को झेलकर बुरांश सुर्ख लाल बना रहता है। उसी प्रकार युवा मन भी अपने शिक्षण संस्थान सहित अपने समग्र परिवेश से जिजीविषापूर्ण ज्ञानपिपासा से आत्मभूत अन्तःक्रिया करते हुए अपने जीवन की उमंग, जोश तथा विवेक से युक्त सुर्ख लाल बनाने का उपक्रम करना है। आज जब माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करके युवा शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं, ऐसे में चमोली जनपद की दुर्गम पर्वतीय पिण्डर घाटी में अवस्थित 'बुरांश' सदृश राजकीय मॉडल महाविद्यालय, तलवाड़ी स्थानीय समाज के युवाओं के उच्च शिक्षार्जन के सपनों को विगत पच्चीस वर्षो से निरंतर मूर्त रूप दे रहा है।

वर्तमान 'ग्लोबल विलेज' की सर्वव्यापी इंटरनेट की आभासिक दुनिया में लुभावने फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्वीटर आदि से युक्त दुनिया में आज का युवा निश्चित रूप से इनसे प्रभावित है। लेकिन इसके साथ ही विद्यार्जन में अभीप्सित मनोयोग की बहुत अधिक मात्रा में कमी भी सर्वव्याप्त हो चुकी है। ऐसे दौर में साहित्यिक लेखन कार्य एवं पत्रिका

प्रकाशन 'बुरांश' की विषय पारिस्थितिकीय ही प्रतीत होता है। फिर भी अभिप्रेरणा मनुष्य के लिए हनुमंत संजीवन बूटी सरीखे मानी जाएगी, जिसने मूर्छित लक्ष्मण में जीवन संचरण किया था। संयोगवश संजीवनी बूटी का उद्‌गम भी इसी जनपद के द्रोणागिरी में माना गया है। इसी दैवीय अभिप्रेरणा से लेखन प्रवृत्तोन्मुख छात्र/छात्राओं की रचनाएं उपलब्ध हुई और दुष्कर प्रतीत होता पत्रिका प्रकाशन कार्य आगे बढ़ा।

पत्रिका की विषयवस्तु से लेकर प्रकाशन तक मेरी मदद को ईश्वरीय अनुकम्पा से अनगिनत सहयोगी हाथ आगे आए। इसी क्रम में उत्प्रेरणा और मार्गदर्शन हेतु मैं मुख्य संपादक के रूप में महाविद्यालय के संरक्षक एवं प्राचार्य डॉ. योगेन्द्र चन्द्र सिंह जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही संपादक मण्डल के सदस्य डॉ. नीतू पाण्डेय, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. सचिन सेमवाल व डॉ. जमशेद अंसारी जी को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। छात्र संपादक कु. कलावती, बी.ए. प्रथम वर्ष व कु. साक्षी बिष्ट, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष ने भी मनोयोग से संपादकीय कार्य में सहयोग प्रदान किया। साथ ही सभी छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन्होंने इस अथक प्रयास में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया।

अन्त में महाविद्यालय परिवार में अध्ययनरत छात्र- छात्राओं और प्राध्यापकों की रचनाओं की महक से युक्त 'बुरांश' का यह संयुक्तांक आपके हाथों में समर्पित है।

**(डॉ. पुष्पा रानी)**
मुख्य सम्पादक

# महाविद्यालय वार्षिक आख्या (2020–21 & 2021–22)

नगाधिराज हिमालय का प्रतिबिम्ब स्वरुप राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी, चमोली विगत 25 वर्षों से त्रिशूल पर्वत के सम्मुख तथा कल-कल निनाद करती पिण्डर नदी के दक्षिणी भाग पर स्थित होकर देवभूमि उत्तराखण्ड के सामाजिक तथा वैज्ञानिक अज्ञान को दूर करता हुआ ज्ञान की सरिता प्रवाहित कर रहा है। साल दर साल यह सफलताओं की ऊँचाईयों को छूकर नए आयाम स्थापित कर रहा है। शैक्षिक उन्नति की उपलब्धियों पर सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार स्वयं को गौरान्वित महसूस करता है।

इस वर्ष देश के विभिन्न विश्व विद्यालयों व संस्थानों में आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों, राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय सेमिनारों एवं कार्यशालाओं में महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने प्रतिभाग किया। जिसमें वनस्पति विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. प्रतिभा आर्य तथा डॉ. नीतू पाण्डे, भौतिकी विभाग ने 5-6 जून 2022 को स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वाराहाट में आयोजित 'पर्यावरण परिवर्तन' पर आधारित राष्ट्रीय सेमीनार में प्रतिभाग किया एवं डॉ. प्रतिभा आर्य द्वारा 7 दिवसीय (21-03-22 से 27-03-22) में एन.एस.एस. का ओरिएण्टेशन कार्यक्रम गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया। भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. नीतू पाण्डे द्वारा 2-3 जून, 2022 को दून विश्वविद्यालय, देहरादून में आयोजित "Professional Advancement Program for Women in STEM" राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिभाग किया। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पा रानी ने 27-29 जून 2022 को सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा में आयोजित अंर्तराष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिभाग किया गया।

वर्ष 2020 में महाविद्यालय को मॉडल कॉलेज के रूप में चयनित किया गया। रूसा फेज-2 के अन्तर्गत रूपये 400 लाख की परियोजनाओं का विधिवत शिलान्यास अक्टूबर 2020 में माननीय उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत व थराली विधान सभा विधायिका श्रीमती मुन्नी देवी शाह द्वारा किया गया। रूसा- फेज (2) के अन्तर्गत महाविद्यालय में 03 स्मार्ट क्लास रूम, कान्फ्रेंस हॉल तथा लाइब्रेरी हॉल बनकर तैयार हो गया है। नई सुविधा के अन्तर्गत महाविद्यालय में 19 कम्प्यूटर, 200 छात्र कुर्सी-मेज, 20 कम्प्यूटर कुर्सी-मेज, 20 स्टाफ कुर्सी व 10 स्टाफ मेज की खरीदारी भी की गई एवं 9-1-2021 में वर्चुअल माध्यम से उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत एवं विधान सभा प्रतिनिधि मण्डल अध्यक्ष श्री रणजीत सिंह नेगी, ग्राम प्रधान श्रीमती दीपा देवी एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. वाई.सी. सिंह द्वारा रूसा-फेज - II के अंतर्गत निर्मित भवनों का उद्घाटन किया गया।

राज्य में मुख्यमंत्री फ्री टेबलेट योजना के अंतर्गत महाविद्यालय को कुल 57,00000=00 रूपये की धनराशि प्राप्त हुई। महाविद्यालय में अध्यनरत कुल 450 छात्र/छात्राओं को योजना के अनुसार 12000=00 रूपये की धनराशि बैंक खातों (DBT) में हस्ताक्षरित की गई।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा उच्च शिक्षा की स्थिति को चिह्नित करने के लिए AISHE (All India Survey of higher Education) के तहत महाविद्यालय का (2020-21) डाटा दिया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से कई महत्वपूर्ण गतिविधियों का समय-समय पर आयोजन किया गया- जिसमें मुख्यतः जन जागरूकता रैली (नशा विरोधी, सड़क सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा), मतदान जागरूकता रैली, मतदाता पहचान पत्र पंजीकरण शिविर, कोविड-वैक्सीनेशन कैम्प, एवं पाँच एक दिवसीय सामान्य कैम्प एवं एक सात दिवसीय विशेष कैम्प का आयोजन किा गया, जिसमें शिविरार्थियों ने बौद्धिक परिचर्चाओं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लेने के साथ-ग्राम स्वच्छता अभियान भी चलाया।

पुस्तकालय महाविद्यालय का पावर हाउस माना जाता है। जहाँ से विद्यार्थी अपने बौद्धिक स्तर के विकास हेतु ज्ञान वर्धक पुस्तकें प्राप्त करते हैं। महाविद्यालय के पुस्तकालय में विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन हेतु 8559 पाठ्य एवं संदर्भ पुस्तकें हैं। छात्र-छात्राएं इन अमूल्य ज्ञान वर्धक पुस्तकों से अधिकाधिक लाभान्वित हो रहे हैं। निर्धन छात्रों को सम्पूर्ण सत्र के लिए पुस्तकें उपलब्ध कराने में बुक बैंक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

इण्टरनेट के माध्यम से विश्व के किसी भी ज्ञान से लाभान्वित हुआ जा सकता है। छात्र-छात्राओं को सुविधा देने हेतु महाविद्यालय में कम्प्यूटर कक्ष बनाया गया, ताकि छात्र

सुविधा का लाभ उठा सके।

महाविद्यालय में 5-8-2021 को भौतिक विज्ञान विभाग एवं गणित विभाग द्वारा B.Sc (PCM Group) के छात्रों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं को भौतिक विज्ञान एवं गणित विषयों से सम्बन्धित भविष्य में कैरियर की सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही विभिन्न Online Platform की जानकारी छात्रों को दी गई, यह कार्यक्रम भौतिक विज्ञान विभाग की प्राध्यापिका डॉ. नीतू पाण्डे एवं गणित विभाग के प्राध्यापक श्री कुलदीप जोशी द्वारा आयोजित किया गया।

सत्र 2021-22 में 11-10-2021 में ''जलवायु परिवर्तन का हिमालय क्षेत्र की वनस्पतियों पर प्रभाव'' पर वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमें कुमाँऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एस.सी. सती एवं भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. पी.सी. तिवारी एवं जी.बी. पन्त कोसी कटारमल, अल्मोड़ा के डॉ. जी.सी.एस. नेगी द्वारा हिमालय क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति पर बदलाव एवं प्रभाव व जल संरक्षण पर व्याख्यान एवं पारिस्थितिकी तंत्र में जलवायु परिवर्तन में शोध कार्य पर विस्तृत जानकारी प्रदान करायी गई। कार्यक्रम मे उच्च शिक्षा निदेशक प्रो. पी.के. पाठक द्वारा कार्यक्रम के सफल संचालन की तारीफ की गई। कार्यक्रम का आयोजन विभाग की प्राध्यापिका डॉ. प्रतिभा आर्य द्वारा किया गया।

महाविद्यालय में 23-10-2021 को हिन्दी विभाग द्वारा एक दिवसीय वेबिनार ''हिन्दी साहित्य दर्पण में उत्तराखण्ड'' का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता प्रो. देव सिंह पोखरिया, आचार्य हिन्दी विभाग एस.एस जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा, डॉ. प्रीति आर्य एसोसिएट प्रो. हिन्द विभाग, एस. एस. जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा, प्रो. शम्भूदत्त पाण्डेय 'शैलेय', हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय रूद्रपुर एवं श्री पंकज बिष्ट, हिन्दी वरिष्ठ साहित्यकार, नई दिल्ली द्वारा हिन्दी की कविताओं, नाटकों एवं संस्मरण पर सारगर्भित चर्चा-परिचर्चा की गई। कार्यक्रम का आयोजन हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पा रानी द्वारा किया गया।

महाविद्यालय में गठित IQAC (आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ) महाविद्यालय की गुणवत्ता संवर्धन गतिविधियों पर निरन्तर कार्यरत है।

महाविद्यालय में वर्ष 2021-22 में विश्व विद्यालय परीक्षा हेतु 501 परीक्षार्थी पंजीकृत रहे। महाविद्यालय के संस्थागत परीक्षार्थियों का वर्ष 2021 का परीक्षाफल निम्न प्रकार रहा है-

| | | | |
|---|---|---|---|
| **B.A. I Year** | **40.78%** | **B.Sc I Year** | **80.00%** |
| **B.A. II Year** | **91.30%** | **B.Sc II Year** | **90.62%** |
| **B.A.V Sem.** | **49.10%** | **B.Sc V Sem** | **78.57%** |

उपरोक्त वर्णित शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर क्रियाकलापों के संचालन में महाविद्यालय परिवार अभिभावकों, जन प्रतिनिधियों एवं प्रशासन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिससे महाविद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है।

**(डॉ प्रतिभा आर्या)**
मुख्य शास्ता

❖❖❖

# विषय सूची

## हिन्दी अनुभाग


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1– | हिन्दी में कैरियर (आलेख) | –डॉ. पुष्पा रानी, विभागाध्यक्ष एवं डॉ. सुनीता भण्डारी | 3 |
| 2– | अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम एवं कैरियर (आलेख) | –रजनीश कुमार | 4–5 |
| 3– | भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रदूत – राजा विजय सिंह (आलेख) | –अनुज कुमार | 6–7 |
| 4– | सैनिक (कविता) | –गोपाल फरर्स्वाण | 7 |
| 5– | दुनिया (कविता) | –कु. मीनाक्षी | 7 |
| 6– | अकस्मात् भ्रमण जिज्ञासा (यात्रा वृतान्त) | –डॉ सचिन सेमवाल | 8–13 |
| 7– | मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (आलेख) | –डॉ शंकर राम | 14 |
| 8– | सपनों की नाव (कविता) | –कु. हेमा गिरी | 14 |
| 9– | भारतीय हिन्दी सिनेमा का सफर–एक सामाजिक संदर्भ (आलेख) | –मोहित उप्रेती | 15 |
| 10– | मेरी छुट–पुट कविताएं | –डॉ. पुष्पा रानी | 16 |
| 11– | विज्ञान से जुड़े अविस्वसनीय तथ्य (Amazing Facts About Science) | –कु. रिया मौर्या | 17 |
| 12– | पिथौरागढ़ का रंगमंचीय लोकनाट्य : 'हिलजात्रा' (आलेख) | –डॉ. सुनीता भण्डारी | 18–19 |
| 13– | राष्ट्र के नाम पाती | –डॉ. ललित जोशी | 19–20 |
| 14– | जल ही जीवन को सींचेगा ''बिन जल भयावह कल'' (आलेख) | –डॉ. प्रतिभा आर्य | 21 |
| 15– | राजनीति विज्ञान में कैरियर – एक अवलोकन | –मनोज कुमार | 22–23 |
| 16– | 'गीतांजलिश्री कृत 'रेत समाधि' को अंतराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार (आलेख) | –डॉ. सुनील कुमार | 24–25 |
| 17– | ई–शासनः अवधारणा एवं भवष्योन्मुखता (आलेख) | –सुनील कुमार | 26–27 |
| 18– | बैजनाथ मन्दिर का इतिहास | –कु. मोनिका खाती | 27 |
| 19– | स्वर्ग से सुन्दर मेरा गाँव (कविता) | –कु. दीपा दान | 28 |
| 20– | नंदा देवी लोकजात यात्राः उत्तराखण्ड की वर्षो पुरानी परम्परा – | कु. मनीषा रावत | 29 |
| 21– | हिन्दी साहित्य (आलेख) | –कु. कमला | 30 |
| 22– | आजादी (कविता) | –कु. पूजा बिष्ट | 31 |
| 23– | नई विधायें (कविता) | –कु. लीला | 31 |
| 24– | कोरोना वायरस : एक वैश्विक चुनौती एवं निदान (आलेख) | –कु. कलावाती | 32–33 |
| 25– | बधाणगढ़ी का इतिहास | –कु. उर्मिला नेगी | 33 |
| 26– | शेर और लकड़हारा (लघु कथा) | –डॉ सुनील कुमार | 34 |

27– सच्ची घटना पर आधारित कहानी –कु. पूजा 35
28– संयम से हो समस्या का समाधान (आलेख) –कु. रचना गड़िया 35
29– जिन्दगी की आठ सीढ़ियाँ (प्रेरक आलेख) –कु. इन्द्रा अरोरा 36
30– प्रेरक कहानी –कु. इन्द्रा अरोरा 36
31– प्रतिभा की पहचान (प्रेरक कहानी) –कु. अल्पना 37
32– बेटी की मन की व्यथा (कविता) –अशोक कुमार आर्या 37
33– बादल और माही (कविता) – डॉ. सुनील कुमार 38
34- सौ सुनार की, एक लोहार की (कविता) – डॉ. सुनील कुमार 38
35- न्याय की परिभाषा (कविता) – डॉ. सुनील कुमार 38
36- फिर परमाणु युद्ध (कविता) – डॉ. सुनील कुमार 38
37- यूक्रेन और रूस युद्ध (कविता) – डॉ. सुनील कुमार 38
38– पिता की याद आई (कविता) –अशोक कुमार आर्या 39
39– नन्हीं चीटी (कविता) –कु. रंजना फर्स्वाण 39
40– बेटी से बहू का सफर (कविता) –कु. रोशनी जोशी 40
41– कबीरदास जी के दोहे –कु. रोशनी जोशी 40
42– जिन्दगी का सफर (कविता) –कु. संतोषी 41
43– क्या है बड़ी दी? (कविता) –कु. पूजा 41
44– मेरी माँ (कविता) –कु. अल्पना 42
45– बेरोजगारी (कविता) –दीपक सिंह बिष्ट 42
46– मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़! .... (कविता) –कु. उर्मिला 43
47– महिला दिवस पर विशेष – क्यों? (कविता) –कु. रचना गड़िया 43
48– हसीन लम्हें (कविता) –कु. लीला 44
49– भ्रूण हत्या (कविता) –कु. उर्मिला 44
50– जीवन का लक्ष्य (कविता) –कु. दीपा 45
51– एक बेटी (कविता) –दया कृष्ण 45
52– मेरा सलाम (कविता) –कु. बबली 46
53- तुम चलो तो सही (कविता) –कु. एकता जोशी 46
54– शेष चुभन (कविता) –कुलदीप महर 47
55– कन्या भ्रूण हत्या (कविता) –कु. ममता बिष्ट 47
56– सपना मेरा (कविता) –प्रदीप कुमार 48
57– मेरा बचपन (कविता) –कु. साक्षी बिष्ट 48

## संस्कृत अनुभाग


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1– | संस्कृत–भाषाया महत्त्वम् | –कु. सीमा | 49 |
| 2– | नीतिवचनाभूषणानि | –कु. गायत्री | 50 |
| 3– | गीता सूक्ति मौक्तिकम् | –कु. ईशा | 50 |
| 4– | संस्कृत–गीतम् रे चटक! | –कु. लीला | 51 |
| 5– | एहि हसामः अहं चितः अस्मि | –कु. बबली | 51–52 |


## English Section


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1- | Digital Addiction: Time to Detox | -Dr. Lalit Joshi | 55 |
| 2- | The Life is Beautiful (Poem) | -Dr. Jamashed Ansari | 55 |
| 3- | Mathematics as a Tool for Happiness | -Kuldeep Joshi | 56 |
| 4- | The Shakespearean Theatre | -Km. Ritika | 56 |
| 5- | Shelley's Major Poetic Works | -Km. Deveshwari Rawat | 57 |
| 6- | Biography of Thomas Hardy | -Km. Roshni Rawat | 58 |
| 7- | Othello | -Km. Indra Arora | 59 |
| 8- | The Renaissance (1485-1649) | -Km. Roshni Joshi | 59 |
| 9- | Career in Chemistry after Graduation | -Dr. Shankar Ram | 60 |
| 10- | Few Lines on Moral Values | -Km. Rachna | 60 |
| 11- | Next Generation Technology | -Dr. Neetu Pandey | 61 |
| 12- | Time (Poem) | -Km. Himani | 62 |
| 13- | Don't Give Up (Poem) | -Km. Ekta Joshi | 62 |
| 14- | A Mother's Love (Poem) | -Km. Alpna | 62 |
| 15- | Higher Study and Career Options after B.Sc. in Zoology | -Dr. Nisha Dhoundiyal | 63-44 |

*विभागीय गतिविधियाँ* 66–75
**( Departmental Reports)**

महाविद्यालय परिवार 76


❖❖❖

# हिन्दी – अनुभाग

# हिन्दी में कैरियर

● डॉ. पुष्पा रानी, विभागाध्यक्ष एवं डॉ. सुनीता भण्डारी
हिन्दी विभाग

भारत में हिन्दी सबसे महत्वपूर्ण भाषा है। वह भारत की बाईस आधिकारिक भाषाओं में से एक है और राजभाषा का अधिकार रखती है। संसदीय कार्य से लेकर न्यायिक और सरकारी संस्थाओं में इसे ऑफिसियल कम्यूनिकेशन की तरह उपयोग किया जाता है। हिन्दी विश्व स्तर पर तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। जिसमें लगभग 425 मिलियन लोग इसे अपनी पहली भाषा के रूप में पहचानते हैं और अतिरिक्त 120 मिलियन लोग हिन्दी को दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं।

हालांकि इन उपलब्धियों के बाद भी आज कैरियर बनाने के लिए हिन्दी को अंग्रेजी की तुलना में कमतर आंका जाता है लेकिन यह सत्य नहीं है। हिन्दी के क्षेत्र में कई बेहतरीन कैरियर ऑफसन मौजूद हैं। हम आपको टॉप 10 ऐसे ही कैरियर ऑफसन के बारे में बताने जा रहे हैं जहाँ आप हिन्दी भाषा की मदद से अपना शानदार कैरियर बना सकते हैं।

1- **राजभाषा ऑफिसर** - ये राष्ट्रीयकृत बैंकिंग संस्थानों में राजभाषा ऑफिसर के रूप में कार्य करते हैं। इनकी नियुक्ति बैंक की सभी शाखाओं में होती है। इनकी प्राथमिक भूमिका ग्राहकों को आने वाली दिक्कतों को कम करना व रोज के कामों में राजभाषा को बढ़ावा देना है।

2- **जर्नलिज्म** - अगर आपने हिन्दी भाषा में जर्नलिज्म का कोर्स किया है तो आप पत्रकारिता के क्षेत्र में एंकर, न्यूज एडिटर, न्यूज राइटर और रिपोर्टर आदि जैसे कई जॉब प्रोफाइल पर रहकर अच्छी सैलरी हासिल कर सकते हैं। आपको न्यूज पेपर, रेडियो चैनलों, समाचार चैनलों, पत्रिकाओं और डिजिटल समाचार और मीडिया जैसे कई कैरियर ऑफसन मिल जायेंगे।

3- **कंटेंट राइटर या एडिटर** - आज के समय में कंटेंट राइटर या एडिटर की जॉब को बेहतर विकल्प माना जाता है। इनका काम ब्लॉग बनाना, मार्केटिंग कॉफी, सोशल मीडिया कॉपी आदि लिखना व उसको एडिट करना होता है। हिन्दी या मास कम्यूनिकेशन में डिग्री होल्डर आसानी से कंटेंट राइटर और एडिटर्स पब्लिकेशन हाउस और मीडिया हाउस व एड ऐजेंसी में काम कर सकता है।

4- **ट्रांस्लेटर** - आज जिस तरह से पूरे विश्व का एकीकरण हो रहा है उसमें हिन्दी ट्रांसलेटर के लिये नये रास्ते खुल गये हैं। हिन्दी ट्रांस्लेटर के तौर पर आप घर पर बैठकर काम कर सकते हैं। कई बड़ी कम्पनियां भी अपने कंटेंट को हिन्दी में मुहैय्या कराने के लिए ट्रांस्लेटर की नियुक्ति करती है।

5- **इंटर प्रिन्टेशन** - इंटरप्रेटर का काम भी ट्रांस्लेटर की तरह एक लैंग्वेज का दूसरी लैंग्वेज में अनुवाद करना होता है। इंटरप्रेटर उन शब्दों को ट्रांस्लेट करता है जो दूसरा व्यक्ति अलग भाषा में कहता है। इंटरप्रेटर के तौर पर राजनयिक मिशनों, संयुक्त राष्ट्र और विदेशी छात्रों के साथ काम कर सकते हैं।

6- **वॉयस ओवर आर्टिस्ट** - एंटरटेनमेंट की दुनिया आज बहुत व्यापक हो गई है। हर माह कई विदेशी फिल्में व कार्टून भारत में लॉच हो रहे हैं। यदि आप बोलने में कुशल व अच्छी आवाज है तो वॉयस ओवर को कैरियर के रूप में अपना सकते हैं।

7- **हिन्दी टाइपिस्ट या स्टेनो ऑफिसर** - हिन्दी स्टेनोग्राफर और टाइपिस्ट की डिमांड कई दशकों से बनी हुई है। हिन्दी टाइपिस्ट और स्टेनोग्राफर का कोर्स कर आप सरकारी/प्राइवेट नौकरी पा सकते हैं।

8- **स्पीच राइटर** - अगर आपमें लिखने की क्षमता है तो आप स्पीच राइटर बन सकते हैं। स्पीच लिखने के लिए लैंग्वेज पर कन्ट्रोल की जरुरत होती है अगर आप में काबिलियत है तो किसी राजनीतिक पार्टी के साथ सरकारी क्षेत्र, विज्ञापन, विज्ञापन एजेंसियों, कार्पोरेट में भी काम कर सकते हैं।

9- **नॉविलिस्ट/राइटर/पोयट** - अगर आपको नये तरीके से क्रियेटिव स्टोरी लिखनी आती है तो पोयट, नॉविलिस्ट, राइटर बन सकते हैं। आज के समय में ऑडियो बुक, किन्डल सपोंटेड, ई-बुक्स के राइज में इस फील्ड में लोगों को कैरियर बनाने के नये आयाम दिए हैं।

10- **हिन्दी टीचर** - हिन्दी टीचर की जॉब सदाबहार ऑफसन है। टीचर बनना सभी को पसंद होता है। अगर आपकी हिन्दी में अच्छी पकड़ है तो किसी भी सरकारी, निजी शिक्षण संस्थान में हिन्दी टीचर के तौर पर जॉब कर सकते हैं। शिक्षा विभाग में प्राइमरी, जूनियर, हाईस्कूल, इण्टरकॉलेज व डिग्री कॉलेज सभी में हिन्दी भाषा का पद अनिवार्य है।

❖❖❖

# अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम एवं कैरियर

● **रजनीश कुमार**
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र विषय अपनी उपयुक्तता और नौकरी के बाजारों में भारी जरूरत के कारण सदाबहार विषयों में से एक है। जिसकी हमारे दैनिक जीवन में आवश्यकता के कारण राष्ट्रीय और सार्वभौमिक दोनों स्तरों पर उच्च मांग है। अर्थशास्त्र का क्षेत्र बहुत ही रोचक है। यह कैरियर के साथ-साथ नौकरी की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण विषय है। अर्थशास्त्र में कैरियर विकल्पों में अर्थशास्त्री, वित्तीय जोखिम विश्लेषक, लेखाकार, निवेश विश्लेषक, वित्तीय सलाहकार, डेटा विश्लेषक और बहुत कुछ शामिल है। वैश्वीकरण और विश्व अर्थव्यवस्था के जुड़ने के बाद अर्थशास्त्र विषय में नौकरी के अवसरों में वृद्धि हुई है। एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित अर्थशास्त्री की न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में उच्च मांग रहती है। तेजी से विकसित हो रहे वैश्वीकरण के कारण बड़े व्यापारिक संगठनों में अर्थशास्त्रियों को वित्तीय विश्लेषकों, शोधकर्ताओं और सलाहकारों के रूप में काम पर रखा जाता है।

**अर्थशास्त्री कैसे बनें?**

आप स्नातक डिग्री के साथ अर्थशास्त्री बन सकते हैं। भारत भर में कई विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र में स्नातक डिग्री प्रदान करते हैं। अर्थशास्त्री के रूप में अपना कैरियर शुरू करने के लिए आप निम्न स्नातक डिग्री में से चयन कर सकते हैं:

BA in Economics, BA in Applied Economics, BA in Business Economics, BA (Honours) in Economics, BSc in Economics.

अर्थशास्त्र में स्नातक पूरा करने के बाद, आप विभिन्न विश्वविद्यालयों में उपलब्ध स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के माध्यम से मास्टर डिग्री का विकल्प चुन सकते हैं जिसके अंतर्गत निम्नलिखित स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में से चयन कर सकते हैं :

M.A. in Economics, M.A. in Econometrics, M.A. in Business Economics, M.A. in Applied Economics, M. Phil in Economics, M.Sc. in Economics, Master of Business Adminitsration (MBA) in Business Economics.

इसके अलावा आप पी.एच.डी. करने के लिए डॉक्टरेट स्तर तक अपनी शिक्षा Economics या Econometrics में जारी रख सकते हैं।

**स्नातक स्तर में पाठ्यक्रम :** इन कार्यक्रमों के छात्र व्यष्टि अर्थशास्त्र (Microeconomics), समष्टि अर्थशास्त्र (Macroeconomics), उपयोगिता, बाजार में मांग तथा पूर्ति के नियम, बाजार प्रतियोगिता, उत्पादन के कारकों का मूल्य निर्धारण, ब्याज, जनसांख्यिकीय विशेषताएं, कृषि और भूमि विकास, लघु और कुटीर पैमाने के उद्योग, भारतीय बुनियादी ढांचे, अर्थव्यवस्था, समष्टिचर, रोजगार के सिद्धांत, राजस्व, सार्वजनिक वित्त, बैंक, मुद्रा, मुद्रास्फीति, अपस्फीति और मंदी आदि जैसे विषयों का अध्ययन करते हैं।

**स्नातकोत्तर स्तर में पाठ्यक्रमः** अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री करने वाले छात्र सूक्ष्म आर्थिक विश्लेषण, प्राथमिक सांख्यिकी, मूल्य निर्धारण और वितरण के सिद्धांत, समष्टि आर्थिक विश्लेषण, अर्थशास्त्र के गुणात्मक और मात्रात्मक तरीके, अंतर्राष्ट्रीय वित्त उद्योग के अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र के विकास मॉडल और भारतीय अर्थव्यवस्था के मुद्दों जैसे विषयों का अध्ययन करते हैं।

अर्थशास्त्र में कैरियर बनाने के लिए कुछ आवश्यक कौशल की आवश्यकता होती है जो इस प्रकार हैं-

1. आपके पास बेहतर गणितीय ज्ञान होना चाहिए ताकि आप अर्थशास्त्र में बेहतर कैरियर बनाने के लिए विभिन्न आंकड़ों के साथ काम कर सकें।
2. आपको हमेशा करेंट अफेयर्स से अवगत रहना चाहिए और आपको विश्लेषणात्मक रूप से उनकी आवश्यकता को समझना होगा।
3. आपके पास शोध दिमाग होना चाहिए और अर्थव्यवस्था के हर पहलू पर शोध करने की क्षमता होनी चाहिए।
4. आपको पर्याप्त रूप से प्रेरित होना चाहिए और परिपूर्ण

होने का प्रयास करना चाहिए।

5. आपको विभिन्न परिदृश्यों में तार्किक रूप से सोचना होगा।

6. अर्थशास्त्र में कैरियर बनाने के लिए गणितीय ज्ञान में प्रवीणता आवश्यक है।

7. आपके पास बेहतर संचार कौशल होना चाहिए ताकि आम जनता को जटिल आर्थिक विश्लेषण की व्याख्या की जा सके जो अर्थशास्त्र नहीं जानते हैं।

**भारत में अर्थशास्त्र में कैरियर का दायरा**

**शिक्षण पेशा (Teaching Proffession):-** यह डिग्री पूरी करने के बाद अर्थशास्त्र में शिक्षण सर्वश्रेष्ठ कैरियर में से एक है। अर्थशास्त्र स्नातक के रूप में आप CTET या अन्य राज्य स्तरीय शिक्षण परीक्षाओं में शामिल हो सकते हैं और शिक्षक बन सकते हैं। अर्थशास्त्र में कम से कम 55% अंकों के साथ स्नातकोत्तर पूरा करने के बाद किसी भी विश्वविद्यालय से या तो पीएचडी कर सकते हैं या वर्तमान में राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (NTA) द्वारा आयोजित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) के लिए उपस्थित हो सकते हैं। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर उम्मीदवार भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में सहायक प्रोफेसर के पद के लिए पात्र बन सकता है या किसी शोध संस्थान में जूनियर रिसर्च फेलोशिप प्राप्त कर सकता है। पी.एच.डी. डिग्री धारकों को हर क्षेत्र में नौकरी के अधिक अवसर मिलने की सम्भावना होती है।

**भारतीय आर्थिक सेवाएं (Indian Economy Service):-** अर्थशास्त्र में एक और बेहतरीन कैरियर स्कोप IES है। अर्थशास्त्र स्नातकोत्तर में कम से कम 55% अंकों के साथ प्रतिभागी भारतीय आर्थिक सेवा परीक्षा में उपस्थित हो सकते हैं। यूपीएससी आईईएस परीक्षा आयोजित करता है। चयन के बाद, देश के लिए योजना आयोग में आर्थिक योजनाकार और विश्लेषक जैसे कार्य करने होते हैं। उन्हें योजना बोर्ड, आर्थिक मामलों के मंत्रालय, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण, और अन्य विभागों में भी रखा जा सकता है।

**सार्वजनिक क्षेत्र के भीतर बैंकिंग सेवाएं (Banking Services within the Public Sector):-** यह अर्थशास्त्र में सबसे आम और लोकप्रिय कैरियर स्कोप है। भारतीय रिजर्व बैंक अपनी अलग-अलग भर्ती परीक्षाओं के माध्यम से बैंकिंग क्षेत्र में अर्थशास्त्रियों की भर्ती करता है। जिसमें वह मुख्यता आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्य करते हैं। आप नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च, नई दिल्ली, इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, इंस्टीट्यूट ऑफ एकोनॉमिक ग्रोथ, नई दिल्ली जैसे अनुसंधान संस्थानों में भी नौकरी पा सकते हैं। बैंकिंग क्षेत्र में लीन होने के लिए आईबीपीएस और स्टेट बैंक भर्ती परीक्षा में शामिल हो सकते हैं।

**निजी और विदेशी बैंक (Private and foreign Banks):-** एक अर्थशास्त्र डिग्री धारक निजी और विदेशी बैंकों के लिए शाखा प्रबंधक, क्लर्क, आर्थिक सलाहकार, विकास अधिकारी आदि प्रयास कर सकता है।

**एक सलाहकार के रूप में काम (Work As A Consultant):-** अर्थशास्त्र स्नातक एक आर्थिक सलाहकार के रूप में स्वतंत्र रूप से काम कर सकते हैं। निजी क्षेत्र के विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधान और परामर्श के मामले में, फर्म नौकरी के उत्कृष्ट अवसर प्रदान कर सकती है।

**उद्यमिता (Entrepreneurship):-** अर्थशास्त्रियों के पास बाजार ज्ञान की गहरी जानकारी होती है। वे बाजार के रूझान और व्यापार के लाभदायक क्षेत्रों को जल्दी से समझ जाएंगें। इसलिए अपना खुद का व्यवसाय बनाकर, वे जल्द ही वृद्धि हासिल कर सकते हैं। इसलिए इस तरह से बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर सृजित किए जा सकते हैं। यह देश में बेरोजगारी के मुद्दे को कम करने में भी मददगार होगा।

❖❖❖

**अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो।**

-अब्दुल कलाम

# भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रदूत – राजा विजय सिंह

● **अनुज कुमार**
इतिहास विभाग

1757 ई0 में प्लासी के फलस्वरूप भारत में अंग्रेजी राज की स्थापना के साथ ही उसका प्रतिरोध प्रारम्भ हो गया। 1857 की क्रान्ति तक भारत में अनेक संघर्ष हुए। इसी प्रकार की एक घटना 1824 में घटित हुई। 1824 की क्रान्ति को सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम का अग्रगामी और पूर्वाभ्यास कहा जाता है।

आधुनिक हरिद्वार जनपद में लंढौरा नामक एक कस्बा है। यह कस्बा 1947 तक पवार वंश की राजधानी रहा है। लंढौरा रियासत में 804 रियासती गांव थे। यहाँ के शासकों का प्रभाव समूचे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में था। सन् 1813 में लंढौरा के राजा रामदयाल सिंह की मृत्यु हो गयी। उनके उत्तराधिकार के सवाल पर राजपरिवार में गहरे मतभेद उत्पन्न हो गये। स्थिति का लाभ उठाते हुए अंग्रेजी सरकार ने रियासत को विभिन्न दावेदारों में बांट दिया और रियासत के बड़े हिस्से को अपने राज्य में मिला लिया। लंढौरा रियासत का ही ताल्लुक था, कुंजा- बहादरपुर, इस तालुके में 44 गांव थे। सन् 1819 में विजय सिंह यहां के ताल्लुकेदार बने। विजय सिंह लंढौरा राजपरिवार के निकट सम्बन्धी थे। वे अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीतियों के विरोधी थे।

दूसरे शासन के वित्तीय कुप्रबन्धन और सूखे ने स्थिति को किसानों के लिए अति विषम बना दिया। बढ़ते राजस्व और अत्याचार ने किसानों को विद्रोह हेतु मजबूर कर दिया। यहां किसानों के बीच कुछ क्रान्तिकारी सैन्य संगठन थे। अंग्रेज इन संगठनों को डकैतों का गिरोह कहते थे। लेकिन इन्हें आम जनता का समर्थन था। इनमें से एक संगठन का प्रमुख नेता कल्याण सिंह था। यह संगठन देहरादून क्षेत्र में सक्रिय था। यहां इसने अंग्रेजी राज्य की चूले हिला रखी थी। इसी बीच राजा विजय सिंह ने पश्चिमी यू.पी. के सभी अंग्रेज विरोधी जमींदारों, मुखियाओं, क्रान्तिकारी संगठनों से सम्पर्क स्थापित किया और सशस्त्र प्रतिरोध से अंग्रेजों को भगाने की योजना उनके सामने रखी। एक किसानों की आम सभा भगवानपुर (रुड़की) में बुलायी गयी। सभा ने विजय सिंह को भावी मुक्ति संग्राम का नेतृत्व दिया। अब विजय सिंह अंग्रेजों से संघर्ष हेतु अच्छे अवसर की तलाश में थे। 1824 में बर्मा युद्ध में हार तथा बैरकपुर में भारतीय सेना के विद्रोह ने स्वतन्त्रता प्रेमी विजय सिंह का उत्साह बढ़ाया।

समय को अनुकूल समझ क्षेत्रीय किसानों ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। 30 मई को कल्याण सिंह ने रायपुर ग्राम के अंग्रेज परस्त गददारों को देहरादून में कड़ी सजा दी। सहायक मजिस्ट्रेट शोर ने इस अंग्रेजी राज के समक्ष चुनौती माना। उसने देहरादून में तुरन्त सिरमौर बटालियन बुलायी। जिस कारण कल्याण सिंह ने देहरादून क्षेत्र छोड़ दिया और सहारनपुर, ज्वालापुर, करतारपुर को अपना केन्द्र बनाकर करतारपुर पुलिस चौकी नष्ट कर हथियार जब्त कर लिए। पाँच दिन पश्चात् भगवानपुर जीत लिया। सहारनपुर के जे.एम. ग्रिन्डल ने जाँच में इन घटनाओं का केन्द्र कुंजा बहादुरपुर को माना। अब ग्रिन्डल ने विजय सिंह के नाम समन जारी कर दिया। एक अक्टूबर 1824 को सरकारी खजाना ज्वालापुर से सहारनपुर जा रहा था। कल्याण सिंह के नेतृत्व में क्रान्तिकारियों ने पुलिस दल पर हमला कर दिया। युद्ध में अंग्रेज पुलिस बुरी तरह परास्त हुयी तथा खजाना छोड़कर भाग गयी। अब राजा विजयसिंह व कल्याण सिंह ने एक स्वदेशी राज्य की घोषणा कर दी और फरमान जारी कर रायपुर सहित बहुत से गाँवों ने राजस्व देना स्वीकारा। कल्याण सिंह ने सहारनपुर शहर पर हमला कर उसे और क्रान्तिकारियों को मुक्त करने की योजना बनायी।

इस कार्ययोजना से चिन्तित होकर अंग्रेज प्रशासन ने बाहर से भारी सेना बुला ली। कैप्टन यंग के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना कुंजा बहादरपुर के निकट सिकन्दरपुर पहुँच गयी। राजा विजय सिंह ने किले के भीतर और कल्याणसिंह ने बाहर मोर्चा सम्भाला। किले में भारतीयों के पास दो तोपें थी। 03 अक्टूबर को ब्रिट्रिश सेना ने हमला किया। भयंकर युद्ध छिड़ गया। भारतीयों ने भी जवाबी कार्यवाही शुरु कर दी। दुर्भाग्यवश सबसे बहादुर योद्धा

कल्याणसिंह पहले ही हमले में शहीद हो गया।

पूरे पश्चिमी यू.पी. में कुंजा में लड़े जा रहे युद्ध की सूचना फैलने लगी। बहसूमा (मेरठ), दादरी रियासत की सेनाए, बागपत, मुजफ्फरनगर के कल्सियान गौत्र के किसान भी गुप्त रुप से कुंजा बहादरपुर पहुँचने लगे। अंग्रेजों ने इसी बीच कुंजा के किले के पतन और क्रान्तिकारियों की हार की झूठी अफवाह उड़ा दी। अंग्रेजों की चाल सफल रही। अन्य क्षेत्रों के सैनिक निराश होकर लौटने लगें। अंग्रेजों ने तोप से किले पर बमबारी कर तोड़ने की कोशिश की। किले के दरवाजे को तोड़कर अंग्रेजों की गोरखा सेना किले में घुसने में सफल हो गयी। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ। सहायक मजिस्ट्रेट शोर युद्ध में बुरी तरह घायल हो गया। परन्तु अन्ततः अंग्रेज विजयी हुए। राजा विजयसिंह बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गए।

भारतीयों के पास आधुनिक हथियारों की कमी थी, तब भी उन्होंने आखिरी सांस तक अंग्रेजों का मुकाबला किया। अंग्रेजी सरकार के अनुसार 150 स्वतन्त्रता सेनानी शहीद हुए, लेकिन वास्तविक ऑकड़ा ज्यादा था। अंग्रेजों ने कुंजा किले को भी ध्वस्त कर दिया। ब्रिट्रिश सेना विजय उत्सव मनाती हुई देहरादून पहुँची, वहाँ ब्रिट्रिश सरकार ने राजा विजयसिंह का वक्षस्थल तथा कल्याणसिंह का सिर एक लोहे के पिंजरे में रखकर देहरादून जेल के फाटक पर लगा दिया। 30 नवम्बर 2019 को माननीय उपराष्ट्रपति एम. वैकेया. नायडू, एच. आर.डी. मन्त्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक, मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत कुंजा बहादरपुर के स्मारक स्थल पहुँचे।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :**


1- Kolff, Dirk H.A., Grass in thier mouths : The Upper Doab of India Under the Company's Magna charta, (1793-1830), 2010

2- H.R. Nevill, Saharanpur A Gazetteer, 1909.


❖❖❖

# सैनिक


● **गोपाल फरस्वाण**
(पूर्व सैनिक) पी.टी.ए. अध्यक्ष


हम भारत के बड़े अच्छे खिलाड़ी हैं शेरो सन्तान हैं।
कोई देश नहीं दुनिया में बढ़कर हिन्दुस्तान से,
इस मिट्टी में पैदा होना बड़ा गर्ववान हैं।
विश्वास और वीरता अपने पूर्वजों की सौगात है।

बड़ी-बड़ी ज्वालाओं से कम नहीं यह चिनगारियां।
कांटे पहले फूल बाद में, देती है फूलवारियाँ।
कभी-कभी देखते, कभी महकते, जीते-मरते शान से।
कोई देश नहीं दुनिया में बढ़कर हिन्दुस्तान से।

❖❖❖

# दुनिया


● **कु. मीनाक्षी**
बी.ए. प्रथम वर्ष


दूर से देखोगे सब बेहतर ही नजर आयेगा
पास जाने पर हालात बदत्तर ही नजर आयेगा

झूठ बोलते हैं, वे अक्सर जो कहते हैं
हमें जिंदगी में उजाला ही मिला है
उजालों से अधिक अंधेरा, प्रेम से अधिक नफरत
मान से अधिक अपमान ही मिला है।

ये दुनिया है, बड़ी कलरफुल, पर रंग सबका
उड़ा-उड़ा है जिन्दगी में।
अधिक से अधिक सवाल मिलेंगे
जिन्दगी गुजर जायेगी।

हर सवाल का सही हल न मिलेगा।
दूर से देखोगे, सब बेहतर ही लगेगा
पास जाओगे, सब बिखरा-बिखरा
उजड़ा-उजड़ा-सा ही मिलेगा।

❖❖❖

# यात्रा वृतान्त : अकस्मात् भ्रमण जिज्ञासा

● **डॉ सचिन सेमवाल**
संस्कृत विभाग

यह प्रकृति समस्त जड़ चेतन तत्वों सहित मानव जीवन की पोषिका है। इसके विभिन्न रूप होते हैं। भौतिक रूप से जल-थल और नभ रूपा प्रकृति हमारे सम्मुख होती है। इन तीनों रूपों में जीवन युक्त वातावरण नि:संदेह अनुपम तथा उपयोगी है। किन्तु सामान्य जीवन निर्वहन के लिए दुष्कर प्रकृति अलौकिकता को समेटे हुए रहती है। जल के रूप में जैसे विशाल समुद्र आदि, स्थल पर विस्तृत हिमालय अथवा मरुस्थलीय भू-भाग तथा नभ में अनंत अंतरिक्ष है। इन तीनों में सर्व सुलभ स्थलीय भू-भाग ही हैं, जिसमें कि हिमालय जैसा दिव्य स्थल महत्वपूर्ण है। हिमालय क्षेत्र के सघन-वन, विस्तृत घास के मैदान तथा बर्फ से ढकी श्वेत चमचमाती चोटियां भला किस जीवंत हृदय मनुष्य का चित्त आकर्षित न करती हो ? इस हिमालयी भू-भाग में प्रात:, सायंकालीन स्थिति और दिन भर के क्रियाकलाप बाकी दुनिया से कुछ भिन्न प्रतीत होते हैं। इस जगह का वातावरण तथा भौगोलिक परिवेश मनुष्य के आंतरिक भावों से जुड़ा रहता है। इसलिए यह हिमालय भारतीय प्राक - साहित्य के मेरुदंड के रूप में अवस्थित रहा। महाकवि कालिदास के शब्दों में हिमालय पृथ्वी का मानदंड स्वरूप है- ''**स्थिता पृथिव्या इव मानदण्ड:**''। वेद-पुराणों द्वारा महिमामंडित यह हिमालय जड़ प्रकृति का स्वरूप होते हुए भी जीवंत प्रतीत होता है। अनेक प्रकार की अनुभूतियों का प्रेरक यह हिमालय नवजीवन का संचार तथा मानव को उसके कर्तव्यबोध का ज्ञान कराने का आधार स्तंभ है।

आधुनिक युग में हिमालय मानव की विवेक शून्यता के दृष्टिगत अत्यंत प्रासंगिक हो गया है। जिस प्रकार हिमालय अविचल धीर-गंभीर होकर नित नूतन श्रृंगार करता हुआ अवस्थित है, उसी प्रकार मानव जाति को चाहिए कि ज्ञानांधतावश प्रकृति का दोहन व दुरुपयोग से बचते हुए जीवन यापन करें। किंतु आज मानव जाति विकास के भुलावे में विनाश की ओर अग्रसर है। प्रकृति को विनष्ट करता हुआ मनुष्य स्वयं के लिए ही विषवपन का कार्य कर रहा है। विकास के नाम पर विनाश जैसे - खनन, वैज्ञानिक रूप से सड़क आदि का निर्माण, अनुपयुक्त कृषि, प्लास्टिक, वनों को जलाना, वाहनों का अंध ाधुंध प्रयोग तथा शहरों का निर्माण कुछ इस तरह के मानव प्रकल्प हैं, जिनका कोई निदान प्रतीत नहीं होता और इन्ही सब के कारण आज प्रकृति खतरे में है। जिसका परिणाम निकट भविष्य में भयंकर तथा विनाशकारी है। इन्हीं सब के मध्य हिमालय मानो मानव के इन कृत्यों को देखकर स्वयं की पीड़ा स्वयं में ही समाहित किया हुआ मनुष्य को उसके कर्मो का फल मिलने की राह देख रहा हो।

हिमालय के निकट जाकर उसके दर्शन की लालसा मन में बिठाए मैं यही सोचता था। बहुजन्म समर्जित पुण्य-प्रताप से मेरा जन्म इसी हिमालयी क्षेत्र में हुआ, किन्तु उस स्थान से हिमालय के उस वृहद् स्वरूप का साक्षात्कार नहीं हो पाता। सौभाग्य से कर्मभूमि तलवाड़ी क्षेत्र से नित्य प्रति ही वह नयनाभिराम दृश्य व भाव संसार हृदय में हिलोरें भरता रहता है। हिमालय से वार्तालाप करने का मन तथा उसके अंक में अंतध र्यान हो जाने की लालसा प्रतिक्षण उसके समीप जाने को विवश करती है। भावों की प्रबलता लेख-पत्र की गौरवता के भय से उद्धृत नहीं की जा सकती, किन्तु इतना कहा जा सकता है कि हिमालय है तो जीवन है और जब-जब मनुष्य इसे कष्ट पहुंचायेगा तब-तब मानव जाति संकट में रहेगी। हिमालय को समीप से अनुभव करने के लिए किए गए कुछ प्रयासों को यात्रा-वृतांत के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूं, जो कि अकस्मात् की गई यात्राएं हैं। क्योंकि सामाजिक ताने-बाने ने ही मनुष्य को इस प्रकार जकड़ लिया है कि मनुष्यता आज संदेह के घेरे में है। इसीलिए किसी भी प्रकार की पूर्व-नियोजित यात्रा चरितार्थ नहीं हो पाती। अत: इस प्रकार के कार्यशैली जीवन की अभिवृत्ति का रूप हो चुके हैं और प्रसिद्ध लोकोक्ति भी है कि ''**ठरीं करीं ध ारीं की धरीं**'' कि बनाई हुई योजना बनाई ही रह जाती है इसलिए भी अकस्मात् किए हुए कार्य फलीभूत होते हैं।

कार्यक्षेत्र राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी में रहते हुए हिमालय के निकट जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा, किन्तु यात्राओं के रूप में मुख्य दो यात्राओं का विवरण यहां प्रस्तुत

करते हुए प्रसन्नता हो रही है। इसमें बेदनी बुग्याल व ब्रह्मताल का यात्रा वृतांत है।

### बेदनी बुग्याल यात्रा (3335 मी.)

सन् 2020 में कोरोना ने संपूर्ण विश्व में अपना तांडव मचा रखा था। हम अपने दायित्व निर्वहन हेतु विगत 3 माह से कार्यस्थल राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी में उपस्थित थे। महाविद्यालय में परीक्षा चल रही थी और पठन-पाठन का कार्य कुछ धीमा हो रहा था। कोविड निर्देशों के कारण ऑनलाइन पढ़ाई ही हो रही थी, किंतु परीक्षा होने के कारण कुछ अवरुद्धता हो रही थी। अक्टूबर का माह चल रहा था। वर्षा ऋतु समाप्त हो चुकी थी। प्राय: तलवाड़ी जैसे स्थान पर मानसून का कोई पैमाना नहीं होता। यहां संपूर्ण ऋतु चक्र प्रत्येक माह में घटित हो जाता है। एक सप्ताह धूप, एक सप्ताह वर्षा। एक सप्ताह लगातार बारिश होने से मौसम शीत ऋतु के समान हो जाता है। इस स्थान पर यह लोकोक्ति चरितार्थ होती है कि ''माघ ठंड या मेघ ठंड'' यहां जेठ की गर्मी में भी शिशिर-ऋतु की अनुभूति होने में देर नहीं लगती।अक्टूबर माह के साथ शिशिर-ऋतु का श्रीगणेश हो चुका था। प्रात:काल की ओस की बूंदें अब पाले में परिवर्तित होने लगी थी। सुबह-शाम की शीतल हवा अब ठिठुरन लेकर आ रही थी। कुछ दिनों से त्रिशूल पर्वत बादल रहित होकर अपना संपूर्ण सौंदर्य प्रसारित करता हुआ, प्रकृति प्रेमी लोगों को विरह रूपी वेदना से संतप्त अथवा आह्लादित कर रहा था। अवश्य ही मेरे समान प्रकृति प्रिय अन्य लोग भी यह सोचते होंगे कि यदि यह दिव्य छवि युक्त पर्वतराज साथ रखने की वस्तु होता तो नि:संदेह इसे अपने पास ही रखा जाता। इसी हिमालयी दृश्य को दिन-रात निहारते-निहारते मेरा मन उत्सुक हो रहा था। कोरोना काल में लॉकडाउन के कारण कहीं भी आना-जाना खतरे से खाली नहीं था, किंतु हिमालयी बुग्यालों में आवाजाही सुलभ थी। अत: मैंने बेदनी बुग्याल जाने का मन बनाया। मन में इस यात्रा के बीज परम मित्र श्री योगेश नौटियाल (फार्मासिस्ट आयुर्वेदिक अस्पताल बाण) ने उत्तरकाशी से तलवाड़ी आते समय बो दिए थे। किन्तु दैनिक कार्यों की होच-पोच के बीच इन स्थानों पर जाने का समय नहीं मिल पा रहा था। मैं उचित मौके की तलाश में था। परीक्षा संबंधी कार्यों के बीच 10-11 अक्टूबर शनिवार-रविवार-सोमवार के दिनों में यात्रा का समीकरण निश्चित किया। यात्रा शीर्षकानुसार अकस्मात् ही हुई। मैंने इस योजना के विषय में अपने युवा साथी सोमेश पाटनी से चर्चा की। वह भी इसी प्रकार के विचारों को अपने हृदय में पाले बैठे थे। मेरी बात सुनकर वे हर्षित हो उठे और शीघ्र ही इस यात्रा पर चलने को तैयार हुए। यात्रा करने में कोई भी व्यवधान नहीं था। पाटनी जी के पास निजी वाहन था। मैंने मित्र योगेश नौटियाल से संपर्क किया और उन्होंने भी हमें अपने पास आने के लिए निमंत्रित किया। वाण गांव में रहने खाने की व्यवस्था के लिए उन्होंने निश्चिंत रहने का आश्वासन दिया। अगले दिन शनिवार को हम 12:00 बजे यथोचित सामग्री की व्यवस्था करके निकल पड़े। हमें रात्रि विश्राम के लिए बाण गांव पहुंचना था। मोटर बाईक से हम तलवाड़ी से निकले। समय दोपहर का था, किन्तु हवा ठंडी हो चुकी थी। सड़क मार्ग पर्वतीय घाटियों में होने से हम शीघ्रता कर रहे थे। थराली के नजदीकी पेट्रोल पंप से हमने इंधन भरवाया और पिंडर नदी के किनारे-किनारे देवाल रोड पर निकल पड़े। नदी का मनमोहक बहाव व उसके मोड़ हमें कुछ देर रुक कर उन्हें निहारने को विवश कर रहे थे। चेपड़ों नामक गांव से कुछ पहले हम एक सुंदर जगह पर रुके। वहां से दूर तक पिंडर नदी तथा उसके किनारे हरी पत्तियों से लदे वृक्ष दिखाई दे रहे थे। सड़क के आस-पास पहाड़ी ढलानों पर चीड़ के पेड़ों से निकलने वाली जालीदार धूप आनंद प्रदान कर रही थी। शीघ्र ही हम देवाल पहुंचे तथा कुछ आवश्यक सामान खरीद कर आगे बढ़े। समय 1:20 हो रहा था और देवाल बाजार को पार करके हम एक स्थान पर पहुंचे। यहां से सुन्दर त्रिशूल चोटी दिखाई दे रही थी। बगरीगाड़ को पार करके, हम एक छोटे से बुग्याल पर विश्राम करने के लिए बैठे। वहां से पूरी देवाल घाटी दिख रही थी। यहां पर विभिन्न मुद्राओं में छायाचित्र लेने के प्रयास में मित्र सोमेश का चश्मा टूट गया। 3:15 पर हम लोहाजंग पहुंचे। प्रकृति का चौतरफा सुंदर नजारा हमारे सम्मुख था। हर दिशा में दूर-दूर तक पर्वतों पर फैले हुए हरे-भरे बनों तथा सुंदर बसे गांवों को हम निहार रहे थे। मार्ग ऊबड़-खाबड़ होने से हम थके हुए थे। अत: हमने एक स्थानीय प्रसिद्ध होटल में चाऊमिन तथा मिठाई खाई और शीघ्र ही आगे की ओर निकल पड़े। 4:00 बजे हम एक मोड़ पर पहुंचे, जहां से कुलिंग गांव का सुंदर दृश्य दिखाई पड़ रहा था। इस गांव के ऊपर तीव्र ढलान पर हरा-भरा बुग्याल तथा उसके बाद सुंदर रंगों से सजे

हुए मकान थे। नीचे की ओर चोलाई से भरे हुए सतरंगी खेत अद्‌भुत सौंदर्य से युक्त थे। हमने गांव के पास ही रुककर समीप से उस अवसर को व्यतीत किया। इसी गांव में देवदार वृक्ष के नीचे लाटू देवता का एक प्राचीन मंदिर भी था। यहां से 5:15 पर हम बाण गांव में पहुंच चुके थे। मित्र योगेश से मिलकर अति प्रसन्नता हुई। उन्होंने हमारा यथोचित सत्कार किया। हमारे रात्रि विश्राम की व्यवस्था भानु सिंह तथा हवा सिंह नाम के व्यक्ति के होटल में थी। जलपान करके हम गांव के प्रधान देवता लाटू मंदिर में दर्शन के लिए चले गए। मुख्य स्टेशन से 2 किमी की दूरी पर सुंदर तथा अत्यंत प्राचीन देवदार के वृक्षों के नीचे लकड़ी का बना हुआ लाटू देवता का मंदिर स्थित है। जहां पर मुख्य द्वार तथा विश्राम स्थल का निर्माण कार्य चल रहा था। बाहरी दीवारों पर असंख्य घंटियां लटकी हुई थी। यह मंदिर साल में कुछ महीने दर्शन हेतु बंद रहता है। हम बाहर से ही दर्शन करके गांव के बालकों के साथ वार्तालाप करते हुए वापस होटल में आ गए। रात को मित्र योगेश के साथ मधुर वार्तालाप तथा स्वादिष्ट भोजन करते हुए हम सुबह जल्दी उठने की मंशा से सो गए।

अगले दिन वाण गांव से बेदनी बुग्याल की यात्रा होनी थी। गहरी नींद तथा सुनहरे सपनों के तिलिस्म को तोड़ कर हम 5:30 बजे प्रात: उठे। शीघ्र ही नित्य कर्म से निवृत्त होकर बेदनी बुग्याल की यात्रा के लिए प्रस्थान किया। यात्रा मार्ग लाटू देवता के मंदिर से होकर ही गुजरता है। बांण गांव के दाहिनी तरफ ब्रह्मताल की चोटियों पर भगवान सूर्य का तेज प्रकाश आंखों में चकाचौंध उत्पन्न कर रहा था। वाण गांव के रणकाध ाार क्षेत्र में अभी धूप नहीं थी। मार्ग चढ़ाई वाला था। एक मकान पर पारंपरिक परिधान धारण की हुई युवतियों के चित्र उकेरे हुए थे। चलते-चलते हम रणधार पहुंच गये थे और समय 7:30 हो रहा थ ा। इसी स्थान पर हमें सूर्योदय के दर्शन हुए। चारों तरफ प्रात:कालीन सौन्दर्य हमें उत्साहित कर रहा था। ठीक सामने आली बुग्याल का पर्वत घने वृक्षों से आच्छादित तथा उसकी तलहटी में नील गंगा बह रही थी। रणकाधार में ऊंचाई की ओर हरी-मोटी मखमली घास का बुग्याल था। त्रिशूल पर्वत की शीर्ष चोटी भी यहां से दिख रही थी। यहां से एक सफेद रंग का कुत्ता हमारे साथ चल पड़ा। वह मवेशियों के साथ रहने वाले ग्रामीण लोगों का था। मार्ग अब कुछ ढलान वाला था। 8:00 बजे हमने नीलगंगा को पार किया और पर्वत की खड़ी चढ़ाई चढ़ने लगे। घने जंगल में बांज, खर्सू, बुरांश व रिंगाल की झाड़ियों से ढका हुआ मार्ग पूरा होने के बाद देवदारू का घना जंगल शुरू हुआ। हमने भी कुछ पौष्टिक चीजें खायी व स्रोत से बहता हुआ शीतल जल पिया। हमें चलते-चलते 2 घण्टे का समय हो चुका था। इस स्थान से मार्ग कुछ समतल-सा था। 10:00 बजे हम गडोली नामक स्थान पर पहुंचे। यहां पर वन विभाग के सौजन्य से कृष्णा सिंह बिष्ट नामक नौजवान होटल चलाता था। वह आने-जाने वाले राहगीरों व यात्रियों के लिए खान-पान की व्यवस्था करता था। हमने भी चाय पी कर मैगी व कुछ फल खाए। इस स्थान पर नंदा देवी राजजात का पड़ाव भी है। 40 मिनट विश्राम करके हम दाहिनी ओर आली बुग्याल के लिए निकले। कुछ दूर चलने पर हमें पुष्कर सिंह बिष्ट भेड़ वाला मिला। मार्ग के बारे में पूछ कर हम आगे निकले। कुछ दूरी पर हमें मवेशियों के लिए बनाई गई झोपड़ियों से युक्त छोटा बुग्याल दिखाई दिया। यहां एक वृद्धा से हमारी मुलाकात हुई। उन्होंने हमें आगे के बारे में भली-भांति बताकर कुशल क्षेम पूछा। 11:50 पर हम आली बुग्याल में प्रवेश कर गए।

बांज-बुरांश तथा बुग्याल के आसपास उगने वाले वृक्षों की कतार पूरी हो चुकी थी। समय 11:50 हो रहा था। हम पर्वत के शीर्ष भाग पर थे। जहां दृष्टि जा रही थी उधर ही सुदूर तक विस्तृत हरियाली फैली थी। छोटे-छोटे फूल व मखमली घास चारों तरफ फैली हुई थी। मित्र सोमेश इस दृश्य को देखकर फूले नहीं समा रहे थे। आली बुग्याल का वह सुंदर दृश्य अलौकिक था। कुछ देर इसी प्रकार आनंद में डूबे हम बुग्याल को निहारते रहे। यह बुग्याल लगभग 3 किमी तक फैला है। भेड़-बकरियों के समूह भी इसकी शोभा बढ़ा रहे थे। हम एक मंदिरनुमा भवन के बाई ओर मुड़कर बेदनी बुग्याल के लिए निकल पड़े। कुछ दूरी से हमें त्रिशूल पर्वत का दक्षिण भाग दिखाई दिया। यह स्थान अत्यधिक ऊंचाई पर स्थित था। आगे की तरफ गहरी खाई थी। त्रिशूल पर्वत की काली-काली चट्‌टान भयावह लग रही थी। उनके मध्य के ग्लेशियर भी स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। इस दृश्य को देखकर हम अपने भावों को रोक नहीं सकें। हमने आनंद पूर्वक उछलते हुए आगे की यात्रा शुरू की। कुछ दूरी पर एक तिराहा आया, वहां पर बेदनी

बुग्याल की ओरे जाने के लिए निशान बना हुआ था। नि:संदेह हम उसी ओर चल पड़े। बुग्याल की ओर का सीधा व संकरा रास्ता हरे रंग के कागज पर खींची हुई किसी रेखा के समान लग रहा था। कुछ दूरी पर हमें एक टापू दिखाई दिया। उसके चारों ओर गहरी खाई थी। हम उसके ऊपर गये व प्रकृति के सौन्दर्य का आनन्द लिया। जलपान करके हम वहां से आगे चले। मार्ग में दाहिनी ओर गहरी खाई थी। हम बेदनी बुग्याल पहुंच चुके थे। अनुमान से हमने टॉप पर जाने का विचार बनाया। वहां पहुंचने के लिए खड़ी चढ़ाई का मार्ग था। समय 1:30 बज चुके थे। हम उस जगह पर पहुंच गए। वह स्थान सभी जगहों से अधिक ऊंचाई पर था। वहां से दाहिनी ओर गहरी खाई तथा बाई ओर बहुत बड़े कुण्ड सहित सुंदर हरा-भरा बुग्याल, सामने त्रिशूल पर्वत श्रृंखला थी, उत्तर की ओर नन्दा घुंघटी पर्वत, तथा पश्चिमोत्तर की ओर चौखम्बा आदि हिमालय पर्वत श्रेणियां स्पष्ट दिखाई दे रही थी। हमने जल व गुड़ इत्यादि चीजों को खाकर एकाग्रचित होकर उस स्थान पर कुछ योगिक क्रियायें पूरी की। हनुमान चालीसा का पाठ करके कुछ आनंद के क्षण व्यतीत करें। इतने में अचानक घने व काले बादल आसमान में छा गए। सामान्य स्थान से जो बादल दूर आसमान में दिखाई देते हैं उन बादलों को हम हाथ से स्पर्श कर रहे थे। उनसे ओस की बूंदे गिर रही थी। बारिश होने की आशंका से हम शीघ्र वापस चलने को तैयार हुए। समय 2:40 हो चुका था, हम तीव्र ढलान वाले बुग्याल के रास्ते बेदनी कुंड के लिए उतरे। कुण्ड उस ऊंचाई के हाथ में पहने जाने वाले कंकण के समान लग रहा था। क्योंकि उसके चारों ओर पत्थर व सीमेंट से बनी दीवार थी। हम उछलते-कूंदते कुंड के पास आ गए। हरी-भरी घास तथा फूलों से भरा हुआ यह विस्तृत क्षेत्र था। समतल बुग्याल के मध्य यह कुंड बेदनी का हृदय स्वरूप है। दीवार के भीतर एक सुंदर मंदिर है। धार्मिक दृष्टि से भी इस स्थान का अत्यंत महत्व है। इस स्थान पर 12 वर्षीय नंदा राजजात का मुख्य पड़ाव तथा प्रति वर्ष निकलने वाली यात्रा इसी स्थान तक आती है। प्राकृतिक स्रोत से शीतल व स्वच्छ जल कुंड में एकत्रित हो रहा था। कुण्ड के बाहरी स्थान पर एक दूसरा मंदिर तथा एक ध्वजा स्थापित थी। बैठने के लिए चबूतरा व हवन कुंड बना हुआ था। निकट ही यात्रियों के ठहरने के लिए तम्बू (हट्स) बने हुए थे। हम अब उतराई पर शीघ्रता से वापसी के मार्ग पर चल रहे थे। बुग्याल के निचले भाग में सुन्दर झरने बह रहे थे। निकट ही सफेद पत्थरों का एक बड़ा खंडहर था। उसके बीच गुलाबी फूलों से भरे हुए पौधे थे। इन सब दृश्यों को देखते-देखते शाम होने को थी। हमने गति को और तेज किया और शीघ्र ही हम घने जंगलों में प्रवेश कर गए। 4:15 पर हम पुन: गडोली में थे। वहां से घने जंगल को पार करके हम 1 घंटे चलकर 5:20 पर नील गंगा नदी के तट पर पहुंच गए। यहां से वापस रणकाधार की चढ़ाई इस समय कठिन लग रही थी। धार पर पहुंचते ही अंधेरा हो चुका था। 6:00 बज चुके थे, शीघ्र ही हम बांण गांव में पहुंच गए। वहां पर हमारे लिए भोजन आदि की व्यवस्था थी। थकान होने के कारण हम जल्दी खा कर सो गए। अगले दिन प्रात: उठकर मित्र योगेश का धन्यवाद किया व अपने निवास स्थान तलवाड़ी के लिए प्रस्थान किया। यात्रा मार्ग का प्रात:कालीन सौंदर्य देखते हुए हम दोपहर तक तलवाड़ी पहुंच चुके थे। इस प्रकार इस यात्रा की सुखद पूर्णता हुई।

अब आगे मैं अन्य मित्रों के साथ इस यात्रा मार्ग पर रूपकुंड व शिलासमुद्र की यात्रा के लिए तैयार हूं। अवसर मिलते ही इस पुनीत कार्य को पूर्ण किया जाएगा।

### ब्रह्मताल यात्रा (3180 मी.)

29-30 मार्च, 2022 के दिनों में महाविद्यालय में अवकाश हुआ ही था कि मन कहीं कल्पनातीत संसार में खो जाने को उत्सुक हो उठा। सम्मुख त्रिशूल चोटी को तथा ब्रह्मताल बुग्याल के क्षेत्र को देखते ही मानो मन को अपनी थाह मिल जाती हो। त्रिशूल पर्वत के आसपास जैसे रूपकुंड आदि स्थानों की यात्रा तो दुष्कर थी, किन्तु ब्रह्मताल अपनी मुट्ठी मे लगता था। नजदीक भी और सुगम भी। प्रकृतिप्रेमी तथा युवा जोश से ओतप्रोत समाजशास्त्रीय मित्रमणि मोहित उप्रेती जी का साथ मिला। वे पहले से ही प्राकृतिक साक्षात्कार हेतु कटिबद्ध रहते हैं। हमने 28 मार्च की शाम को ब्रह्मताल यात्रा की अनुमानित योजना बनाई। सर्वप्रथम गाड़ी की व्यवस्था के लिए सोचा तो सर्वसुलभ सरल व्यक्तित्व डॉ ललित जोशी (विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान) ने निसंकोच अपनी मोटर बाइक हमें प्रदान की। यथासंभव खाने-पीने की सामग्री साथ लेकर हम अगले दिन यात्रा के लिए तैयार थे। योजना एक दिन में ही लौट कर आने की थी, किन्तु हमारा यह अनुमान कमजोर रहा। क्योंकि

ब्रह्मताल यात्रा मार्ग तथा बुग्याल के प्राकृतिक सौन्दर्य का नयनाभिराम दृश्य एक दिन में देखा जाने वाला नहीं था। अगले दिन 29 मार्च प्रात: 7:00 बजे चलने की योजना बनी। यात्रा निविंघ्न हो इसीलिए ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान-ध्यान आदि से निवृत होकर यात्रा के लिए उचित पौष्टिक भोजन बनाया गया। छोले-पूरी तथा स्वादिष्ट आलू के भुजिया कुछ घर पर ही खा कर कुछ साथ में ले गए। उप्रेती जी घर पर आए और हम कमरे से ही साथ-साथ चले। 8:00 बजे प्रात: हमने प्रस्थान किया। सुबह की शीतल-मंद- सुगंध-पवन हमें और अधिक ऊर्जा प्रदान कर रही थी। तलवाड़ी से थराली-देवाल तक का सड़क मार्ग आनन्ददायक तो है ही बल्कि प्राकृतिक सुषमा से भी भरा हुआ है। तलवाड़ी से थराली मार्ग में जहां थाला - लोल्टी आदि सुंदर खेतों की हरियाली से लहराते गांव हैं, वहीं थरालीदेवाल के मध्य पिंडर नदी का पावन तट यात्रियों के चित्त को बलात् आकर्षित करता है। 9:30 के आसपास हम देवाल पहुंचे। उससे आगे सड़क मार्ग कहीं-कहीं पर कुछ खराब था। किंतु मार्ग के प्राकृतिक सौंदर्य के सम्मुख उसका आभास नहीं हो पाया। मार्ग में हमें महाविद्यालय की छात्रा सुनीता मिली। जो कि निकटस्थ बी.एड. कॉलेज में कम्प्यूटर तकनीकी सहायक के रूप में कार्य करती है। उसके साथ संक्षिप्त वार्तालाप हुआ। उसने हमें आगाह कर दिया था कि ब्रह्मताल यात्रा एक दिन में हो पाना असंभव है। हम समय को देखते हुए शीघ्र आगे बढ़े और उसकी कही बात को स्मृतिपटल में अधिक देर तक नहीं रहने दिया। धीरे-धीरे चलते हुए हम 11:00 बजे लोहाजंग पहुंच चुके थे। वहां पर हमने रास्ते के लिए जूस व कुछ नमकीन पैकेट साथ लिए। 10 मिनट पश्चात हम वहाँ से ब्रह्मताल के लिए निकल पड़े। दोपहर की धूप तेज थी, किन्तु निष्प्रभावी थी। यात्रामार्ग बुरांश के पेड़ों पर लदे फूलों से ही भरा पड़ा था। विभिन्न प्रकार की फूलों के रंग व सुगंध भला हमें घाम का अनुभव करवाती? हम आगे बढ़ रहे थे। मन प्रफुल्लित था। गांव से कुशल-क्षेम हेतु फोन आ रहा था, किंतु वह उस समय व्यवधान ही प्रतीत हो रहा था। शीघ्र ही हम निकटवर्ती स्थान मैगी प्वाइंट पर पहुंच गए। समय 11:45 हो रहा था। इस स्थान से दो रास्ते थे। एक भेकल-ताल होता हुआ 12 किमी. ब्रह्मताल था, और दूसरा खड़ी चढ़ाई वाला 9 किलोमीटर ब्रह्मताल तक था। हमने दूरी कम होने की वजह से 9 किलोमीटर वाला मार्ग चुना। सोचा कि अभी शुरुआत है तो चढ़ जाएंगे और वापसी में भेकलताल होते हुए आ जाएंगे। चढ़ाई तो सामान्य ही थी, किंतु मार्ग अपरिचित था। केवल पैरों के निशान से ही हम मार्ग का अनुमान कर रहे थे। कुछ और चलने के बाद सफेद तथा गुलाबी बुराशों से आच्छादित एक स्थान आया। वहां पर एक छोटे-छोटे पत्थरों से बना हुआ मंदिर तथा प्राकृतिक जलस्रोत था। कुछ देर आराम करके हम आगे निकले। चलते-चलते मार्ग में कुछ ग्रामीण बालक मिले। उनसे रास्ता पूछते हुए हम एक स्थान पर पहुंचे। वहां सूक्ष्म जलपान करके हम आगे बढ़े। समय 1:15 हो चुका था, हम एक छोटे से बुग्याल पर पहुंचे। वहां हमें किसी के भी पदचिन्ह नहीं दिख रहे थे। जंगल अत्यधिक घना था। वह स्थान हमारे लिए भूल-भुलैया साबित हुआ। आपसी सलाह से हम बायीं तरफ निकल पड़े किन्तु प्रतीत हुआ कि हम सही मार्ग पर नहीं जा रहे हैं। एक टीले पर पहुंचकर हमने श्री अनुज कुमार तथा रजनीश जी से मार्ग को जानने वाले से संपर्क करना चाहा। निश्चित स्थिति पता नहीं लगने के कारण श्री धीरेन्द्र नेगी जी से फोन पर बात, हुई तो मुंदोली के ही स्थनीय व्यक्ति देवेंद्र जी से बात हुई। उन्होंने आगे बढ़ने को कहा और हम निकल पड़े। कुछ दूर चलने पर पुन: यात्रा मार्ग मिल गया। हमारा 1 घंटे से अधिक का समय व्यर्थ हो चुका था। 2:00 बजे उसी स्थान पर एक लक्ष्मण सिंह नामक व्यक्ति मिले जो कि ब्रह्मताल क्षेत्र में खाद्यान्न पहुंचाने का कार्य करते हैं। उन्होंने हमे वहीं ठहरने की सलाह दी तथा झंडी टॉप नामक स्थान पर रुकने को कहा। 2:15 पर हम झंडी टॉप नामक स्थल पर थे। यह स्थान इस यात्रा का उच्चतम स्थल है। यहां से पूर्व में बेदनी व आली बुग्याल तथा पूर्वोत्तर में त्रिशूल पर्वत था। उत्तर दिशा में नंदा घुंटी पर्वत व दक्षिण की तरफ बगजी बुग्याल तथा पश्चिम में भेकल ताल व दूर बधाणगढ़ी, ग्वालदम की पहाड़ी दिख रही थी। वहाँ पर टैंट में हमने अपने रात्रि विश्राम की बात करके तथा झंडी टॉप पर खुले में भोजन किया। बहुत तेज हवा चल रही थी। शरीर थका हुआ था, किन्तु बुग्याल तथा हिमालयी क्षेत्र का दृश्य नूतन ऊर्जा का संचार कर रहा था। हमने शीघ्रता से भोजन करके गहराई में स्थित ब्रह्मताल को देखने के लिए प्रस्थान किया। 2:45 पर हम वहां से निकले। मार्ग से अनभिज्ञ होने के कारण हम सीधे ब्रह्मताल तक नहीं पहुंच सके। शारीरिक श्रम के कारण उप्रेती जी खिन्न हो चुके थे। हमने स्थानीय लोगों से पूछ कर ताल का वास्तविक स्थान पूछा तथा उनके

कैंप में चाय पीकर हम वास्तविक ताल को देखने निकले। बुग्याल के सिम्पल रास्ते से होकर हम ताल के समक्ष पहुंचे। ब्रह्मताल से निकलने वाले जल निकास की खाई वर्षा ऋतु में ताल में अत्यधिक पानी होने का संकेत दे रही थी। समय 4:30 हो रहा था। कुछ ही देर में ताल का विहंगम दृश्य हमारी आंखों के सम्मुख था। ताल का आकार नाशपाती के फलनुमा था। इस समय ताल का पानी अपने न्यूनतम स्तर पर होता है। किन्तु ताल के किनारे बुग्याल पर चढ़ी शैवाल से प्रतीत हो रहा था कि अधिकांश समय जल 1-1/2 मीटर और भरा हुआ रहता है। इतनी अधिक ऊंचाई पर इतना दिव्य ताल देखना अद्‌भुत अनुभव था। ताल का जल स्रोत पूर्व दिशा में था और हम पश्चिम से ताल के क्षेत्र में प्रवेश करते हुए स्रोत से जल भरकर आगे को निकले। उस स्थान पर यही अनुभूति हो रही थी कि मानव प्रकृति के सम्मुख कितना बौना है। आधुनिकता के मिथ्या भ्रम में मनुष्य ने इस प्रकृति का किस प्रकार निरंतर दोहन किया है। फिर भी प्रकृति मातृ-भाव से मानव को पोषित ही करती। वरन् आधुनिक समय में मानव द्वारा स्वार्थ हेतु किए जाने वाले कोई भी दुष्कर्म अक्षम्य है। इन्हीं विचारों की चर्चा करते हुए हम ताल के पूर्व की ओर स्थित ब्रह्मा जी के मंदिर पर पहुंच गये। पौराणिक आख्यानों के अनुसार इस स्थान पर ब्रह्मा जी ने तपस्या की थी। इसीलिए इस स्थान का नाम भी ब्रह्मताल क्षेत्र प्रसिद्ध हुआ। 5:00 बजे हम इस स्थापर पर थे। इसके बाद हमने दाहिनी तरफ जाने वाले रास्ते को अपनाया, किन्तु अज्ञात होने के कारण उस रास्ते पर झंडी टॉप के लिए आगे आने वाली खड़ी चढ़ाई से हम अनभिज्ञ थे। उस मार्ग में सुंदर बैंगनी फूलों की क्यारी सी जमी हुई थी। विशाल पाषाण शिलाओं के नीचे गुफाएं तथा बीचों-बीच ग्लेशियर दिख रहे थे। कुछ ही देर में हम झंडी टॉप पर आ गए थे। समय 6:35 हो रहा था, सूर्यास्त का दिव्य दृश्य हम देख रहे थे। पर्वत की गहरी घाटियों में अंधकार व्याप्त हो चुका था, किन्तु त्रिशूल पर्वत की चोटी अपना सुनहरा रंग बिखेर रही थी। उसके बाद हम होटलनुमा टेंट में खाना खाकर स्लीपिंग बैग लेकर दिनभर की चर्चा करते हुए सो गए।

अगले दिन सुबह हमने ब्रह्मताल क्षेत्र के सर्वोच्च स्थान समिट पॉइंट को देखने की योजना बनाई। 6:00 बजे सूर्योदय हो चुका था, पर्वत की चोटियों पर भगवान सूर्य की किरणों ने दस्तक दी, और हमने भी समय पर उठ कर उनका स्वागत किया। शरीर थका हुआ तो था किन्तु उमंग के सामने थकान धूमिल हो रही थी। 6:15 पर हम समिट पॉइंट के लिए निकले। यह झंडी टॉप से 3-½ कि.मी. पर पर्वत के शीर्षस्थ मार्ग पर ही है। अत्यंत संकरा तथा दोनों ओर गहरी खाई वाला मार्ग होने के कारण मित्र उप्रेती जी असहज महसूस कर रहे थे। 1-½ किमी. चलने के बाद हमने वापस होने का विचार बनाया। वह स्थान दक्षिणी और बाण गांव के ठीक ऊपर प्रतीत हो रहा था तथा बाईं तरफ ब्रह्मताल के ठीक ऊपर था। ब्रह्मताल उस जगह से किसी हिरण की आंख के समान सुंदर नीलिमा युक्त लग रहा था। हम वहीं से वापसी की ओर चल पड़े। 7:00 बजे अल्पाहार करके हम भी भेखल ताल के रास्ते वापसी के लिए निकले। यह रास्ता पर्वत के शीर्ष पर उतराई का था। 1 किमी. के बाद तेलांती कैंपिंग स्थान था। वहां से रत गांव तथा सोल पट्‌टी के गांव दिख रहे थे। चलते-चलते 9:00 बजे हम भेखल ताल पहुंचे। इस स्थान पर ब्रह्मताल यात्रा का चौराहा है। ब्रह्मताल यात्रा के सभी मार्ग यहीं पर मिलते हैं। ठंडा जल पीकर हम बुरांश व बांज के घने जंगलों तथा सुंदर झरनों से होते हुए 10:45 पर लोहाजंग पहुंचे। वहां से ब्रह्मताल यात्रा की मधुर स्मृतियों को मन-मस्तिष्क में संजोते हुए मोटरबाइक से अपने निवास तलवाड़ी के लिए निकल पड़े। मार्ग में देवाल बाजार में भोजन किया तथा वहां की प्रमुख दुकानों से कुछ आवश्यक सामग्री खरीद कर 2:00 बजे हम तलवाड़ी पहुंच चुके थे।

इस प्रकार यह अद्‌भुत यात्रा सुखांत पूर्ण हुई। हरियाली से लबालब मौसम में पुन: उस स्थान पर जाने की अभिलाषा अभी भी जीवित है। मित्र श्रेष्ठ उप्रेती जी के वचनानुसार ब्रह्मताल का समिट प्वाइंट अगली यात्रा के लिए ही छोड़ा है।

❖❖❖

**साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं : यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं।**

– अब्राहम लिंकन

# मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

● **डॉ शंकर राम**
सहायक प्राध्यापक, रसायन विज्ञान
उ.मु.वि.वि. अध्ययन केन्द्र समन्वयक

भारत जैसे विकासशील देश में तेजी से बदले सूचना एवं प्रौद्योगिकी दौर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा उपयोगी एवं महत्वपूर्ण पद्धति है। करोना कॉल में अपनी उपादेयता सिद्ध करते हुए दूरस्थ शिक्षा उन सभी युवाओं के कैरियर निर्माण में एक प्रमुख विकल्प एवं सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है। ऐसे अभ्यर्थी जिनके लिए परम्परागत शिक्षा सम्भव नहीं है। उनके लिए इसके माध्यम से रोजगार के साथ-साथ उच्च शिक्षा का लाभ भी ले रहे हैं। विधिक है कि दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने की कोई आयु सीमा नहीं होती है। दूरस्थ शिक्षा के सम्बन्ध में राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी, चमोली में भी उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का अध्ययन केन्द्र (केन्द्र संख्या-19023) का संचालन सन् 2016 से गतिमान है। इसका उद्देश्य मूल नारा उच्च शिक्षा को हर घर के दरवाजे तक पहुँचाना है (Education at your door steps)।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय अध्ययन केन्द्र तलवाड़ी के अन्तर्गत वर्तमान में बी.ए., बी.एस.सी., एम.ए. पाठ्यक्रम के अतिरिक्त डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स भी संचालित किये जाते हैं। महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्रायें अपने नियमित पाठ्यक्रम के साथ-साथ दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से रोजगार मूलक पाठ्यक्रमों/डिप्लोमा/सर्टिफिकेट कोर्स का लाभ भी ले रहें हैं। विद्यार्थियों की कठिनाईयों को दूर करने के लिये समय-समय परामर्श कक्षाओं का संचालन भी किया जाता है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय) से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिये अध्ययन केन्द्र के केन्द्राध्यक्ष (डॉ. योगेन्द्र चन्द्र सिंह / सहायक केन्द्राध्यक्ष डॉ. शंकर राम से सम्पर्क किया जा सकता है। या विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.uou.ac.in में सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

❖❖❖

**प्रेरणादायक कविता**

# सपनों की नाव

● **कु. हेमा गिरी**
बी.ए. प्रथम वर्ष

बैठ जाओ सपनों की नाव में,
मौके की ना तलाश करो
सपने बुनना सीख लो।।

पलट सकती है नाव की तकदीर,
गोते खाना सीख लो
सपने बुनना सीख लो।।

खुद ही थाम लो हाथों में पतवार,
माझी का ना इंतजार करो।
सपने बुनना सीख लो।।

अब नदी के साथ बहना सीख लो,
डूबना नहीं,
तैरना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।

भंवर में फँसी सपनों की नाव,
अब पतवार चलाना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।

खुद ही राह बनाना सीख लो,
अपने दम पर कुछ
करना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।

तेज नहीं तो धीरे चलना सीख लो,
भय के भ्रम से
लड़ना सीख लो।
सपने बुनना सीख लो।।

❖❖❖

**जीवन लम्बा होने की बजाये महान होना चाहिए।** -बी.आर. अम्बेडकर

# भारतीय हिन्दी सिनेमा का सफर–एक सामाजिक संदर्भ

● **मोहित उप्रेती**
समाजशास्त्र विभाग

सिनेमा अपने आप में ही एक यर्थाथ का प्रारम्भ है। सिनेमा समाज का प्रतिनिधि नहीं बल्कि प्रतिबिम्ब है। जैसे–जैसे समाज बदलता है, सिनेमा भी बदलता है। अगर भारतीय हिन्दी सिनेमा के समाजशास्त्र का ऐतिहासिक अध्ययन करें, तो इसकी शुरूआत मूक फिल्मों से हुई। 28 सितम्बर, 1895 को लुमियर बन्धुओं ने ऐसी मशीन से परिचित कराया जो तस्वीरों को चलता दिखा सकती थी। इससे सिनेमा जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। एक तथ्य के अनुसार मूक युग में 1288 फिल्मों का निर्माण हुआ। इनमें से सिर्फ 13 फिल्में ही राष्ट्रीय अभिलेखागार में शामिल हैं। 20वीं शताब्दी के शुरूआती दौर को देखा जाए तो भारतीय जीवन पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। अंग्रेजों की शोषणकारी व्यवस्था के साथ–साथ सामाजिक विसंगतियाँ और आडम्बर अपने चरम में था। इस समय की अधिकतर फिल्में चाहे वह दादा साहब फाल्के की राजा हरिशचन्द्र या कालिया दर्शन हो, हिमाँशु राय की प्रेम सन्यास या जी.वी. पवार की गुलामी का पतन हो। इन सबने भारत में सामाजिक, धार्मिक ऐतिहासिक और पंचतंत्र जैसे विषयों के साथ–साथ भारत में राष्ट्रवादी लोकतांत्रिक विचारधारा को प्रेषित करने का प्रयास किया। आजादी के बाद का सिनेमा भारत–पाकिस्तान विभाजन के त्रासदी के दौर का सिनेमा था। जिस भारत को हमने पाया, वह लहूलुहान था, कराह रहा था। सामंतवादी शोषणकारी व्यवस्था भी अपने चरम पर थी। अत: कौमी एकता बनाने के साथ–साथ सामंतकारी व्यवस्था पर कुठाराघात करने का प्रयास इस दौर के सिनेमा ने किया। पड़ोसी जैसी फिल्मों का निर्माण हुआ। जिसने यह संदेश देने का प्रयास किया कि पड़ोसी सिर्फ पड़ोसी होते हैं न कि हिन्दू व मुसलमान। 1960 के दशक में भारत में समाजवादी व्यवस्था का बोलबाला था। ग्रामीण समाज और कृषक अर्थव्यवस्था भारतीय समाज की रीढ़ थी। इस समय के सिनेमा में भी समाजवाद के प्रभाव के कारण सामाजिक समस्याओं और देशभक्ति पर आधारित फिल्मों का निर्माण तेजी से हो रहा था। ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित फिल्में भारतीय हिन्दी सिनेमा का प्रतिनिधित्व कर रही थी। नया दौर, तीसरी कसम, सारा आकाश, गंगा–जमुना, जागते रहो जैसी फिल्में अपनी समकालीन समाज को रेखांकित कर रही है। 1960–80 का दशक भारत में शहरीकरण का दशक था। इसी दौर में भारत ने चीन व पाक युद्ध भी देखा। लाल बहादुर शास्त्री का जय–जवान, जय–किसान उद्घोष भी देखा।

राष्ट्रीय आपातकाल और राजनैतिक अस्थिरता का दौर भी देखा। अगर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाय तो यही वह समय था जब भारतीय सिनेमा में ग्रामीण पृष्ठभूमि का स्थान धीरे–धीरे शहरी पृष्ठभूमि ने ले लिया। मेरे देश की धरती, उपकार, रोटी कपड़ा और मकान जैसी सामाजिक यथार्थ परक (Reality based) फिल्मों का निर्माण हुआ।

1990 के दशक के शुरूआती चरण में भारत में भू–मण्डलीयकरण की प्रक्रिया अपनायी गयी। भू–मण्डलीयकरण ने आज सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों के साथ–साथ आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। भू–मण्डलीयकरण का प्रभाव भी सिनेमा में देखा जा सकता है। पहले जहाँ सिनेमा के केन्द्र में नारी का चेहरा था वही आज सिनेमा के केन्द्र में स्त्री की देह है। 21वीं सदी में हिन्दी सिनेमा नारी का देह प्रदर्शन, नारी मुक्ति का पर्याय बन गया है। नब्बे के दशक शुरू होने से पहले नारीवादी चिन्तक सिंथिया स्नेलो ने भू–मण्डलीयकरण के समर्थकों से सवाल किया कि तुम्हारी व्यवस्था में औरतें कहाँ हैं? इसका जवाब यह नजर आता है, कि नारी को सिर्फ बाजारवाद के हवाले कर दिया गया। 21वीं सदी के सिनेमा ने 20वीं सदी के आखिरी दशक तक स्त्री के सदंर्भ में बनी सीमाओं को तोड़ दिया है। चाँदनीबार, लज्जा, चमेली, चीनी कम, फैशन, निशब्द, डर्टी पिक्चर जैसी फिल्मों ने इस बात को प्रमाणित किया है। हिन्दी सिनेमा अश्लीलता के मुद्दे पर अधिक मुखर होने लगा है जो हिन्दी सिनेमा के परिपक्व साहस का परिणाम है। आधुनिक हिन्दी सिनेमा समाज को उसी तरह प्रतिबिम्बित करता है। जिस तरह वह है। आदर्श और नैतिकता के नाम पर उसमें कुछ छुपाया नहीं जाता। दलित समाज, जनजाति समाज और समाज

के अन्य वंचित वर्ग का प्रतिनिधित्व भी भारतीय सिनेमा कर रहा है। समलैंगिकता और लिव इन रिलेशनसिप जैसे मुद्दे में आज अछूते नहीं हैं। आज भारतीय सिनेमा और साहित्य समसामयिक मुद्दे को रेखांकित किया गया है। भारतीय सिनेमा के सफर का अगर समाजशास्त्रीय अध्ययन करने से स्पष्ट है कि इसमें भारतीय समाज की छाप है। आज आवश्यकता है कि भारतीय सिनेमा का तार्किक और समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाए।

❖❖❖

# मेरी छुट–पुट कविताएं

● **डॉ. पुष्पा रानी**
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

## 1– युद्ध

युद्ध विराम!
जय–पराजय
लाशें–चित्कार
मातम–बिछुड़न
चील, कौए, गिद्ध
युद्ध विराम!

## 2– पलकें

उठती–गिरती
सम्मान–लाज
सौन्दर्ययुक्त–सौन्दर्यहीन
पलकें।

## 3– वर्षा

फुंहारे–मनभावना
रिमझिम–रिमझिम
लहलाते–खेत
झूमती फसल
मुस्कुराता कृषक
संपन्नता घर की ओर

## 4– अतिवृष्टि

फटते बादल
दरकते पहाड़
उखड़ते वृक्ष
उजड़ते गाँव
उफनते गाड़–गधेरे
डूबते घर, डूबते गांव
बेघर लोग
मायूस चेहरे

## 5– लॉकडाउन

लॉकडाउन–लॉकडाउन
सब बंद
पसरता सन्नाटा
गाँव–गाँव, कस्बें–कस्बें
शहर–शहर, नगर–नगर
भय–भयता से थर्राते–चेहरे
बंद दरवाजे
एम्बूलेंश, पुलिस का सायरन
थर्राते दिल, थमती धड़कनें
कहराते स्वजन
बिखरी लाशें
अंतिम क्रिया को तरसती लाशें,
साथ छोड़ते स्वजन
मास्क पहने
एक–दूसरे से भागते लोग
खांसी–जुकाम, बुखार, खराश
बंद कमरे में रहो अलग
ना अपनों का साथ
छूत की बीमारी है नाम
कोविड! कोविड!
लॉकडाउन! लॉकडाउन!

❖❖❖

# विज्ञान से जुड़े अविस्वसनीय तथ्य
# (Amazing Facts About Science)

● कु. रिया मौर्या
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

**1- पृथ्वी गतिशील है फिर पता क्यों नहीं चलता?**

हमारी पृथ्वी लगातार अपनी धुरी पर घूमती रहती है। ऐसा नहीं है कि हमें पृथ्वी की गति का पता नहीं लगता। दिन में सूर्य की बदलती हुई स्थिति में हमें पृथ्वी की गति का आभास होता है। पृथ्वी का घूमना हमें महसूस इसलिए नहीं होता है क्योंकि पृथ्वी बराबर एक ही गति से घूम रही है। किसी भी वस्तु की गति का पता उसकी गति में आने वाले परिवर्तन से होता है।

**2- डीएनए एक अग्निरोधी है?**

हाल ही में एक रिसर्च से पता चला है कि जब डीएनए से सूती कपड़ों की कोटिंग की जाती है, तो डीएनए में पाए जाने वाले आनुवांशिकता संबंधी तत्व कपड़े की ज्वलनशीलता को कम कर देते हैं। इसका कारण डीएनए में मौजूद फॉस्फेट है, जो गर्म होने पर फॉस्फोरिक अम्ल का निर्माण करता है। साथ ही पानी को प्रतिस्थापित कर एक अग्निरोधी पदार्थ की तरह कार्य करता है।

**3- बिना सिर का जीवन कैसा होता है?**

कॉकरोच से ज्यादातर महिलाएं व बच्चे डरते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह विज्ञान की दुनिया में अपनी मेहनत से प्रसिद्ध है। इनका परिसंचरण तंत्र (Circulatry system) खुला होता है। इसलिए ये शरीर के प्रत्येक खण्ड में स्थित छोटे छिद्रों से सांस ले सकते हैं। कॉकरोच सांस लेने के लिए मुंह या सिर पर निर्भर नहीं होते हैं। इसलिए सिर कटने के बाद भी कॉकरोच एक सप्ताह या इससे अधिक दिनों तक जिन्दा रह सकता है।

**4- क्या मनुष्य प्रतिदिन 180 लीटर उत्सर्जित मूत्र स्रवित करता है?**

मनुष्य में प्रतिदिन बनने वाले निस्पद के आयतन (180 लीटर प्रतिदिन) की उत्सर्जित मूल (1.5 लीटर) से तुलना की जाए तो यह समझा जा सकता है कि 99 प्रतिशत निस्पंद को वृक्क नलिकाओं द्वारा पुनः अवशोषित किया जाता है। प्रतिदिन मनुष्य के शरीर में 180 लीटर उत्सर्जित पदार्थ बनता है, परन्तु उसमें से केवल 1.5 लीटर ही शरीर के बाहर निष्कासित होता है। शेष वृक्क नलिकाओं से ये अवशोषित कर लिया जाता है।

**5- क्या कीट भक्षी पौंधा (कीड़ों को खाने वाला पौधा) होता है?**

कीटभक्षी पौधें (Nepenthes, Pitcher Plant) को कहते हैं ये पौधे कीटों पर निर्भर करते हैं। इसे घड़ा का पौधा भी कहा जाता है। ये मांसाहारी होते हैं। यह पौधा दुर्लभ और अद्वितीय होता है।

**6- कान में हैडफोन लगाने से जीवाणुओं का स्तर बढ़ता है।**

आजकल लोगों, विशेषकर बच्चों और युवाओं में हेडफोन लगाने का चलन बढ़ता ही, चला जा रहा है। अगर आप भी, इस आदत के शिकार हैं, तो संभल जाइये, क्योंकि सिर्फ एक घंटे तक हेडफोन पहनने से ही, आपके कानों में जीवाणुओं का स्तर 700 गुना तक बढ़ जाता है।

**7- क्या एक ऐसा जीवधारी हो सकता है जो पौधों की तरह व्यवहार प्रदर्शित करे?**

यूग्लीना नाम का जीवधारी सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में ये प्रकाशसंश्लेषी होते हैं, लेकिन सूर्य के प्रकाश का नहीं होने पर अन्य सूक्ष्म जीवधारियों का शिकार कर परपोषी की तरह व्यवहार करते हैं। आश्चर्यजनक रूप से ये यूग्नीनॉइड में पाए जाने वाले वर्णक उच्च पादपों में उपस्थित वर्णकों के समान होते हैं।

**8- क्या पसीना आने से मस्तिष्क सिकुड़ता है?**

एक और दिचस्प तथ्य यह है, कि जब किसी मनुष्य के शरीर में नब्बे मिनट तक पसीना चलता है, तो उसके मस्तिष्क में उतनी ही सिकुड़न होती है। जितनी एक वर्ष बढ़ने पर मस्तिष्क में सिकुड़न होती है।

**9- हमें रात को नाखून क्यो नहीं काटने चाहिए?**

हमें रात को नाखून इसलिए नहीं काटने चाहिए, क्योंकि तब हमारे नाखून पानी या साबुन के पानी में भिगे हुए रहते हैं और बहुत ही आराम से कट जाते हैं। लेकिन जब हम इन्हें रात में काटते हैं तो ज्यादा देर तक पानी के संपर्क में ना आ पाने की वजह से ये सख्त हो जाते हैं। इसी कारण उनका खराब होने का खतरा बढ़ जाता है।

❖❖❖

# पिथौरागढ़ का रंगमंचीय लोकनाट्य : 'हिलजात्रा'

● डॉ. सुनीता भण्डारी
हिन्दी विभाग

महाकवि कालिदास कहते हैं '**नाटयं भिन्नरूचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्**' अर्थात् नाट्य जन-मन के अनुरंजन का सर्वोत्कृष्ट साधन है। ग्रामीण जनता नाटकों को देखकर प्रसन्नता का अनुभव करती है। भारतवर्ष में नाटकों की परंपरा ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से मानी जाती है। वेदों में भी नाटकीय तत्वों के बीज उपलब्ध होते हैं।

लोक नाटकों का लोक जीवन से घनिष्ट संबंध है। लोक नाटक लोक संबंधित उत्सवों, अवसरों तथा मांगलिक कार्यों में अभिनीत होते हैं। लोक नाटक दो प्रकार के होते हैं। 1- प्रहसनात्मक 2- नृत्यनाट्यात्मक (डांस ड्रामा)। पहले प्रकार का नाटक जन समुदाय को अनुरंजित करने के लिए होता है, और इसका विषय हास्य होता है। लखनऊ और बनारस के भांड ऐसे प्रहसनों के लिए प्रसिद्ध हैं। दूसरे प्रकार के नाटक वे हैं, जो किसी सामाजिक और पौराणिक घटना को लेकर अभिनीत किये जाते हैं। नृत्य, संगीत और अभिनय इन तीनों का समन्वय इसमें दिखाई पड़ता है। उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले का ऐतिहासिक '**हिलजात्रा**' लोक नाट्य इसका सुन्दर उदाहरण है।

'हिलजात्रा' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- हिल और जात्रा। हिल का अर्थ है- 'कीचड़' और जात्रा का अर्थ है- 'यात्रा'। इस प्रकार हिलजात्रा का अर्थ है- 'कीचड़ में की जाने वाली यात्रा'। यह लोकनाट्य बरसात के दिनों में पिथौरागढ़ जनपद के कुमौड़ गाँव में आयोजित होता है। हिलजात्रा का यह उत्सव पूरी तरह मुखौटा नृत्य पर आधारित है। कहा जाता है, कि इस उत्सव में पहने जाने वाले मुखौटों को यहां के चार महर भाईयों द्वारा नेपाल से पुरस्कार स्वरूप जीतकर लाया गया था। इन मुखौटों का इतिहास लगभग 300 साल से भी पुराना है। सातू-आठू पर्व के दौरान मनाये जाने वाला, यह उत्सव कृषि संबंधी पहाड़ी जीवन शैली की पूरी झलक प्रस्तुत करता है। इसमें वर्षा ऋतु के कृषि संबंधी सभी क्रिया-कलापों, जुताई-निराई, गुड़ाई, रोपाई आदि का विभिन्न पात्रों के माध्यम से अभिनय किए जाते हैं। हिलजात्रा में घोड़िया चौकीदार, मछेरा, झाड़ूवाला, ग्वाला, दहीवाला, हलवाहा, छोटे बेलों की जोड़ी, नेपाली बेलों की जोड़ी, धान रोपने वाली स्त्रियाँ, हिरन, चित्तल, लखिया भूत, भालू, भजन मंडली, नाई आदि प्रमुख पात्र अपने-अपने नाम और गुण के अनुरूप अभिनय करते हैं। इसमें धान रोपने वाली स्त्रियां और भजन मंडली के सदस्यों को छोड़कर अन्य सभी पात्र मुखौटा पहनते हैं। सबसे पहले घोड़िया चौकीदार घोड़े का मुखौटा पहनकर आता है तथा घोड़े का अभिनय करता हुआ, नाटक के आरंभ होने की सूचना देता है। झाड़ूवाला, झाड़ू-बहारू करता आगे बढ़ता है। जालिया जाल फेंककर मछली पकड़ने का अभिनय करता है। दही वाला लकड़ी के बर्तन में दही ले-लेकर सबको बांटता है। ग्वाला बैलों को चराता आगे आता है। हलवाहा बैलों को जोतने का अभिनय करता है तथा नेपाली बिगड़ैल बैलों को साधता है। स्त्रीवेशधारी पुतारियाँ मिट्टी के ढेले तोड़ने, बच्चों को स्तनपान कराने, उन्हें सुलाने, खेतों को तैयार करने, पौंधे रोपने आदि का अभिनय करती हैं। हलिया खेत जोतने, हुक्का पीने, छाया में सुस्ताने आदि का अभिनय करता है। इन सब दृश्यों के बीच-बीच में भजन मंडली ढोल, चिमटा, मंजीरा, हारमोनियम आदि बाद्ययंत्रों को बजाते हुए, नाचती-गाती आती रहती हैं। यह नाच-गाना शिव-पार्वती विवाह की खुशी को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। भजन मंडली से पहले रस्सियों से बंधा हुआ, लखिया भूत, कूदता-फांदता हुआ आता है। लखिया जिसे भगवान शंकर का अवतार माना जाता है। कहा जाता है, कि भगवान शंकर ने माँ सती से विवाह किया, तो माँ सती के पिता दक्ष प्रजापति को यह अच्छा नहीं लगा। एक बार यज्ञ के दौरान दक्ष प्रजापति ने भगवान शंकर का अपमान किया और पति के इस अपमान को, माँ सती सहन नहीं कर पाई और यज्ञ कुण्ड में कूंद गई। इस बात की जानकारी मिलने पर भगवान शंकर क्रोधित हो गए और अपने सिर से एक जटा निकालकर जमीन में पटक दी, जिससे वीरभद्र उत्पन्न हुए। इसी वीरभद्र को यहाँ लखिया भूत के नाम से जाना और पूजा जाता है। जिस व्यक्ति के शरीर में शिव का यह बारहवाँ अंश प्रवेश करता है। ढोल-नगाड़ों एवं मंत्रों के उच्चारण से शरीर में ऐसा कम्पन्न उत्पन्न होता है कि व्यक्ति अपना सब कुछ भूलकर

कुछ समय के लिए देवमय हो जाता हैं।

लखिया भूत के आगमन की प्रतीक्षा सब दर्शक बड़ी उत्सुकता से करते हैं। यह भयंकर मुखौटा पहने रहता है। इसका शरीर भयानक और काला होता है। पीठ पर त्रिशूल का निशान बना रहता है। महोत्सव के दौरान लखिया गाँव की गलियों से होते हुए मैदान में आता है। रस्सी और लोहे की जंजीरों से बधे लखिया को आठ लोग अलग-अलग दिशाओं से नियन्त्रित करते हुए, आगे बढ़ते हैं। लोग अपने आराध्य देव लखिया का आशीर्वाद लेते हैं तथा क्षेत्र की खुशहाली एवं सुख-शांति की कामना करते हैं। वहीं लखिया भी पूरे मैदान में, घूमकर लोगों को आशीर्वाद देते हैं। गौरा-महेश्वर की विदाई के साथ यह लोकनाट्य समाप्त होता है। नेपाल में यह लोकनाट्य '**इंद्रजात्रा**' के रूप में मनाया जाता है।

'**हिलजात्रा**' पिथौरागढ़ का प्रसिद्ध रंगमंचीय लोकनाट्य है। कुमौड़ गांव का मैदान इसका रंगमंच है। कुमौड़ गांव के पुराने महल के कक्ष में वेश एवं रूप सज्जा की जाती है और वहां से पात्र मुखौटे पहनकर आते हैं। इसे देखने के लिए दर्शक हजारों की संख्या में उमड़ पड़ते हैं। लखिया भूत इसमें मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहता है। वर्तमान समय में, यह लोकनाट्य अत्याधुनिक साज-सज्जा के साथ आकर्षक ढंग से आयोजित किया जाने लगा है। जहाँ आज पूरा समाज अपनी संस्कृति से दूर होता जा रहा है और पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ता जा रहा है। वही पिथौरागढ़ के कुमौड़ गांव के लोगों ने अपने पूर्वजों की कई साल पुरानी परम्परा और उनकी इस वीरता की गाथा को आज भी संजोए रखा है।

**सहायक ग्रन्थ :**

1- उत्तराखण्ड : लोक संस्कृति और साहित्य, प्रो. देवसिंह पोखरिया।

❖❖❖

# राष्ट्र के नाम पाती

● **डॉ. ललित जोशी**
असि. प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र

मेरे प्यारे देश,

आज जब ये चिट्ठी लिखने बैठा हूँ, तो पहली बार मूर्त रूप में अपने देश को लेकर अपूर्व उत्साह एवं भावुकता से लबरेज महसूस कर रहा हूँ। इसी देश की मिट्टी में पला बढ़ा और यही उपजे अन्न से पोषित, मैं जब भी अपने देश को देखता हूँ, तो अभूतपूर्व आश्चर्य से विस्मित मेरी आँखों के समक्ष फैल जाता है। प्राकृतिक विभिन्नता और सांस्कृतिक अंतर के रूपहलेपन से सिंचित अनेकानेक मतमतांतरों की दार्शनिक भाव भूमि का विह्वल संसार। ऐसा भी नहीं है, कि मेरे देश में सबकुछ आदर्श स्थिति में है।, गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण और बेरोजगारी की कुरूपता के बीच भी मुझे मेरा देश वैसे ही प्रिय है जैसे किसी को उसकी यहां की जो कमियां, वो सब मेरी हैं, और खूबियों पर भी मेरा एकाधिकार है। मेरे देश ने निरंतर उच्चावचों के बीच भी जिस तरह हमको सभ्यतापूर्वक तरीके से एक पहचान दी, एक गर्वीले इतिहास और उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएं दी हैं। यह सचमुच मुझे ही नहीं हम सबको गर्व से भर देता है। यह भी सच है कि सभी देशों के नागरिक अपनी मातृभूमि-पितृभूमि से सहज ही प्रेम करते हैं, किन्तु बतौर भारतीय मैं जिस देश से प्रेम करता हूँ, वह सदियों से प्रेम और सहिष्णुता की प्रतीक भूमि रहा है। अभी कुछ समय पहले तक सरहद से आई। एक चिट्ठी जहां पूरे गांव में मुस्कान का सबब बन जाती थी, वहीं आज संचार प्रौद्योगिकी ने भारत को एक ग्राम में बदल दिया है। आज भी केरल की बाढ़ हमें उतना ही दु:खी कर देती है, जितना सुदूर दक्षिण भारत की कोई दुर्घटना या उत्तरकाशी की केदारनाथ आपदा। हम सबको जो अदृश्य शक्ति जोड़ती है वह है कि हम सब एक ही मां के सपूत हैं। इससे एक का दु:ख दूसरे का दु:ख बनते देर नहीं लगती है। यह स्थिति तब है जब प्रांतवाद, भाषावाद और जातिवाद के नाम पर घृणित राजनीति हमें लड़ाने के लिए निरंतर आमादा रहती है। लेकिन मेरे देश और इसके मानस में कभी भी स्थायी नफरत या विद्वेष जगह नहीं बना सका है। हम स्वाभाविक रूप से ही मेलजोल के और परस्पर एकता के समर्थक रहे हैं।

वैदिक काल से आज तक हमारी संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा प्रबल रही है। मेरे देशे ने न सिर्फ बाह्य आक्रमणकारियों को गले लगाकर उनको इसी मिट्टी में रच बस जाने का अवसर दिया, अपितु वैश्विक स्तर पर भी सभी की राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यताओं को सम्मान दिया। जो भी इस मिट्टी की शरण में आया वो जब गया, तो कुछ सीखकर गया। उसने पाया कि यह देश बहुत कुछ सिखाता है और आप इस देश से गुजरते हुए, सहसा मानवीय सभ्यता के उत्कृष्ट मूल्यों से गुजर जाते हैं। इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि आप गजनी हैं या मेगस्थनीज। जो भी यहां आया उसने देखा कि यह भूमि उसके कृत्यों के प्रति एक अजब निरप्रेक्षता के साथ ही हरदम कुछ देने की प्रवृत्ति से भरी हुई है। ये मेरा देश ही है जिसने मुझे गंगा-जमुनी तहजीब की बारीकियां सिखाई। इस देश में जन्म लेकर ही, मैं समझ सका हूँ कि समन्वय और सद्भाव से बढ़कर कोई मूल्य नहीं है। यदि भारतीय होने का कोई एकांगी अर्थ खोजना हो तो वह हम सबकी समन्वयशीलता और सामंजस्यशील प्रवृत्ति ही है। भले ही मेरे देश में हजारों जबानें बोली जाती हों किन्तु आप जहां जाएं सबकी जबान में एक जैसी पहचान की मिठास घुली दिखेगी जिसमें औपचारिकता सिरे से नदारद होगी। वहीं होगी एक चिरपरिचित मुस्कान जो शब्दों में ढलकर आपके हृदय में उतरती जाएगी। सच तो यह है कि यदि धार्मिकता की सही पहचान करनी हो तो भारत आइए और देखिए कैसे प्रकृति के कण-कण से लेकर चर-अचर जगत के अनेकानेक तत्व यहां श्रद्धापूर्वक कैसे ईश्वरीय स्वरूप ग्रहण कर लेते हैं। मेरे देश में आकर दिखेगा कि मेहमान नवाजी की परम्परा और खानपान की विविधता की कैसी झाँकी, मेरा देश पेश करता है। हजारों स्वादिष्ट व्यंजनों एवं सत्कार की सैकड़ों शैलियों की सजावट यहां देखते ही बनती है। धन्य है! मेरा देश जहां नृःजाति की इतनी विभिन्नता और जीवनशैलियों की इतनी विविधता के बावजूद सदियों से 'एक भारत' और 'अखण्ड भारत' की संकल्पना जीवित है। विश्व इतिहास में अपने लम्बे जीवनकाल में जितने थपेड़े, मेरे देश ने सहे और उन सबके बावजूद वो अपनी मौलिकता को अक्षुण रख सका है। वह भी निश्चित ही उल्लेखनीय बात होगी।

सन् 1990 के जिस दशक में मेरी पैदाईश हुई। उस दशक के पश्चात अभी तक मंडल, कमंडल और उदारीकरण के विभिन्न विचार व घटनाओं के बीच भी मैंने पाया है कि भारत के प्रति देश की जनता का लगाव और जिम्मेदारी में तनिक भी ह्रास नहीं हुआ है। बल्कि भारत और भारतीयता आज विश्व पटल पर दृश्यमान शक्ति है। मेरा देश इन वर्षों में न सिर्फ आर्थिक, सामाजिक व सैनिक मोंचे पर तीव्रगति से आगे बढ़ा है, बल्कि उसने आंतरिक झंझावतों एवं द्वन्दों में भी संवैधानिक उपकरणों से सफलतापूर्वक पार पाया है। आज का मेरा भारत युवा भारत है। जिसकी आकांक्षा, सपने तथा महत्वाकांक्षाएं उफान पर है। गर्व है कि इस उफनाती आकांक्षाओं का बतौर युवा में भी एक हिस्सा हूँ।

इस पत्र को लिखते हुए भावनाओं की उदत्त लहरों पर तैरते हुए जो पड़ताल मैं कर सका हूँ उसके आलोक में मैं यही कह पा रहा हूं, कि ऐ! **मेरे देश में सदैव तेरा ऋणी हूं कि मैं तेरे गर्भ से जन्मा। मैंने तेरा अन्न ग्रहण किया, तेरी हवा में सांस ली। तेरे मूल्यों में मैं दीक्षित हुआ। मैं संभवतः इस ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकूंगा।** बस एक ही गुजारिश है, ऐ! मेरे देश यदि मुझे थोड़ा भी योग्य पुत्र समझो, तो जन्म-जन्मांतर तक मैं भारतीय ही रहूं। मेरे पुरखों की इस धरा को ईश्वर सदैव शस्य श्यामला और प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर रखे। मेरे वंशज इस धरा को अपने स्वेद कणों से सदैव सींचें और मेरी अंतिम सांस तक मुझसे मेरा देश न छूटे। **मैं रहूं ना रहूं। हम रहें ना रहें। ऐ! देश तू रहेगा सदा। यशस्वी रहे तू सदा! तेरी पवित्र भूमि को स्नेह वंदन। तू अमर रहे। हम दिनचार रहें न रहें।**

❖❖❖

**सबसे बड़ा गुरु मन्त्र है, कभी भी अपने राज दूसरों को मत बताएं। ये आपको बर्बाद कर देगा।**

– चाणक्य

# जल ही जीवन को सींचेगा
# ''बिन जल भयावह कल''

● डॉ. प्रतिभा आर्य
असि. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान

भारत की आबादी बढ़ते ही जल की उपलब्धता भी बढ़ती जा रही है। भारत जल संकट के उस दौर से गुजर रहा है, जिसे इसके पहले की पीढ़ी ने नहीं देखा। गर्मी शुरू होते ही देश में जल संकट को लेकर लोगों के माथे पर चिन्ता की लकीरें साफ तौर पर देखी जा सकती हैं। आम आदमी से लेकर किसानों तक को पानी की चिन्ता सताने लगती हैं। जैसा कि हम सब सुनते हैं कि 'जल ही जीवन है'। जल हमारे जीवन के लिए प्रकृति द्वारा दिया गया अमूल्य वरदान है। खाने के बिना भले ही मनुष्य कई दिनों तक जीवित रह सकता है, लेकिन जल के बिना जीवित रहना असंभव है। सब जल के महत्व को जानते हैं, लेकिन उसके बाद भी उसका दुरूपयोग करते हैं।

समस्याओं के प्रति जागरूकता ही नहीं बल्कि उनके प्रति समाधान के लिए हर स्तर पर कदम उठाना भी जरूरी होता है। पानी की बढ़ती आवश्यकताओं को देखते हुए उसकी उपलब्धता को बनाए रखना बड़ी चुनौती है। जल प्रबंधन से ही पानी की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। चूंकि समय के साथ हर कहीं पानी की खपत बढ़ती जा रही है। इसलिए हमें उन तौर तरीकों को अपनाना चाहिए, जिससे कम बारिश के बावजूद जल संकट से बचा जा सके।

मीठे पानी के स्रोतों, नदियों, झीलों और जलाशयों को संरक्षित करना, हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। कृषि क्षेत्र के विकास के लिए हर खेत को पानी उपलब्ध कराने के लिए बारिश के पानी को रेन हार्वेस्टिंग के माध्यम से जमीन के अन्दर पहुँचाना, हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

पानी को बचाना सिर्फ सरकारों और नेताओं का ही नहीं बल्कि आम जनता का भी काम है। कम से कम पानी बचाने में तो हर कोई अपना योगदान दे सकता है। किन्तु लोग महज मूक दर्शक बने जल संकट देख रहे हैं। हमें ज्यादा कुछ नहीं बल्कि इतना ही करना है कि रोजमर्रा के कामों में पानी का इस्तेमाल, इस तरह से किया जाए कि उसकी बर्बादी न हो। पानी के इस्तेमाल में किफायत का परिचय दिया जाना चाहिए।

आज जरूरत ऐसी सोच और समझ विकसित करने की है, जिससे बारिश के पानी का संग्रह करके साल भर जल संकट से पार पाया जा सके। झमाझम बारिश के पानी का लुफ्त उठाने के साथ अंबर से बरस रहे अमृत का उपयोग जल समस्या को दूर करने के लिए करना चाहिए। क्योंकि बारिश का पानी ही जल संकट की कहानी को बदलने का सबसे प्रभावी उपाय है।

मौका अभी भी है सुधरने का और सुधारने का, पानी को अनमोल समझने का और समझाने का, संकल्प लेने का और संकल्प दिलाने का। आइए बूंद-बूंद पानी बचाने के संकल्प के साथ हम अपने जीवन में आगे बढ़ें।

**'बिन जल भयावह कल''**

❖❖❖

**हमारा तार्किक मस्तिष्क वफादार नौकर है और हमारा अंतर्मन एक पवित्र उपहार है। हमने ऐसा समाज बनाया है, जो नौकर का सम्मान करता है और उपहार को भूल चुका है।**

–अल्बर्ट आइंस्टीन

**किसी ध्येय की सफलता के लिये मनुष्य को एकाग्रता और समर्पण आवश्यक है।**

– ब्राउन

# राजनीति विज्ञान में कैरियर – एक अवलोकन

● **मनोज कुमार**
असि. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान

कैरियर विकल्पों में 'राजनीति विज्ञान' अर्थात् 'पॉलिटिकल साइंस' का महत्व सदाबहार कहा जा सकता है। यह विषय सामाजिक विज्ञान का एक अंग है। जो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक तंत्रों एवं उनकी नीतियों व सरकारी संस्थाओं की जरूरत, कार्यों और जिम्मेदारियों के बारे में बताता है। इतिहास, लोक प्रशासन, लोक नीतियॉं, भूगोल, अर्थशास्त्र, और अंतर्राष्ट्रीय संबंध इस क्षेत्र के जरूरी हिस्से हैं। इसमें अध्यापन-कार्य से लेकर शोध, चुनाव व कानून से जुड़े कार्यक्षेत्रों में काम किया जा सकता है। देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर इस विषय पर आधारित पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इसलिए यह कहना कुछ हद तक सही है कि अन्य पाठ्यक्रम की तुलना में इसमें प्रवेश आसानी में मिल जाता है। हालांकि बेहतर मुकाम पाने के लिए इस विषय में उच्च अध्ययन का विचार काफी महत्व रखता है। अकादमिक और शोध कार्यो मे दिलचस्पी दिखाने वाले छात्रों को देशी-विदेशी संस्थाओं की छात्रवृत्ति हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। इसके जरिए उन्हें आगे चलकर अध्यापन के बेहतर अवसर मिलेंगे। राजनीति विज्ञान में उच्च शिक्षा हासिल करने वाला छात्र राष्ट्र से संबंधित मुद्दों पर गहरी समझ रखता है, तथा राजनीति शब्द और आपके राष्ट्र की राजनीति आपके अंदर उत्साह पैदा करता है। राजनीतिक विज्ञान में डिग्री होने से राष्ट्र, राज्य की और स्थानीय सरकार में कानून, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, संघों, गैर-सरकारी संगठनों, मतदान, पत्रकारिता, चुनावी राजनीति, शोध, विश्वविद्यालय और कॉलेज की शिक्षा में प्रभावशाली कैरियर बनाया जा सकता है। इसलिए राजनीतिक विज्ञान में कैरियर की सूची बहुत लम्बी है।

स्कूल और कॉलेज व विश्वविद्यालयों में अध्यापन और शोध कार्यसहित अन्य क्षेत्रों में मौके होने के साथ ही हाल के वर्षो में कुछ नए कैरियर विकल्प भी उभरे हैं। इनमें से कुछ हैं- वकील के तौर पर कैरियर, राजनीति शास्त्र की पृष्ठभूमि वाले युवाओं के लिए एलएलबी करना सही रहता है। इसके लिए मुकदमों की बारीकियों को समझना आसान होता है। वहीं जनसंचार के क्षेत्र में ऐसे सफल पत्रकारों की कमी नहीं है, जिनके पास राजनीति विज्ञान की डिग्री है, ऐसे अवसर प्रिंट इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया में मिल सकते हैं।

इस क्षेत्र में ऐसे युवाओं को कैरियर बनाने के बारे में सोचना चाहिए, जिनको देश -विदेश में चल रही राजनैतिक उथल-पुथल और समसामयिक मामलों के बारे में जानने की गहरी दिलचस्पी हो। देश के बदलते राजनैतिक घटनाक्रम पर पैनी नजर और इसके सामाजिक एवं आर्थिक कारणों को समझने की दृष्टि और उनके आधार पर भावी राजनैतिक आहटों को समझने की क्षमता भी इस क्रम में एक विशिष्ट गुण कहा जा सकता है। इसके अलावा तथ्यों और तर्कों के आधार पर नीतिगत निर्णयों को समझने की काबिलियत को भी कम महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता है। इस क्षेत्र के पेशेवरों में संवाद कौशल, भाषा पर नियंत्रण आदि का होना भी काफी मायने रखता है।

**पाठ्यक्रम** - यह बताने की जरूरत नहीं है कि राजनीति विज्ञान कोई नया विषय नहीं है। इससे जुड़े पाठ्यक्रम भी पुराने या परम्परागत कहे जा सकते हैं। दसवीं के बाद ही प्राय: एक स्वतंत्र विषय के रूप में राजनीति विज्ञान की पढ़ाई शुरू हो जाती है।

स्नाक स्तर पर बी.ए. पाठ्यक्रम का प्रमुख तौर पर उल्लेख किया जाता है। आमतौर पर इन तीन वर्षीय पाठ्यक्रम में मेरिट के आधार पर ही प्रख्यात विश्वविद्यालयों में प्रवेश दिया जाता है। इसके बाद एम.ए. और पीएचडी तक की डिग्री हासिल की जा सकती है। दूरस्थ शिक्षा और मुक्त विश्वविद्यालयों से भी इस विषय की पढ़ाई विभिन्न विश्वविद्यालयों के माध्यम से की जा सकती है।

**चुनौतियां**- आमतौर पर नौकरियां निजी क्षेत्र के संस्थानों में मिलती हैं। पीएचडी तक शैक्षिक डिग्री लेने के बाद ही राजनीतिक विश्लेषक के तौर पर खुद को स्थापित करने की दिशा में कदम आगे बढ़ा सकते हैं। किसी भी राजनैतिक दल का समर्थक होने के ठप्पे से बचना सम्पूर्ण कैरियर के दौरान एक बड़ी चुनौती होता है। साख खराब होने पर काम मिलने में हमेशा परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आमतौर पर स्नातक के तुरंत बाद नौकरी पाने के इच्छुक युवाओं को यह क्षेत्र कम महत्वपूर्ण लग सकता है। लेकिन लोक सेवा

आयोग की परीक्षाओं के जरिये करियर की राहें खुली रहती हैं। राजनीति विज्ञान में कैरियर आपको समाज में व्यापक बदलाव लाने में मदद करेगा। आपके पास एक ऐसे करियर का मौका होगा, जिसमें सरकारी मुद्दों, समाज और सार्वजनिक नीतियों पर काम किया जाता है।

### रोजगार के अवसर

**नीति विश्लेषक**– एक नीति विश्लेषक एक विषय के बारे में गहराई से जानकारी प्राप्त करता है और किस तरह से कोई नीति लोगों पर असर डालती है, उसकी अच्छाई की जाँच करने के लिए जिम्मेदार होता है। राजनीति विज्ञान के इस कैरियर की बहुत लोकप्रियता है, जिसमें गहन शोध और विश्लेषण की जरूरत होती है।

**जनसम्पर्क विशेषज्ञ**– मीडिया का इस्तेमाल करके प्रेरक कहानियों के माध्यम से जनता की राय को प्रभावित करना एक जनसम्पर्क विशेषज्ञ का काम होता है। वे समसामयिकी घटनाओं को ध्यान में रखते हुए आकर्षक लाइन लिखते हैं। समय आने पर प्रेस कांफ्रेंस और अन्य आयोजनों के द्वारा वे मीडिया को अपने नूतन विचारों की तरफ आकर्षित करते हैं।

**राजनीति सलाहकार**– एक राजनीतिक सलाहकार राजनीतिक दलों को ये सलाह देता है कि वे नागरिकों का ध्यान कैसे आकर्षित कर सकते हैं, उनका समर्थन और वोट कैसे पा सकते हैं। वे पार्टी की धूमिल छवि को फिर से बनाने के तरीके बताते हैं। इसका नवीनतम उदाहरण प्रशान्त किशोर है।

**पत्रकारिता**– राजनीति विज्ञान में स्नातक जिनका झुकाव रेडियो, फिल्म, टेलीविजन या किसी अन्य मीडिया के प्रति होता है, वे अक्सर इस क्षेत्र का चयन करते हैं। जिन पत्रकारों ने राजनीति विज्ञान में पढ़ाई की है, वे मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय नीतियों पर रिपोर्ट बनाने में सक्षम होते हैं। वे इसलिए रिपोर्ट बनाते हैं ताकि लोग यह निर्णय ले सके कि उनके लिए वो नीतियाँ सही हैं या नहीं।

**विश्वविद्यालय प्रोफेसर/शिक्षक**– राजनीति स्नातक जिनका झुकाव राजनीति में पहुंचने की दिशा में होता है या राजनीति विज्ञान या इसकी किसी भी शाखा जैसे अंतर्राष्ट्रीय कानून, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, लोक प्रशासन को एक विषय के रूप में लेना चाहते हैं वे इस क्षेत्र का चुनाव करते हैं। एक विश्वविद्यालय या कॉलेज में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर हो सकते हैं। उसके लिए आपके पास किसी भी विश्वविद्यालय/कॉलेज/स्कूल में पढ़ाने के लिए बी.एड./एम.एड./नेट/पीएचडी की डिग्री होनी चाहिए।

**लोक सेवा**– भारत में संघ लोक सेवा आयोग के अंतर्गत तीन तरह के लोक सेवायें वर्गीकृत होती हैं। जिनके नाम हैं। 1– भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.), 2– भारतीय पुलिस (आई.पी.एस.), 3– भारतीय वन सेवा (आई.एफ.एस.)। यह एक उत्तम कैरियर विकल्प है, उनके लिए जो राजनीति विज्ञान में स्नातक करते हैं। यह सेवा देश के लिए अच्छा काम करने और बड़े निर्णय लेने के लिए होता है। आई.ए.एस. अधिकारी भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं और देश के कल्याणकारी कार्य के लिए काम करते हैं। सिविल सर्विसेज की परीक्षा में राजनीति विज्ञान से प्रश्न आते हैं, जो राजनीति विज्ञान वाले छात्र आसानी से हल कर पाते हैं।

**सोशल सर्विस**– अगर आप बी.ए. राजनीति विज्ञान से करने के बाद समाज के लिए काम करना चाहते हैं, तो सोशल सर्विस में कैरियर बना सकते हैं। इसके लिए आपको राजनीति से जुड़ना पड़ता है और फिर एन.जी.ओ. के लिए काम करते हैं। आप सरकार के साथ जुड़कर लोगों के कल्याणकारी कार्य के लिए काम करना चाहते हैं, तो सोशल सर्विस में करियर अपना सकते हैं। इसके लिए आपको डिग्री लेने के बाद मास्टर्स इन सोशल वर्क (एम.एस.डब्लू) करना होगा, या आप डिप्लोमा भी कर सकते हैं।

**राष्ट्र का नेतृत्व**– राजनीति विज्ञान में करियर केवल लोगों के जीवन में बदलाव लाने तक ही सीमित नहीं है। ऐसे कई अवसर आएँगे, जब नेतृत्व करने और प्रभार लेने का मौका मिलेगा और ये प्रभार कितना भी ऊँचा हो सकता है। आप एक जिला, शहर, राज्य या पूरे राष्ट्र के नेता बन सकते हैं।

**अपूर्व अनुभव**– राजनीति विज्ञान में कैरियर किसी नियमित 10 बजे से 5 बजे की नौकरी वाले कार्यभार और रोजाना की जिम्मेदारियों जैसे नहीं होंगे। आप रोज एक अनोखी चुनौती का सामना करेंगे, जो आपके काम में एकरसता कभी नहीं आने देगा। साथ ही आपको विभिन्न मामलों का सामना करने के लिए तैयार रहना पड़ेगा जो आपको उसमें मौजूद सभी क्षेत्रों के बारे में शिक्षित करेगा।

❖❖❖

# 'गीतांजलि श्री कृत 'रेत समाधि' को अंतराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार

● डॉ. सुनील कुमार
हिन्दी विभाग

12 जून, 1957 को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी में जन्मी, गीतांजलि श्री हिन्दी की जानी-मानी कथाकार और उपन्यासकार है। उत्तर-प्रदेश के मैनपुरी नगर में जन्मी गीतांजलि की प्रारंभिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में हुई। बाद में उन्होंने दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से स्नातक और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. किया। महाराज सयाजी राव वि.वि. वडोदरा से प्रेमचंद और उत्तर भारत के 'औपनिवेशिक शिक्षित वर्ग' विषय पर शोध की उपाधि प्राप्त की। कुछ दिनों तक जामिया मिलिया इस्लामिया वि.वि. में अध्यापन के बाद सूरत के सैंटर फॉर सोशल स्टडीज में पोस्ट-डॉक्टरोल रिसर्च के लिए गई। वहीं रहते हुए उन्होंने कहानियाँ लिखनी शुरू की।

उनकी पहली कहानी **बेलपत्र** 1987 में 'हंस' में प्रकाशित हुयी थी। इसके बाद उनकी दो और कहानियाँ एक के बाद एक '**हंस**' में प्रकाशित हुई। अब तक उनके पाँच उपन्यास- **माई, हमारा शहर उस बरस, तिरोहित, खाली जगह, रेत-समाधि** ा प्रकाशित हो चुके हैं और पाँच कहानी संग्रह- **अनुगूंज, वैराग्य, मार्च, माँ** और **साकूरा**, यहाँ हाथी रहते थे और प्रतिनिधि ा कहानियां प्रकाशित हो चुकी हैं। '**माई**' उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद '**क्रॉसवर्ड अवार्ड**' के लिए नामित अंतिम चार किताबों में शामिल था। '**खाली जगह**' का अनुवाद अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषा में हो चुका है। अपने लेखन में वैचारिक रूप से स्पष्ट और प्रौढ़ अभिव्यक्ति के जरिए उन्होंने एक विशिष्ट स्थान बनाया है। इनका एक शोध ग्रंथ बिटविन टू वर्ल्डस - एन इंटलैक्चुअल बायोग्राफी ऑफ प्रेमचंद प्रकाशित है।

बुकर पुरस्कार साहित्य जगत का एक प्रतिष्ठित सम्मान है और हर साल इन्हीं दिनों में इस पुरस्कार के लिए नामित होने वाले दुनियाभर के लेखकों की सूची जारी की जाती है। इस बार इस सूची में भारत की गीतांजलि श्री के अनुदित उपन्यास ''टॉम्ब ऑफ सैंड'' को शामिल किया गया है। खास बात यह है कि पहली बार किसी हिन्दी रचना को इस सूची में स्थान मिला है। पुरस्कार के लिए नामित लेखकों की प्रारंभिक सूची में शामिल किए जाने पर श्री ने कहा, ''लेखन तो अपने आप में ही एक पुरस्कार है। लेकिन बुकर से विशेष के रूप में पहचान मिलना एक अद्‌भुत बोनस है। आज दुनियाभर में बहुत कुछ निराशाजनक है, जो साहित्य जैसे क्षेत्रों में सकारात्मकता के महत्व को और भी बढ़ा देता है, यह मेरे हृदय में दृढ़ आशा के रूप में विद्यमान है।'' गीतांजलि श्री का अनुवादित हिंदी उपन्यास 'टॉम्ब ऑफ सैंड' अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार के लिए सूचीबद्ध 13 पुस्तकों में से एक है। ''रेत समाधि'' शीर्षक से लिखे गए, इस मूल हिन्दी उपन्यास का डेजी रॉकवैल ने अंग्रेजी में अनुवाद किया है। यह एक 80 वर्षीय महिला की कहानी है, जो अपने पति की मृत्यु के बाद बेहद उदास रहती है। आखिरकार, वह अपने अवसाद पर काबू पाती है और विभाजन के दौरान पीछे छूट गए अतीत की कड़ियों को जोड़ने के लिए पाकिस्तान जाने का फैसला करती है।

'श्री' ने बेहद मार्मिक और संवेदनशील भाषा में इस महिला की मन:स्थिति को तराशा है और डेजी ने इसके अंग्रेजी अनुवाद में भी इसकी मूल आत्मा को बरकरार रखते हुए, इसे सुंदर शब्दों में ढाला है। प्रारंभिक सूची में 13 उपन्यासों की घोषणा की गई है। 'बुकर' प्राइज की वेबसाइट के अनुसार यह विश्व की 11 भाषाओं से अंग्रेजी में अनुवादित रचनाएं हैं और चार महाद्वीपों के 12 देशों का प्रतिनिधित्व करती है, जिनमें पहली बार हिंदी भी शामिल है। निर्णायक मंडल ने 'श्री' की रचना का चयन करने की वजह बताते हुए कहा, ''गीतांजलि श्री का भाषा प्रवाह, हमें आश्चर्यजनक रूप से सहज ही 80 वर्ष की ऐसी महिला और उसके अतीत की ओर ले जाता है।'' यह पहली बार नहीं है, जब श्री की अनुवादित रचना को विश्व मंच पर सराहा गया है। उनके उपन्यास 'माई' का अंग्रेजी अनुवाद 'क्रॉसवर्ड अवार्ड' के लिए नामित किया गया था और अवार्ड की दौड़ में शामिल अंतिम चार किताबों में था। उनकी रचना 'खाली जगह' का अनुवाद अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषा में हो चुका है।

उन्हें मिले पुरस्कारों की बात की जाए तो हिंदी अकादमी ने उन्हें 2000-2001 का साहित्यकार सम्मान दिया। 1994 में उन्हें अनके कहानी संग्रह 'अनुगूँज' के लिए 'यूके' कथा सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अलावा वह इंदु शर्मा कथा सम्मान, द्विविजदेव सम्मान के अलावा जापान फाउंडेशन, चार्ल्स वॉलेस ट्रस्ट, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं। अपनी विविध और सशक्त कृतियों

से गीतांजलि श्री ने पिछले साढ़े तीन दशक में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई। उनका कथाशिल्प प्रतीकों और बिम्बों के सहारे गढ़ा गया है, जो अपने पात्रों को कमजोर बनाती हताशा को छिपाए बिना उन्हें विद्रोह और प्रतिकार करना सिखाती है और यही उनके लेखन की पहचान है।

पुरस्कार के लिए 2022 की शॉर्टलिस्ट की घोषणा सात अप्रैल को लंदन बुक फेयर में और विजेता की घोषणा 27 मार्च, 2022 को लंदन में एक समारोह में की गयी। 50,000 पाउंड यानी करीब 50 लाख रुपये के साहित्यिक पुरस्कार के लिए अन्य किताबों से इसकी प्रतिस्पर्धा हुयी। पुरस्कार की राशि लेखिका और अनुवादक के बीच बराबर बांटी गयी। गीतांलजि श्री के इस उपन्यास को निर्णायक मंडल ने 'अनूठा' बताया है। दरअसल यह उपन्यास ठहरकर पढ़े जाने वाला उपन्यास है। जिसकी एक कथा के धागे से कई सारे धागे बंधे हुए हैं। 80 साल की एक दादी है, जो बिस्तर से उठना नहीं चाहती और जब उठती है, तो सब कुछ नया हो जाता है। इस उपन्यास में सबकुछ है। स्त्री है, स्त्रियों का मन है, पुरुष है, थर्ड जेंडर है, प्रेम है, नाते हैं, समय है, समय को बांधने वाली छड़ी है, अविभाजित भारत है, विभाजन के बाद की तस्वीर है, जीवन का अंतिम चरण है, उस चरण में, अनिच्छा से लेकर इच्छा का संचार है, मनोविज्ञान है, सरहद है, कौवे हैं, हास्य है, बहुत लंबे वाक्य हैं, बहुत छोटे वाक्य हैं, जीवन है, मृत्यु है और विमर्श है, जो बहुत गहरा है, जो 'बातों का सच' है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के वर्मोट में रहने वाली रॉकवेल ने दक्षिण एशियाई साहित्य में पीएचडी किया है। उन्होंने कृष्णा सोबती, उपेंद्रनाथ अश्क, भीष्म साहनी और खदीजा मस्तूर आदि लेखकों सहित हिंदी और उर्दू के कई साहित्यिक कार्यों का अनुवाद किया है। गीतांजलि श्री (Geetanjali Shree) के हिंदी उपन्यास 'रेत समाधि' का डेजी रॉकवेल (Daisy Rockwell) ने अंग्रेजी में अनुवाद किया है। 'टॉम्ब ऑफ सैड' (Tomb of Sand) नाम से ये अंग्रेजी अनुवाद अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार के लिए सूचीबद्ध 13 किताबों में से एक है। यह एक ऐतिहासिक क्षण है। जब हिंदी से अनुवादित किसी किताब ने अपने लिए जगह बनाई है। अनुवाद को यूके में एशियाई साहित्य में खास जानकारी रखने वाले टिल्टेड एक्सिस प्रेस नामक एक नान-प्रफिट पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित किया गया है। जबकि भारत में पेंगुइन ने इसे प्रकाशित किया है।

हालांकि ऐसा नहीं है, कि रॉकवेल की पहली बार तारीफ हो रही है। इससे पहले, उन्हें कृष्णा सोबती की किताब 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' के अनुवाद के लिए मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन का एल्डो और जीन स्कैग्लियोन ट्रांसलेशन पुरस्कार मिला है। 'रेत समाधि' की तरह यह पुस्तक भी 1947 के विभाजन की त्रासदी और उस घटना से इंसानों की जिंदगी पर पड़ने वाले नाजुक प्रभाव से जुड़ी है। जब गीतांजलि श्री की पुस्तक का अनुवाद रॉकवेल कर रही थीं तो उन्हें लेखिका से काफी मदद मिली। उन्होंने किताब की फ्रांसीसी अनुवादक एनी मोंटौट से भी सम्पर्क किया। अपने एक्नालेजमेंट पेज पर रॉकवेल ने अनुवाद और प्रकाशन की दुनिया में अपनी सहयोगियों के अलावा रचनात्मक नाम दी गयी, बिल्लियों जैसे जूनी लिंस्की, मैडामा बटरफ्लाई और प्रिसेंस लीया का भी आभार व्यक्त करती हैं। वे कहती हैं कि इन लोगों ने हमारी क्षमता को निरन्तर समर्थन दिया और इसमें निरंतर विश्वास बनाए रखा। रॉकेवेल एक लेखक और चित्रकार भी हैं। उन्होंने आतंक के खिलाफ ग्लोबल वॉर पर पेंटिंग और निबंधों का एक संकलन 'द लिटिल बुक ऑफ टेरर (2012) और 'टेस्ट' (2014) नामक एक उपन्यास लिखा। टी.बी.9 हिंदी कॉम को दिए एक साक्षात्कार में डेजी रोकवेल बताती हैं कि मैं अभी उषा प्रियंवदा के दूसरे उपन्यास 'रुकोगी नहीं, राधिका' का अनुवाद कर रही हूं और कृष्णा सोबती की 'चन्ना' का भी अनुवाद कर रही हूं।

इस प्रकार अनुवाद के द्वारा एक भाषा की कृति दूसरी भाषा के क्षेत्र में भी अपना लोहा मनवा सकती है। क्योंकि भावनाओं एवं दर्द की कोई सरहद नहीं होती और एक ही भाषा होती है, आंसू। जो भाषा के स्तर पर, किसी प्रकार का भेदभाव नही करते। हिंदी भाषा के लिए यह एक अंतर्राष्ट्रीय गौरव का समय है। ऐसा भी नहीं है कि इससे पहले हिंदी से ऐसी कृतियों की रचना न की गई हो लेकिन उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत इस प्रकार से नहीं किया गया। जिस प्रकार से अनुवादकों के द्वारा वर्तमान समय में अनुवाद के द्वारा किया जा रहा है। आने वाले समय में हिंदी की कुछ ऐसी ही रचनाएं हमें अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित होती हुई दिखाई देगी।

## संदर्भ सूची (आधार सूची)


1. https://www.wikipedia.org
2. https://navbharattimes.indiatimes.com
3. https://www.bbc.com
4. https://www.janstta.com
5. https://www.hindisamy.com
6. https://www.tv9hindi.com


❖❖❖

# E- Governance (ई–शासन)

## (अवधारणा एवं भवष्योन्मुखता)

● **सुनील कुमार**
असि. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान

अपनी खोजी प्रवृत्ति के चलते वैज्ञानिकों ने बीसवीं शताब्दी में परिष्कृत संचार उपकरणों को खोजकर तीव्रगामी संचार की दिशा में एक क्रान्ति ला दी है। जिसे हम सूचना क्रान्ति के नाम से जानते हैं।

यद्यपि क्रान्तियों से सम्बन्धित सरोकारों का लम्बा इतिहास रहा है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र चाहे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, कोई भी क्षेत्र क्यों ना हो उसमें समय–समय पर अभूतपूर्व बदलाव क्रान्तियों के द्वारा ही सम्भव हुआ है। प्राचीन काल में आग की खोज, ताँबे की खोज, लोहे की खोज, पहिये की खोज व आधुनिक युग में औद्योगिक क्रान्ति, हरित क्रान्ति, श्वेत क्रान्ति, ब्लैक क्रान्ति, नीली क्रांति आदि से चलते–चलते, हम सूचना क्रान्ति के युग में प्रवेश कर गये।

वस्तुतः विगत वर्षों में भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जबर्दस्त कामयाबी हासिल की है और इसने जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। जन संचार माध्यमों में इलेक्ट्रानिक माध्यम का दायरा बहुत व्यापक है। इसमें रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, प्रोजेक्ट तथा बाईस्कोप शामिल हैं। विगत कुछ वर्षों में तरक्की के चलते डिजिटल माध्यम एक सशक्त तथा प्रभावी विधा के रूप में उभरा है। जिसमें दृश्य, श्रव्य, वीडियो, एनिमेशन और अनुरुपण के द्वारा सूचना को प्रभावी तरीके से लाभार्थी तक पहुंचाया जा सकता है। इसी परिप्रेक्ष्य में सरकारों द्वारा E-Governance (ई–शासन) की अवधारणा को अपनाया जा रहा है।

**ई–गवर्नेंस क्या है?** – ई–गवर्नेंस का अर्थ है किसी देश के नागरिकों को सरकारी सूचना एवं सेवाएं प्रदान करने के लिये संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी का समन्वित प्रयोग करना। सरल शब्दों में कहें ई– गवर्नेंस का मतलब सभी सरकारी कार्यों को ऑनलाइन सर्विस के माध्यम से जनता तक आसानी से पहुंचाना। जिससे सरकारी कार्यालयों और जनता दोनों के पैसे और समय की बचत हो सके, और बार–बार आपको विभिन्न दफ्तरों के चक्कर न लगाने पड़े। ई–गवर्नेंस में 'ई' का अर्थ 'इलेक्ट्रानिक' तथा गवर्नेंस का अर्थ 'शासन' से है।

अर्थात् ई–गवर्नेंस के तहत सभी सरकारी कार्यों को ऑनलाइन कर दिया गया है, जिससे जनता घर बैठे विभिन्न कार्यों के लिए ऑनलाइन ही अप्लाई कर सके।

सरकार की आम नागरिकों के लिए उपलब्ध सुविधाओं को इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध कराना ई–गवर्नेंस या ई–शासन कहलाता है। इसके अन्तर्गत शासकीय सेवाएं और सूचनाएं ऑनलाइन उपलब्ध होती हैं।

भारत सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक विभाग की स्थापना सन् 1970 में की और 1977 मे नेशनल इंफार्मेटिक्स सेंटर की स्थापना 'ई–शासन' की दिशा में पहला कदम था। आज भारत सरकार और लगभग सभी प्रमुख हिन्दी भाषी राज्यों की सरकारें आम जनता के लिए अपनी सुविधाएं इंटरनेट के माध यम से उपलब्ध करा रही हैं। इस दिशा में अभी शुरूआत ही हुई है तथा माना जा रहा है, कि आने वाले समय में सभी मूलभूत सरकारी सुविधाएं कम्प्यूटर तथा मोबाइल के माध्यम से मिलने लगेंगी जिससे समय, धन तथा श्रम की बचत होगी तथा देश के विकास में योगदान मिलेगा।

**ई–गवर्नेंस के अन्तर्गत आने वाले कार्य**– ई–गवर्नेंस के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य कराये जा सकते हैं–

1– आप ऑन लाइन बैंकिंग के जरिये सभी बैकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

2– जी.एस.टी. से सम्बन्धित सभी कार्य ऑनलाइन ही कर सकते हैं।

3– बिजली, पानी, टेलीफोन, मोबाइल, DTH, इत्यादि के बिल ऑनलाइन भरे जा सकते हैं।

4– पैन कार्ड, आधार कार्ड, राशन कार्ड, पासपोट, जाति प्रमाण पत्र आदि का सत्यापन।

5– आयकर रिटर्न फाइलिंग के सभी कार्य ऑनलाइन किये जा सकते हैं।

6- ट्रेन, बस और हवाई जहाज की टिकट ऑनलाइन बुक कर सकते हैं आदि।

**ई- गवर्नेंस के प्रकार-**

**1- G 2 G (Government to Government)** - G 2 G यानि सरकार से सरकार - जब सूचना और सेवाओं का आदान-प्रदान सरकारी की परिधि में होता है। इसे G 2 G इंटरैक्शन कहा जाता है। यह विभिन्न सरकारी संस्थाओं और राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय सरकारी संस्थाओं के बीच इकाई के विभिन्न स्तरों के बीच कार्य करता है।

**2- G 2 C (Government to Citizen) -** जी. 2 सी. यानि सरकार से नागरिक अर्थात् सरकार और आम जनता के बीच बातचीत को जी. 2 सी. कहते हैं। यहां एक प्रक्रिया सरकार और नागरिकों के बीच स्थापित की गई है। जिससे नागरिक विभिन्न प्रकार की सार्वजनिक सेवाओं तक पहुंच सकते हैं।

**3- G 2 B (Government to Business) -** जी. 2 बी. यानि सरकार से व्यवसाय, इसमें ई-गवर्नेंस बिजनेस क्लास को सरकार के साथ सहज तरीके से बातचीत करने में मदद करता है।

**4- G 2 E (Government to Employees) -** जी. 2 ई. यानि सरकार से कर्मचारी, किसी भी देश की सरकार सबसे बड़ी नियोक्ता है और इसलिए वह नियमित आधार पर कर्मचारियों के साथ काम करती है। यह सरकार और कर्मचारियों के बीच कुशलता और तेजी से संपर्क बनाने में मदद करता है।

**ई-गवर्नेंस से संबंधित चुनौतियां-**

**1- अवसंरचना-** बिजली, इण्टरनेट आदि बुनियादी सुविधाओं का अभाव।

**लागत-** 1- ई-गवर्नेंस हेतु किये जाने वाले उपाय महंगे होते हैं और इनके लिये भारी सार्वजनिक व्यय की आवश्यकता होती है।

2- भारत जैसे विकासशील देशों में, ई-गवर्नेंस पहल के कार्यान्वयन में परियोजनाओं की लागत प्रमुख बाधाओं में से एक है।

**गोपनीयता और सुरक्षा-** डेटा लीक होने के मामलों ने ई-गवर्नेंस के प्रति लोगों के विश्वास को खतरे में डाल दिया है। इसलिये ई-गवर्नेंस परियोजनाओं के कार्यान्वयन में सभी वर्गों के लोगों के हितों की सुरक्षा के लिये सुरक्षा मानक और प्रोटोकॉल होने चाहिये।

❖❖❖

# बैजनाथ मन्दिर का इतिहास

● **कु. मोनिका खाती**
बी.ए. द्वितीय वर्ष

बैजनाथ मन्दिर उत्तराखण्ड राज्य के बागेश्वर जिले के गरूड़ तहसील में स्थित है। यह मन्दिर गरूड़ से 2 किमी. की दूरी पर गोमती नदी के किनारे पर स्थित है। बैजनाथ मन्दिर लगभग 1000 साल पुराना है। इस मन्दिर के बारे में कहते हैं कि यह मंदिर सिर्फ एक रात में बनाया गया था। बैजनाथ उत्तराखण्ड का काफी महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक स्थल है। कौसानी से महज 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बैजनाथ गोमती नदी के तट पर स्थित है। पर्यटकों के लिए यहां का सर्वाधिक आकर्षण का केन्द्र 12वीं सदी में निर्मित शिव, गणेश, पार्वती, चंडिका, कुबेर, सूर्य मंदिर है। यहाँ पत्थर के बने हुए कई मंदिर हैं जिनमें मुख्य मंदिर भगवान शिव का है।

बैजनाथ मंदिर कुमाँऊ कत्यूरी राजा द्वारा बागेश्वर जिले में गोमती नदी के किनारे पर बनाया गया। यह मंदिर बैराज झील के किनारे पर स्थित है। ऐसी मान्यता है कि शिव और पार्वती ने गोमती व गरूड़ गंगा नदी के संगम पर विवाह रचाया था। बैजनाथ को पहले 'कार्तिकेयपुर' के नाम से जाना जाता था, जो कि 12वीं और 13वीं शताब्दी में कत्यूरी वंश की राजधानी हुआ करती थी। बैजनाथ मंदिर 1126 मीटर की ऊँचाई पर गोमती नदी के बाएँ किनारे पर स्थित है। कई राज्यों से पर्यटक बैजनाथ धाम पर्यटन करने के लिए आते हैं। वर्तमान में बैजनाथ मन्दिर मे बैराज झील में बोटिंग भी शुरू हो गयी है, जोकि पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है। यह मन्दिर विशाल पाषाण शिलाओं से बनाया गया है।

**भगवान शिव का धाम है बैजनाथ**
**गोमती नदी की शान है बैजनाथ**
**कुमाँऊ कत्यूरी राजा ने इसे बनाया**
**यहाँ शिव-पावर्तती ने विवाह रचाया**
**चमत्कार है बैजनाथ का इतिहास**
**शिव मंदिर बैजनाथ है बहुत खाश।**

❖❖❖

# स्वर्ग से सुन्दर मेरा गाँव

● कु. दीपा दानू
बी.ए. द्वितीय वर्ष

पहाड़ों की तलहटियों में बसा मेरा सुन्दर सा गाँव, जो चारों ओर से ऊँचे-ऊँचे पर्वतों से घिरा है। पर्वतों पर बर्फ की परत जो सफेद चादर की तरह चमक रही है। यह गाँव अन्तिम एवं सुदुर क्षेत्र में है। जिसका नाम है 'वॉण' मेरा गाँव अन्तिम एवं सुदुर क्षेत्र में होने के कारण सुविधाएँ इतनी नहीं हैं, फिर भी अपने आप में विकसित गाँव है। यहां पर्यटक स्थल भी हैं, जिस कारण यह गाँव सुदुर क्षेत्र में होने के कारण भी प्रसिद्ध है, यहां लोग देश-विदेश से घूमने आते हैं। जिससे गाँव के लोगों को रोजगार भी प्राप्त हो जाता है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य इतना अच्छा है जो एक बार आये, मानें जाने का तो सवाल ही नहीं उठता।

पड़ी जो नजर मेरी अचानक.....इस खूबसूरत गांव पर
उभरा जहन में मेरे.....बस यही एक ख्याल कि
प्रकृति को भी है, ये खबर, हर मर्ज की दवा है संगीत
इसलिए सजा रखी उसने सुर-साज की ये महफिल
सजती रहे, ये मधुर धुन सदा, न लगे विराम इस सौंदर्य पर

गवा मत खूबसूरत पल उठ जाग भोर हुई
देख सुनहरी धूप खिली सुन पक्षियों के मधुर गीत
प्रकृति का मोह, संगीत
नदियाँ भी अपनी धुन में गुनगुनाती मगन हो वह रही
सुबह के सारे खूबसूरत पल हो, तुम भी इसमें शामिल हो।

अपनी पौराणिक संस्कृति के कारण भी आज यह गाँव प्रसिद्ध है। यहाँ का खान-पान, रहन-सहन और यहाँ कि वेष-भूषा एक हद तक सबसे अलग है। यहाँ की महिलाएँ पाखुला (कम्बल) पहनती और आभूषण में जैसे- नथ, बुलाक, गुलबन्ध, पायल, पैज्यो, हार, कृगी, सुईसांगल आदि पुराने जो आभूषण होते थे, उन्हें पहनती हैं और खान-पान के अन्तर्गत- मडुंवा की रोटी, चौलाई की रोटी, फाबर की रोटी इत्यादि खाते हैं। सब्जी में सरसों के पत्ते, राजमा की दाल, भट्ट, तोरी, काली दाल आदि खाते हैं। सामान्यतः यह सारी चीजें, इसी गाँव में होती हैं। आज भी गाँव के लोग आटा पिसाने चक्की के होते हुए घराट ले जाते हैं, जिसके कारण गाँव के लोग तंदुरस्त रहते और लम्बी उमर तक रहते हैं। गाँव में आये बाहर के लोगों को भी यहां का रहन-सहन, खान-पान बहुत पसंद है और हमें इसी संस्कृति पर गर्व है। इस गाँव में एक रहस्य मन्दिर भी है। जिसके कारण यह गाँव आज प्रसिद्ध है। गाँव में '**श्री लाटू जी**' का प्रसिद्ध मन्दिर है, आप तो जानते हो, श्री लाटू जी नन्दा देवी के आराध्य भाई हैं, जब नन्दा देवी राजजात यात्रा आती तो एक दिन इस गाँव में रहती है। श्री लाटू जी अपनी बहिन से मिलते और अगले दिन जैसे यात्रा दूसरे पड़ाव के लिए निकलती है तो लाटू जी अपनी बहिन को आधे रास्ते छोड़ने जाते हैं और वापस अपने स्थान पर आ जाते हैं।

अप्रैल के महीने में यहां एक मेला लगता है जिसमें देश-विदेश के लोग आते हैं। इस मेले का नाम है ''बौर'' और इस दिन श्री लाटू जी का कपाट खोला जाता है। इस मन्दिर के बारे में हमारे पूर्वजों का कहना है कि ''मन्दिर के अन्दर नागराज अपनी नागमणि के साथ विराजमान हैं।'' उनका कहना है जो भी मन्दिर के अन्दर जाता है, वह उस मणि की रोशनी के कारण उसकी आँखों की रोशनी हमेशा के लिए चली जाती है। वह मणि इतनी चमकदार है, जो आँखों की रोशनी ले जाती है।

इसलिए मन्दिर के पुजारी आँखों में पट्टी बाँध कर पूजा करते हैं और वे कहते हैं, पट्टी बाँधने से पुजारी की मुंह की गंध नागराज तक नहीं जाती, नहीं तो अनर्थ हो जाएगा। इसी कारण पुजारी हमेशा आँखों में पट्टी बाँधकर जाते हैं और पट्टी बाँधकर पूजा करते हैं और उनका कहना है कि एक युवक जो श्री लाटू जी के परम भक्त थे, वे रोज सुबह-शाम पूजा करने मन्दिर जाते थे, फिर अचानक एक दिन उसे क्या हो गया, उसके मन में मन्दिर के अन्दर जाने की इच्छा हो गयी और उसने मन्दिर के अन्दर जाने की कोशिश की, तो उसकी आँखों की रोशनी चली गयी। वह युवक फिर दुबारा कभी मन्दिर नहीं गया। आज भी वह व्यक्ति गाँव में ही है।

गाँव के लोग तो श्री लाटू जी को गाँव का ईष्ट देवता मानते हैं। वे लोग इस देवता पर बहुत आस्था रखते हैं। जब गर्मियों में नदी, नाले, झील, तालाब सब सूख जाते हैं और गाँव वालों की फसल नहीं होती, तब गाँव के लोग ढोल-दमाऊ के साथ मन्दिर जाते हैं और पाँच या सात दिन तक वह लोग मन्दिर में ही रहते, और लाटू जी का आह्वान करते हैं। आह्वान करने के बाद जब बारिश होती है, तो गाँव के लोग खुशी के मारे झूम उठते हैं।

मैं तो कभी-कभी सोचती हूँ एक ओर, हमें कहते इस युग में अन्धविश्वास नहीं करना चाहिए, दूसरी ओर ये सब हमारे आँखों के सामने हो रहा है। किस पर विश्वास करूं। खैर जो भी है पर मुझे गर्व है कि मैं इस गाँव की बेटी हूँ। मुझे अपने गाँव से प्यार है और गर्व भी है।

''प्रकृति की खामोशी में भी
मीठी यह चहचाहट सुनाई पड़ती है।
जो मेरे भीतर की गहराई तक जाकर
मुझे खामोश रहना सिखाती है।
मैं वो पहाड़ की बेटी हूँ
जो मुझे आगे बढ़ना सिखाती है।''

कहते हैं जो एक बार सच्चे मन से इस मन्दिर में कुछ माँगे तो माँगी इच्छा अवश्य पूरी होती है।

❖❖❖

**वे किसके बच्चे हैं जो फुटबाल सिलते हैं, फिर भी कभी फुटबाल से खेला नहीं? वे हमारे बच्चे हैं। वे किसके बच्चे हैं जो पत्थरों और खनिजों की खान में काम करते हैं? वे हमारे बच्चे हैं। वे किसके बच्चे हैं हो कोको की पैदावार करते हैं, फिर भी चॉकलेट का टेस्ट नहीं जानते? वे सभी हमारे बच्चे हैं।**

-कैलाश सत्यार्थी

# नंदा देवी लोकजात यात्रा: उत्तराखण्ड की वर्षो पुरानी परम्परा

● **कु. मनीषा रावत**
बी.ए. तृतीय वर्ष

**नन्दा देवी यात्रा:**- नन्दा देवी राज जात भारत के उत्तराखण्ड राज्य में होने वाली नन्दा देवी की एक धार्मिक यात्रा है। यह उत्तराखण्ड के कुछ सर्वाधिक प्रसिद्ध सांस्कृतिक आयोजन में से एक है। यह यात्रा अपने आप में अद्भुत व रोमांचक यात्रा है। किसी जमाने में, इस यात्रा का आयोजन क्षेत्र विशेष के लोगों की जिम्मेदारी होती थी, लेकिन आज इस यात्रा का विषम भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद, सफल संचालन करना सरकारों के लिए किसी चुनौती से कम नहीं है।

इस यात्रा के पीछे मान्यता है, कि नंदा देवी गढ़वाल के साथ कुमाऊँ कत्यूरी राजवंश की ईष्टदेवी थी और वे उत्तराखण्ड की बेटी है। वह इस यात्रा के माध्यम से अपने ससुराल यानि कैलाश पर्वत जाती हैं। इस ऐतिहासिक यात्रा को गढ़वाल-कुमाऊँ के सांस्कृतिक मिलन का प्रतीक भी माना जाता है।

नन्दादेवी की यह ऐतिहासिक यात्रा चमोली जनपद के **नौटी गांव** से शुरू होती है, जो नौटी से पैदल रहस्यमयी रूपकुंड होकर हेमकुंड तक जाती है, जो 18 हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। इस 280 किमी. की धार्मिक यात्रा के दौरान रास्ते में घने जंगल, पथरीले मार्गो व दुर्गम चोटियों और बर्फीले पहाड़ों को पार करना पड़ता है।

इस यात्रा को पूरा करने में 19 दिन का समय लग जाता है। इस यात्रा का मुख्य आकर्षण चौसिंग खाडू (चार सिंगों वाला भेड़) होता है, जोकि स्थानीय क्षेत्र में राजजात यात्रा शुरू होने से पहले पैदा हो जाता है। उसकी पीठ में दो तरफ थैले में श्रद्धालु गहने, श्रृंगार व अन्य सामग्री व भेंट देवी के लिए रखते हैं, जो कि हेमकुण्ड में पूजा होने के बाद आगे हिमालय की ओर प्रस्थान करता है। लोगों का मानना है कि यह चौसिंगा खाडू आगे विकट हिमालय में जाकर विलुप्त हो जाता है। माना जाता है कि यह नंदादेवी के क्षेत्र कैलाश में प्रवेश कर जाता है, जो आज भी अपने आप में एक रहस्य बना हुआ है।

इससे पहले यह यात्रा अविभाजित उत्तर प्रदेश के शासन काल में वर्ष 2000 के भाद्रपद माह में संपन्न हुई थी। जिनमें लगभग 50 हजार लोगों ने भाग लिया था।

❖❖❖

# हिन्दी साहित्य

● कु.कमला
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा तक जाती हैं, परन्तु मध्ययुगीन भारत के अवधी मार्ग थी अर्धमाग थी तथा मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य को हिन्द का आरम्भिक साहित्य माना जाता है।

हिन्दी साहित्य ने अपनी शुरूआत लोकभाषा कविता के माध्यम से की और गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ। हिन्दी का आरम्भिक साहित्य अपभ्रंश से मिलता है। हिन्दी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है।

**गद्य, पद्य और चम्पूः**- जो गद्य और पद्य दोनों में हो, उसे चम्पू कहते हैं। खड़ी बोली की पहली रचना कौन सी है। इस विषय में विवाद है, लेकिन ज्यादातर साहित्यकार लाला श्री निवासदास द्वारा लिखे गये उपन्यास 'परीक्षा गुरू' को हिन्दी की पहली प्रमाणिक गद्य रचना मानते हैं।

**हिन्दी साहित्य का आरम्भः**- हिन्दी साहित्य का आरम्भ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे-छोटे शासन केन्द्र स्थापित हो गए थे, जो परस्पर संघर्षरत रहा करते थे। मुसलमानों से भी इनकी टक्कर होती रहती थी। हिन्दी साहित्य के विकास को आलोचक सुविधा के लिए पाँच ऐतिहासिक चरणों में विभाजित कर देखते हैं जो क्रमवार निम्नलिखित है-

1- आदिकाल (1400 ईसवीं पूर्व)
2- भक्तिकाल (1375 से 1700)
3- रीति काल (संवत् 1700 से 1900)
4- आधुनिक काल (1850 ईस्वीं के पश्चात)
5- नव्योत्तर काल (1980 ईस्वीं में पश्चात)

**1- आदिकाल :**-हिन्दी साहित्य आदिकाल को आलोचक 1400 ईस्वीं से पूर्व का काल मानते हैं, जब हिन्दी का उद्भव हो ही रहा था। हिन्दी की विकास यात्रा दिल्ली, कन्नौज और अजमेर क्षेत्रों में हुई मानी जाती है। पृथ्वीराज चौहान का उस समय दिल्ली में शासन था और चंदबरदाई की रचना 'पृथ्वीराज रासो' है। जिसमें उन्होंने अपने मित्र पृथ्वीराज की जीवन गाथा कही है। 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी साहित्य में सबसे बृहत् रचना मानी गई है। कन्नौज का अन्तिम राठौड़ शासक जयचंद था जो संस्कृत का सबसे बड़ा शासक था।

**2- भक्तिकालः**- हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल 1375 से 1700 तक माना जाता है। यह काल प्रमुख रूप से भक्ति भावना से ओतप्रोत है। इस काल को समृद्ध बनाने वाली दो काव्य धाराऐं हैं।

1- निर्गुण भक्तिधारा
2- सगुण भक्तिधारा

निर्गुण भक्तिधारा को आगे दो हिस्सों में बाँटा गया है। एक है संत काव्य जिसे ज्ञानश्री शाखा के रूप में भी जाना जाता है। इस शाखा के प्रमुख कवि कबीर, नानक, दाइदयाल, रैदास काव्य जिसे ज्ञानाश्रयी शाखा के रूप में भी जाना जाता है। इस शाखा के प्रमुख कवि नानक, दादूदयाल, रैदास, मूलकदास, सुन्दरदास, धर्मदास आदि हैं।

निर्गुण भक्तिधारा का दूसरा हिस्सा सूफी काव्य का है इसे प्रेमाश्रयी शाखा भी कहा जाता है। इस शाखा के प्रमुख कवि हैं- मलिक मोहम्मद जायसी, कुतुबन, मंझन, शेखनवी, कासिम शाहनूर मोहम्मद आदि। भक्तिकाल की दूसरी धारा को सगुण भक्ति धारा कहा जाता है। सगुण भक्तिधारा दो शाखाओं में विभक्त है। रामाश्रयी शाखा तथा कृष्णाश्रयी शाखा। रामाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं- तुलसीदास, अग्रदास, नाभादास, केशवदास, रूदयराम, प्राणचंद चौहान, महाराज विश्वनाथ सिंह।

कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं- सूरदास, नंनदास, कुम्भनदास, छीतस्वामी, गोविन्द स्वामी, चतुर्भुज दास, कृष्णदास, मीरा, रसखान, रहीम आदि। चार प्रमुख कवि जो अपनी-अपनी धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं ये कवि हैं (क्रमशः)

1- कबीरदास- 1399-1518
2- मलिक मोहम्मद जायसी - 1477-1542
3- सूरदास - 1478-1580
4- तुलसीदास 1532-1602

**3- रीति कालः**- हिन्दी साहित्य का रीतिकाल संवत् 1700 से

1900 तक माना जाता है यानि 1643 ई0 से 1843 ई0 तक रीति का अर्थ है बना बनाया रास्ता या बँधी-बँधाई परिपाटी। इस काल को रीतिकाल कहा गया क्योंकि इस काल में अधिकांश कवियों ने श्रृंगार वर्णन, अलंकार प्रयोग, द्वन्द, बद्धता आदि के बँधे रास्ते की ही कविता की। हालांकि घनानंद, बोधा, ठाकुर, गोविन्द सिंह जैसे रीतिमुक्त कवियों ने अपनी रचना के विषय मुक्त रखे। इस काल को रीतिबद्ध और रीतिमुक्त तीन भागों में बाँटा गया है। केशव (1546-1616) बिहारी (1603-1664) भूषण (1613-1705) मतिराम, घनानन्द, सेनापति आदि इस युग के प्रमुख रचनाकार रहे।

**4- आधुनिक काल :-** आधुनिक काल हिन्दी साहित्य पिछली दो सदियों में विकास के अनेक पड़ावों से गुजरा है, जिसमें गद्य तथा पद्य में अलग-अलग विचारधाराओं का विकास हुआ। जहां काव्य में इसे छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग और यथार्थवादी युग इन चार नामों से जाना गया, वहीं गद्य में इसको भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, रामचंद शुक्ल व प्रेमचंद युग तथा अद्यतन युग नाम दिया गया।

अद्यतन युग के गद्य साहित्य में अनेक ऐसी साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ, जो पहले या तो थी ही नहीं या फिर इतनी विकसित नहीं थी कि उनको साहित्य की एक अलग विधा का नाम दिया जा सके। जैसे- डायरी, यात्रा विवरण, आत्मकथा, रूपक, रेडियो नाटक, पटकथा लेखन, फिल्म आलेख इत्यादि।

**5- नव्योत्तर काल :-** नव्योत्तर काल की कई धाराएँ हैं- एक पश्चिम की नकल को छोड़ एक अपनी वाणी पाना। दो अतिशय अलंकार से परे सरलता पाना। तीन जीवन और समाज के प्रश्नों पर असंदिग्ध विमर्श।

❖❖❖

## आजादी

● **कु. पूजा बिष्ट**
बी.ए. प्रथम वर्ष

पंछी है कैद अगर,
तो उड़ने में कर मदद तू।
रात है, काली अगर,
दिया जलाकर रोशन कर तू।
बीत गए कई साल, रुढ़िवाद विचारों में उलझ कर,
सुलझा मन के भाव तू।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा,
सबके जीवन का कर सम्मान तू।
तोड़ दे, दीवारें सारी,
आगे बढ़, विजयी राह पर।
उन वीरों ने क्या पाया?
अगर तू अब भी डर में खोया।
उठ जा तू, छू ले आसमान,
आजादी पे है, सबका हक।

❖❖❖

## नई विधायें

● **कु. लीला**
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

सत्य ही आधार हो, सत्य ही बुनियाद हो।
ऐसे मनुष्य भला कहां, देखने को मिलें।
कर्म करूं ऐसा कि छति ना हो किसी को
भला ऐसी सोच अब कहां? किसी में।
नासूर बना है, फरेब आज समाज का
इसे खत्म करने की चाह कहाँ? अब किसी में
खत्म होती जा रही, आज रीत पुरानी
अंत करें मिल कर, जगा नव ज्योति की
आओ! आरंभ करें नई दिशा, नई सोच को
आरंभ करें, नव विधा, नव जीवन को
अगर कर सकूं भला, मनुष्य जीवन को
तो हुंकार भरता हूं जगाऊ नव भारत को
लहर उठे अगर मन में हो वो नव चेतन
जीवन का हर कण हर क्षण न्योछावर हो
करूं प्रण इसका सुगम बनाने नव चेतन को
नव सृजन, नव जीवन, नव आरंभ को

❖❖❖

# कोरोना वायरस : एक वैश्विक चुनौती एवं निदान

● कु. कलावाती
बी.ए. प्रथम वर्ष

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनिया भर में तेजी से फैला रहा है।

**कोरोना वायरस क्या है?**

कोरोना वायरस (सीओवी) का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है, जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसम्बर में चीन के बुहान में शुरू हुआ था। डब्लूएचओ के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ, इसके लक्षण हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है।

इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसम्बर में चीन के बुहान में शुरू हुआ था। डब्लूएचओ के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खरांश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है, इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसम्बर में सबसे पहले चीन में पकड़ में आया था। इसके दूसरे देशों में पहुंच जाने की आशंका जताई जा रही है।

कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए फैलते हैं। कोराना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा है, जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड 19 नाम का यह वायरस अब तक 70 से ज्यादा देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए, सावधानी बरतने की जरूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

**क्या है इस बीमारी के लक्षण?**

कोविड 19 / कोराना वायरस से पहले बुखार होता है इसके बाद सूखी खांसी होती है और फिर एक हफ्ते बाद साँस लेने में परेशानी होने लगती है। इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि आपको कोराना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, सांस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहां तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है, उसके मामले में खतरा गम्भीर हो सकता है। जुकाम और फ्लू के वायरसों में भी इसी तरह के लक्षण पाए जाते हैं।

कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तथा इस समय कोरोना वायरस का कोई इलाज नहीं है लेकिन इसमें बीमारी के लक्षण कम होने वाली दवाईयां दी जा सकती हैं। जब तक आप ठीक न हो जाएं तब तक आप दूसरों से अलग रहें, कोरोना वायरस के इलाज के लिए वैक्सीन विकसित करने पर काम चल रहा है इस साल के अन्तं तक इंसानों पर इसका परीक्षण कर लिया जाएगा कुछ अस्पताल एंटी वायरल दवा का भी परीक्षण कर रहे हैं।

**क्या है इसके बचाव के उपाय?**

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इसके मुताबिक हाथों को साबुन से धोना चाहिए। अल्कोहोल आधारित हैण्डवॉस का इस्तेमाल भी किया जा सकता है खांसते और छींकते समय नाक और मुंह रूमाल या टीश्यू पेपर से ढककर रखें जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों उनसे दूरी बनाकर रखें। अंडे और मांस के सेवन से बचें। जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचें।

**मास्क कौन से और कैसे पहनें?**

1-अगर आप स्वस्थ हैं तो आपको मास्क की जरूरत नहीं है

2- अगर आप किसी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे हैं तो आपको मास्क पहनना होगा।

3- जिन लोगों को बुखार, कफ या सांस लेने में तकलीफ की शिकायत है उन्हें मास्क पहनना चाहिए और तुरन्त डॉक्टर के पास जाना चाहिए।

मास्क पहनने का तरीका-

1- मास्क पर सामने से हाथ नहीं लगाना चाहिए।

2- अगर हाथ लग जाए तो तुरन्त हाथ धोना चाहिए।

3- मास्क को ऐसे पहनना चाहिए कि आपकी नाक, मुह और दाढ़ी का हिस्सा उससे ढका रहे।

4- मास्क उतारते वक्त भी मास्क का प्लास्टिक या फीता पकड़कर निकालना चाहिए। मास्क नहीं छूना चाहिए।

5- हर रोज मास्क बदल दिया जाना चाहिए।

**कोरोना का संक्रमण फैलने से कैसे रोके?**

सार्वजनिक वाहन जैसे बस, ट्रेन, ऑटो या टैक्सी से यात्रा न करें। घर में मेहमान न बुलाएं। घर का सामान किसी और से मंगवाए। ऑफिस, स्कूल या सार्वजनिक जगहों पर न जायें अगर आप और भी लोगों के साथ रह रहे हैं तो ज्यादा सतर्कता बरतें अलग कमरे में रहें और साझा रसोई व बाथरूम को लगातार साफ करें। 19 दिनों तक ऐसा करते रहें ताकि संक्रमण का खतरा कम हो सके। अगर आप संक्रमित इलाके से आए हैं या किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में रहे हैं तो आपको अकेले रहने की सलाह दी जा सकती है। अत: घर पर रहें।

❖❖❖

**इस पूरी दुनिया में इतना अन्धकार नहीं है कि वो एक छोटी सी मोमबत्ती का प्रकाश बुझा सके।**

-बुद्ध

**हर एक जीवित प्राणी के प्रति दया रखो। घृणा से विनाश होता है।**

-महावीर स्वामी

# बधाणगढ़ी का इतिहास

● **कु. उर्मिला नेगी**
बी.ए. द्वितीय वर्ष

बधाणगढ़ी मन्दिर उत्तराखण्ड के चमोली जिले में स्थित है। यह मन्दिर एक ताल में स्थित है। जो कि ग्वालदम से 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर काफी ऊँचाई पर स्थित है। और बहुत ही सुन्दर है। भगवान काली माता और भगवान शिव का एक लिंग है। कालीमाता के इस मन्दिर को बधाण कहा जाता है। इस मन्दिर को कत्यूरी वंश शिव के रुप में भी जाना जाता है। जिनका 8वीं और 12वीं शासन के दौरान बनाया गया था। यह मंदिर इस क्षेत्र का लोकप्रिय मन्दिर है। जिसे चिल्ला घाटी भी कहा जाता है। बधाणगढ़ी मंदिर समुद्रस्तर से ऊपर 2260 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

इस मन्दिर के बारे में यह भी कहा जाता है कि यहाँ माँगी जाने वाली हर मनोकामना जरुर पूरी होती है। मन्दिर से उत्तराखण्ड में कुछ प्रमुख चोटियाँ जैसे नन्दा देवी, त्रिशूल, पंचाचुली जैसे कुछ लोगों के नाम पर भी एक मनोरम दृश्य प्राप्त हो सकता है। इस स्थान से ट्रैंकिग का आनंद भी लिया जाता है।

बधाणगढ़ी मन्दिर के अलावा आप चमोली जिले के अन्य क्षेत्रों में तुंगनाथ मन्दिर अनुसूया मन्दिर, रूद्रनाथ मन्दिर, गोपीनाथ मन्दिर, लाटू देवता मन्दिर, कल्पेश्वर मन्दिर, ज्वाल्या देवी मन्दिर आदि मन्दिरों के दर्शन कर सकते हैं। बधाणगढ़ी मन्दिर भगवान काली को समर्पित एक प्राचीन हिन्दू मन्दिर है। जिसे माँ दक्षिणेश्वर काली या भगवती के रूप में पूजा जाता है। थराली, नारनबागर, चमोली के देवाल ब्लॉक और बागेश्वर के कपकोट ब्लॉक के गरुड़ में रहने वाले लोगों की इस क्षेत्र के एक लोकप्रिय देवता बधाणगढ़ी में बहुत आस्था है। बधाणगढ़ी मन्दिर बॉज-बुरांश के घने जंगलों के मध्य सुरम्य स्थल पर है। संपूर्ण गावों के मध्य से या क्षेत्र के गाँवों से बधाणगढ़ी दिखाई देती है। भौगोलिक एवं सामाजिक दृष्टि ये यह बहुत महत्वपूर्ण है।

❖❖❖

*लघु कथा–*

# शेर और लकड़हारा

● **डॉ सुनील कुमार**
हिन्दी विभाग

एक गांव में एक लकड़हारा रहता था और वह लकड़ी बेचकर अपना और अपने परिवार का भरण–पोषण करता था। एक रोज जंगल में उसकी दोस्ती एक शेर से हो गई। शेर और लकड़हारे में इतना घनिष्ठ प्रेम हो गया, कि शेर भी लकड़हारे के लिए लकड़ियां तोड़ कर जमा करता और दोनों अपने दु:ख–दर्द एक दूसरे से बयां करते। धीरे–धीरे समय गुजरता गया। कुछ वर्षों बाद लकड़हारे की बेटी का विवाह तय हो गया। लकड़हारे ने सम्मान पूर्वक शेर को भी अपनी बेटी के विवाह में आने के लिए निमंत्रण दिया। शेर ने उसका निमंत्रण स्वीकार किया और उसने कहा कि मुझे बहुत खुशी हो रही है कि तुम्हारी बेटी का विवाह तय हो गया है, लेकिन मेरे दोस्त मैं तुम्हारी बेटी के विवाह कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाऊंगा, क्योंकि अगर मैं आ गया तो जो तुम्हारे घराती, बराती होंगे वह मुझे देखकर डरेंगे, इसलिए मेरे दोस्त मुझे माफ कर दे, मैं नहीं आ पाऊंगा। लेकिन लकड़हारा हट कर बैठता है, क्या तुम मेरे सच्चे दोस्त हो ? तो तुम्हें मेटी बेटी के विवाह में जरूर आना है। शेर फिर भी लकड़हारे को समझाता है, लेकिन लकड़हारा कुछ भी सुनने का तैयार नहीं होता है। फिर शेर विवाह में आने के लिए तैयार हो जाता है, लेकिन एक शर्त रखता है, कि तुम मुझे किसी कमरे में बंद कर देना, क्योंकि अगर मैं बाहर रहा तो मुझसे सब लोग डरेंगे। लकड़हारा, शेर की इस शर्त का स्वीकार कर लेता है।

समय गुजरता गया और लकड़हारे की बेटी के विवाह का दिन भी आ गया। शेर भी विवाह में पहुंच गया और लकड़हारे ने शेर की शर्त के अनुसार उसको एक कमरे में बंद कर दिया। विवाह कार्यक्रम चल ही रहा था कि खाना खाने के बाद कुछ बाराती उसी कमरे का दरवाजा खोलने लगे, जिसमें शेर बंद था। लकड़हारे ने जैसे देखा, उसे कुछ समझ में नहीं आया और उसने बारातियों से कहा, कि उस दरवाजे को मत खोलो, वहां एक खतरनाक कुत्ता बंद कर रखा है। कुत्ता शब्द जैसे ही शेर के कान में पड़ा, शेर गुस्से से पागल हो गया और इंतजार करने लगा कि कब लकड़हारा उस कमरे का दरवाजा खोले और वह वहां से कुलांचे भर कर जंगल में चला जाए। सुबह होते ही लकड़हारे ने उस कमरे का दरवाजा खोला और शेर कुलांचे भरता हुआ फिर से जंगल में चला गया।

विवाह कार्यक्रम संपन्न होने के कुछ दिनों के बाद लकड़हारा फिर अपनी दिनचर्या में आ गया और लकड़ी काटने के लिए जंगल में चला गया। लकड़हारे ने शेर से कहा कि मेरे दोस्त, तुम उस सुबह भी उदास होकर जंगल में आए और आज भी तुम उदास लग रहे हो, ऐसा क्या हो गया, तुम्हारी मेहमान नवाजी में जो मैं नहीं कर पाया। शेर ने लकड़हारे से कहा अगर तुम मेरे सच्चे दोस्त हो तो, अपनी इस कुल्हाड़ी से मेरी इस बायी भुजा पर प्रहार करो। लकड़हारे ने कहा, मेरे दोस्त तुम ऐसी बातें क्यों कर रहे हो, लेकिन शेर कुछ सुनने को तैयार नहीं था। लेकिन लकड़हारा भी इस कार्य को करने के लिए तैयार नहीं हुआ फिर शेर ने कहा कि मेरे दोस्त, मेरे अजीज दोस्त तुम्हें हमारी दोस्ती की कसम, इसलिए अपनी कुल्हाड़ी की तेज धार से मेरी इस भुजा पर प्रहार करो। शेर के बार–बार आग्रह करने पर अंत में थक हार कर लकड़हारे ने कुल्हाड़ी से शेर की भुजा पर प्रहार किया और लहूलुहान शेर कुलांचे भरता हुआ घुप्प जंगल में चला गया।

इस बीच हर रोज लकड़हारा लकड़ी काटने के लिए जंगल में आता लेकिन शेर का कहीं कोई अता–पता नहीं था। लकड़हारा अपने दोस्त शेर के कारण उदास रहने लगा। करीब छ: महीने के बाद शेर कुलांचे भरता हुआ उसी जगह पर पहुंच गया, जहां पर शेर और लकड़हारा हर रोज मिलते थे। शेर को देखकर लकड़हारा और लकड़हारे को देखकर शेर दोनों ही प्रसन्न हो गए और दोनों एक दूसरे के गले लग गए। दोनों की आंखों में स्नेह के आंसुओं की धारा बहने लगी। लकड़हारे ने शेर से पूछा, कि मेरे दोस्त मैं उस बात को अभी तक नहीं समझ पाया हूं कि तुमने क्यों अपनी भुजा पर मेरे द्वारा कुल्हाड़ी से प्रहार कराया। शेर ने कहा देखो मेरी उस भुजा पर, जिस पर तुमने कुल्हाड़ी से प्रहार किया था। वह घाव भर गया है, लेकिन अपनी बेटी के ब्याह के दिन तुमने जो मेरे लिए कुत्ता कहा था, वह बात हर रोज मुझे जलील करती है। लकड़हारा अब समझ गया कि उसने उस दिन कितनी बड़ी भूल कर दी। उसने अपने दोस्त शेर से क्षमा मांगी, मेरे दोस्त मुझे माफ कर दे, मुझसे गलती हो गई, मुझे ऐसे शब्द नहीं बोलने चाहिये थे। फिर स्नेह की धारा में दोनों दोस्तों के गिले–शिकवे नेस्तनाबूद होकर बह गए।

यह लघुकथा हमें यह शिक्षा देती है कि भाषा का प्रहार, तेज धारदार कुल्हाड़ी के प्रहार से भी गहरा जख्म करता है। इसलिए भाषा का प्रयोग हमेशा सोच–समझ कर करना चाहिए।

# सच्ची घटना पर आधारित कहानी

● कु. पूजा
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर

बहुत समय पहले की बात है, किसी गाँव में बहादुर परिवार निवास करता था और वह परिवार सुखी व समृद्ध भी था। इनके पूर्वज भारत में ही रहने के कारण भारतीय निवासी थे। करन बहादुर और उनकी पत्नी सुनीता के दो बेटे और चार बेटियाँ थी। बड़े बेटे का नाम राकु था व बेटियों का नाम रूपा, राधा, रूकमणि, सीता था। इनके पिता व बड़े भाई राकु फौज में कार्यरत थे तथा छोटे बेटे का नाम रमेश था।

इनके पिता अपने बेटे राकु की शादी तारा नाम की लड़की से कर देते हैं, कुछ समय बाद वे आधी रात में तारा को जान से मार देते हैं और घर के थोड़े पास में किसी पेड़ पर लटका देते हैं। सुबह होने पर सुनने मे आता है कि तारा ने आत्महत्या कर ली है। पता नहीं वे उसे क्यों मारते हैं पर कुछ दिनों बाद उसकी आत्मा भटकने लगती थी।

वह उन सबको परेशान करती जितनों का उसे मारने में हाथ था, उसका पति व सास तथा ननद राधा।

कुछ समय बाद उसके पति ने दूसरी शादी कर ली, तो तारा की आत्मा उसे भी तंग करती थी। वह डर से घर छोड़ भाग जाती है। फिर वह कुछ समय बाद फिर शादी कर लेता है और तारा की आत्मा के डर से घर व गाँव से बाहर रहने लगता है। अचानक से राकु का देहान्त हो जाता है। कहते हैं कि उसकी आत्मा ही उसे अपने साथ ले गई, और उसकी सास भी परेशान रहती थी तथा उसने राधा को भी डरा-डरा कर पागल कर दिया था। राधा के भी दो बेटे व बेटियाँ थी। इनका लालन-पालन इनकी दादी ही करती है।

वे राधा का इलाज कराते हैं पर राधा फिर भी ठीक नहीं होती है। पागलों की जैसी हरकत करने के कारण राधा को ससुराल से निकाल दिया जाता है और वह अपने मायके के गाँव में पागल बनी घूमती रहती थी। जिससे उसकी माँ सुनीता बहुत परेशान रहती थी। कहते हैं कि आज भी तारा की आत्मा को शान्ति नहीं मिली और वह गाँव में भटकती रहती है।

अर्थात् हमें इस कहानी से ये सीख मिलती है कि इंसान कितना भी गलत क्यों ना हो उसमें कितनी भी बुराई क्यों ना हो। उसे जान से मारकर, हमें कानून को हाथ में नहीं लेना चाहिए। मानव हत्या जैसे घिनौने अपराध करने से बचना चाहिए।

❖❖❖

# संयम से हो समस्या का समाधान

● कु. रचना गड़िया
बी.ए. प्रथम वर्ष

एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के साथ जंगल से गुजर रहे थे। तेज धूप होने की वजह से वह आराम करने के लिए रुक गये। उन्हें काफी तेज प्यास लगी थी। उन्होंने एक शिष्य से पानी लाने के लिए कहा। शिष्य पानी लाने के लिए चला गया। उसे एक झील दिखी। जैसे ही वह झील से पानी लेने लगा, वहाँ से कुछ जानवर दौड़कर भागने लगे। इससे झील का पानी गंदा हो गया। पानी के तले में बैठा सारा कीचड़ ऊपर आ गया। शिष्य बिना पानी लिए ही लौट आया।

उसने अपने गुरू से कहा कि झील का पानी साफ नहीं है। मैं कहीं और से पानी लेकर आता हूँ। बुद्ध ने उसे उसी झील का पानी लाने का कहा। शिष्य वहाँ दोबारा गया, लेकिन खाली हाथ लौट आया। उन्होंने उसे फिर भेजा। जब शिष्य वहाँ पहुँचा, तो झील बिल्कुल स्वच्छ और शांत थी। उसने पानी लिया और गुरु के पास पहुँचा। महात्मा बुद्ध ने उसे समझाते हुए कहा- कि यही स्थिति हमारे मन की होती है। जीवन की दौड़ भाग मन को विक्षुब्ध कर देती है। यदि कोई शांति से उसे बैठा देखता रहे, तो सारा कीचड़ अपने आप नीचे बैठ जाता है। सहज निर्मलता का आगमन हो जाता है। संयम के साथ विचार करने पर किसी भी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

**ज्ञानी वह है, जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे।**

-विनोबा भावे

**खुद वो बदलाव बनिए जो दुनिया में आप देखना चाहते हैं।**

-महात्मा गाँधी

**पंखुड़ियां तोड़ कर आप फूल की खूबसूरती नहीं इकट्ठा करते।**

-रवीन्द्र नाथ टैगोर

# जिन्दगी की आठ सीढ़ियाँ

● **कु. इन्द्रा अरोरा**
बी. ए. तृतीय वर्ष

जीते तो सभी हैं, पर सुकून भरा जीवन कितने लोग जीते हैं। यह सोचने की बात है। हर दिन वही भागदौड़, वही तनाव... जिन्दगी में खुशियाँ रूठती चली जाती हैं। लेकिन आठ सीढ़ियाँ हैं जिन पर चलकर आप मंजिल पा सकते हैं। सुकून महसूस कर सकते हैं और सबसे बड़ी बात है कि हमेशा खुश रह सकते हैं।

**1- जब मिले आत्मविश्वास का साथ:-** भले ही आपके पास कितनी ही डिग्रियाँ एवं योग्यताऐं क्यों न हों, यदि आप के पास आत्मविश्वास नहीं है तो सब बेकार है। आत्मविश्वास आपका जीवन ही नहीं बनाता बल्कि आपके व्यक्तित्व को दोगुना बल भी देता है।

**2- अपना नजरिया बदलें:-** आप का चीजों को देखने का नजरिया आपके जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करता है। जैसा हमारा नजरिया होता है वैसी ही हमारी सोच बनती है। किसी विषय पर संकुचित एवं छोटी सोच से हमेशा निराशा ही हाथ लगती है।

**3- जरूरी है भावनाओं का संतुलन:-** मेंटल (मस्तिष्क) भावना (दिल) स्पिरिचुअल (विश्वास) और फिजिकल (बॉडी) जीवन के चार आधार हैं। जिनका हमारे जीवन पर सबसे ज्यादा असर रहता है। अगर इन चारों में बैलेंस है या इन पर आपका नियंत्रण है तो आप अपने जीवन को बेहतर तरीके से जी पाऐंगे।

**4- क्षण में जीऐं:-** इंसान का ठीक से न जी पाने का कारण उसका वर्तमान में न जीना। हम जब बीते हुए कल में जीते हैं। या आने वाले कल की चिंता करते हैं। अतीत को बदलने में लगे रहते हैं या फिर भविष्य को जानने में लगे रहते हैं।

बीता हुआ कल वापस नहीं आ सकता और भविष्य में कुछ भी निश्चित नहीं है। आज आपका है और यही वास्तविक भी है। इसलिए आज में जीऐं।

**5- सकारात्मक सोच विकसित करें:-** साइकोलॉजिस्ट भी मानते हैं, कि Positive thinking से रास्ते की मुश्किलें हल हो या न हो, मन में तनाव जरूर कम हो जाता है। एक शोध के अनुसार, सकारात्मक सोचने वालों की उम्र भी अधिक होती है। कुल मिलाकर, सकारात्मक सोच वाले की उम्र भी अधिक होती है। सकारात्मक सोच 'Happy Long Life' की कुंजी है।

**6- खुद को स्वीकारें:-** अगर आप अपने प्रति ईमानदार हैं। अगर हाँ, तो आप जैसे हैं वैसे ही खुद को स्वीकारें। किसी की नकल या किसी के जैसा बनने का प्रयास न करें अपने आप से प्रेम करें और निर्णय अपनी पूरी सामर्थ्य और समझदारी से लें।

**7- बदलाव से घबराना कैसा:-** मानसिक रुप से मजबूत लोग किसी भी नई शुरुआत का स्वागत करते हैं। बदलाव से डरते नहीं हैं। उनको डर एक जगह बने रहने से लगता है। बदलाव उन्हें कार्य करने की ऊर्जा देता है।

**8- लक्ष्य बनाऐं:-** हमेशा आप लक्ष्य निर्धारित करें। छोटे-छोटे बनायें। उन्हें पूरा करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दें, लेकिन लक्ष्य निर्धारित करने से पहले तीन चीजों का ध्यान रखें। (1) वे वास्तविक हों। (2) प्राप्त करने योग्य हों (3) उनके लिए समय निर्धारित करें।

❖❖❖

## प्रेरक कहानी

● **कु. इन्द्रा अरोरा**
बी. ए. तृतीय वर्ष

एक सुनार था। उसकी दुकान से मिली हुई एक लोहार की दुकान थी। सुनार जब काम करता तो उसकी दुकान से बहुत धीमी आवाज आती थी। पर जब लोहार काम करता तो उसकी दुकान से कान फाड़ देने वाली आवाज सुनाई देती। एक दिन एक सोने का कण छिटक कर लोहार की दुकान में आ गिरा वहाँ उसकी भेंट लोहे के एक कण से हुई। सोने के कण ने लोहे के कण से पूछा भाई हम दोनों का दु:ख एक समान है। हम दोनों को एक ही समान आग में तपाया जाता है। समान रूप से हथौड़े की चोट सहनी पड़ती है। मैं ये यातना चुपचाप सहता हूँ पर तुम बहुत चिल्लाते हो क्यों ? लोहे के कण ने मन भारी करते हुए कहा तुम्हारा कहना सही है, किन्तु तुम पर चोट करने वाला हथौड़ा तुम्हारा सगा भाई नहीं है। मुझ पर चोट करने वाला लोहे का हथौड़ा मेरा सगा भाई है। परायों की अपेक्षा अपनों द्वारा दी गई चोट अधिक पीड़ा पहुँचाती है।

# प्रतिभा की पहचान

● कु. अल्पना
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

एक बार यूनान के थ्रेस प्रांत में एक निर्धन बालक लकड़ियाँ बेच रहा था। उसने जंगल से लकड़ियाँ काटी थीं और उन्हें गट्ठर में बांधकर बाजार में लाया। उधर से गुजर रहे एक सज्जन ने उसके गट्ठर को देखा, तो हैरान रह गए। उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा था कि एक अनपढ़ व गरीब बालक ने इतने कलात्मक ढंग से गट्ठर कैसे तैयार किया है? उन्होंने सोचा कि जरूर इसके माँ-बाप ने इसे गट्ठर दिया होगा। उनसे रहा नहीं गया, उन्होंने बालक से पूछा, ''क्या यह गट्ठर तुमने खुद बांधा है?'' बालक ने जवाब दिया, हाँ मैं रोज जंगल से लकड़ियाँ काटता हूँ और खुद गट्ठर बांधता हूँ।'' उस व्यक्ति ने बालक को गट्ठर खोलकर फिर से बांधने को कहा। बालक ने देखते ही देखते गट्ठर खोला और उसी कलात्मक ढंग से बांध दिया। बालक की तत्परता व लगन देखकर सज्जन बेहद प्रभावित हुए। उन्होंने उससे पूछा, ''क्या तुम मेरे साथ चलोगे? मैं तुम्हें पढ़ाऊंगा। मैंने तुम्हारे भीतर अद्‌भुत प्रतिभा देखी है।'' बालक समझ नहीं पा रहा था कि इस व्यक्ति पर यकीन किया जाए या नहीं। हालांकि, उसे पढ़ने का बहुत शौक था। आखिरकार वह घर वालों की सहमति लेकर उस सज्जन के साथ चला गया। सज्जन ने उसकी शिक्षा का पूरा प्रबंध किया। कुछ ही समय में उस बालक ने अपनी मेहनत व कुशाग्र बुद्धि से सबको चकित कर दिया। यह बालक और कोई नहीं यूनान का महान दार्शनिक पाइथागोरस था और उसे इस मुकाम तक पहुँचाने वाले सज्जन यूनान के प्रख्यात तत्वज्ञानी डेमोक्रिट्स थे।

**''जब अपने से छोटा भूखा हो तो बड़े को भी खाने से पहले दो बार सोचना चाहिए।''**

-सुकरात

# बेटी की मन की व्यथा

● अशोक कुमार आर्य

.....

आज बारिशों से कह दो कि अपनी बूंदों से कह दो
और इश्क की किताब का कोई नया राग खोलो।

आज एक बेटी रोई थी, और मैंने उसकी एक दास्तान लिखीं
आज लाखों बेटियां रो रही हैं, और बारिश की बूंद मुझ से कह रही हैं।

ये अंधेरा और उजाला, ये शाम और सवेरा,
वो इंतजार था जिसका, ये उसका शहर तो नहीं।

ये वो शहर तो नहीं कि जिसकी आरजू लेकर चले थे।
मिल जाएंगे वो कहीं ना कहीं, कभी ना कभी
जिसको उसे तलाश है, ये वो तलाश तो नहीं।

ये वो तलाश तो नहीं और इसी तलाश में उन बेटियों को
इस बारिश की बूंदों का पल खास तो नहीं।

और खास तो नहीं कवि को उन बेटियों की मन की
व्यथा का सच होना क्या खास तो नहीं।।

❖❖❖

**चापलूसी करने वाला तुम्हें मूर्ख बनाकर तुम्हारा समय भी नष्ट करता है और बुद्धि भी।**

-चाणक्य

***

**आदमी का कामयाब या नाकाम होना ताकत पर नहीं लगन और सोच पर निर्भर होता है।**

- नेल्सन मंडेला

(एक)

## बादल और माही

● डॉ. सुनील कुमार
हिन्दी विभाग

बादल गरज रहा है, बड़े जोर से
माही डरता है
घबराता है
मां उसे उस हक़ीकत से सामना कराती है
बेटा ये बादल जो गरज रहा है
गरज कर पानी में ढलता है
फिर यही पानी ढलानों पर बह कर
नदियों, तालाबों से गुज़र कर
गहरे समुंदर तक पहुंचता है
कभी बीच में ही भाप बन कर उड़ जाता है
विशाल आकाश की ओर
और फिर से बादल बन जाता है
बस बेटा यही जीवन है
इस काले घने बादल का
ऐसे बादलों से क्या डर
निडर होकर इनका सामना कर।

(दो)

## सौ सुनार की, एक लोहार की

अभी लोहा तू गल
आग में तप कर
पिघल-पिघल
आकार में ढल
घन की चोट पर निखर-निखर
खून पसीना एक कर
तेज़ धारदार
हथियार बन
दरिंदो को लहूलुहान कर
आज तेज़ धार की
जय-जयकार कर
सौ सुनार की, एक लोहार की कर

(तीन)

## न्याय की परिभाषा

इरादन हत्या
कैसे देखते-देखते
गैर इरादन हो गई
प्राथमिकी लिखे जाने तक
हत्या शब्द हादसा में परिवर्तित कर दिया जाता है
लोकतांत्रिक देश में
हादसे पर न्याय कहां
मिलता है बस मुआवजा

(चार)

## फिर परमाणु युद्ध

परमाणु ढेर पर बैठी दुनियां
कैसी भूल कर बैठी दुनियां
सनकी हाथ में
गई जो सत्ता
नेस्तनाबूद होगी दुनियां
चिथड़े-चिथड़े उड़ेगा इंसान
रक्त की जो बहेगी नदियां
जमीं बनेगी जब श्मशान
फ़िर मातम कौन करे
जब खंडहर में बदलेगी दुनियां
कैसी भूल कर बैठी दुनियां

(पांच)

## यूक्रेन और रूस युद्ध

हर युद्ध का विजेता लौटता है
लाशों के ढेर से गुजर कर
लहू से सने कदमों के साथ
अपनी आत्मा को कुचल कर
लहूलुहान होकर
हर युद्ध कलिंग होता है
'अशोक' नहीं होता हर विजेता
जो करुणा की धारा में बह कर
आत्मजयी होकर
शरणागत धम्म हो गया।

# पिता की याद आई

● **अशोक कुमार आर्य**
बी.ए. प्रथम वर्ष

इश्क के अफसानों पर तो बहुत लिखा।
पर आज पिता की याद आई।

पड़ोस में देखा जब मैंने एक छोटा बच्चा।
अपने पिता को झकझोर कर रो रहा था।
लिपट गया था अपने पिता से।
और रोते-रोते बोल रहा था।

मैं देख रहा था ये अफसाना आंखों से आंसू मेरे भी आए।
इसी बीच रोते-रोते मुझे पिता की याद बहुत आई।

पापा देखे थे अंदर से ये लड़का क्या कर बैठा।
लिखते-लिखते, धीमे-धीमे आंसुओं की बारिश क्यों कर बैठा।

पापा अंदर से बाहर आए।
बोले क्या हुआ बेटे।
यू तुम लिखते-लिखते अचानक रो पड़े क्यों बेटे।

मैं बोला कुछ ना पापा आंख में कचरा आया।
पानी डालूंगा आंखों में चिंता ना करो पापा।
मैं सरपट अंदर भागा पानी लेकर बाहर आया।
फिर आंखों में डाला।
मुस्कुराकर अशोक ने ये पूरा किस्सा लिख डाला।

❖❖❖

# नन्हीं चीटी

● **कु. रंजना फर्स्वाण**
बी.ए. प्रथम वर्ष

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दिवारों पर बार-बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

दुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर एक-बार-नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है। इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।
कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

❖❖❖

***सत्य और न्याय का समर्थन मनुष्यता की सभ्यता और सज्जनता का अंग है।***

*– प्रेमचन्द*

# बेटी से बहू का सफर

● कु. रोशनी जोशी
बी.ए. तृतीय वर्ष

सभी अपने से लगते थे कभी मुझे,
शायद कोई भी ना पराया था।
बेटी बनकर राज किया था मैंने भी,
और अनगिनत सपनें सजोएं थे।

नादान थी उम्र खुशियों के साथ,
माँ-बाप ने मुझे पैरों पर खड़ा किया।
सपनों का मतलब सिखा दिया और,
उड़ान देकर उनको बहुत बड़ा किया।

कौन कहता है वक्त एक-सा होता है,
उम्र का दौर बड़ा ही बेहिसाब हैं
बेटियां तो बनी हैं पराये नाम पर,
जहाँ शादी सबसे बड़ा रिवाज है।
बेटी से बहू बनने चल पड़ी मैं,
और सभी सपनों का कत्ल हुआ।

बस कुछ इस तरह से ही समझो,
जिंदगी का नया सफर शुरू हुआ।
रिश्तों में नई-नई जिम्मेदारियाँ आयी,
सपनों को नये मोड़ पर लाना था।

किस्मत एक नया रंग लेकर आयी,
पर सब समझौते का बहाना था।
घरवाले ही कहने लगे अब कुछ यूँ ,
बहू का घर से बाहर जाना सही नहीं।

संदूकों में कैद है वो कागज के टुकड़े,
जिनमें बसाये जिंदगी के सारे सपने थे।
बेटी बनी ही थी मैं कन्यादान के लिए,
बहू बना दिया गया बलिदान के लिए।

खुद का अस्तित्व आज तक मिला नही,
और हंसकर कहती हूँ कि कोई गिला नहीं।
कि कोई गिला नहीं।

❖❖❖

# कबीरदास जी के दोहे

● कु. रोशनी जोशी
बी.ए. तृतीय वर्ष

**1- गुरू गोविन्द दोनों खड़े काके लागु पाए।**
**बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो मिलाय।।**

अर्थ- कबीर दास जी कहते हैं कि मेरे सम्मुख गुरु और ईश्वर दोनों खड़े हैं और मैं इस दुविधा में हूँ कि पहले किसके चरण स्पर्श करूँ। लेकिन इस स्थिति में पहले गुरु के चरण स्पर्श करना ही उचित है क्योंकि गुरु ने ही ईश्वर तक जाने का मार्ग बताया है।

**2- अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।**
**अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।**

अर्थ- कबीर दास जी का कहना है जिस प्रकार ना तो अधिक वर्षा होना अच्छी बात है और ना ही अधिक धूप उसी प्रकार जीवन में ना तो ज्यादा बोलना अच्छा है ना ही अधिक चुप रहना ठीक है।

**3- यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।**
**सीस दिए जो गुर मिलै, तो भी सस्सा जान।।**

अर्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि यह शरीर विष से भरा हुआ है और गुरु अमृत की खान है। यदि आपको अपना सिर अर्पण करके भी सच्चा गुरु मिलता है, तो भी यह सौदा बहुत सस्ता है।

**4- लम्बा तारग, दूहर घर, विकट पंथ बहु मार।**
**कहौ संतो क्यों पाइये, दुर्लभ हरी-दीदार।।**

अर्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि घर बहुत दूर है और वहां का रास्ता बहुत लम्बा तथा अत्यंत कठिन है जिसमें अनेक प्रकार के ठग हैं। हे संतों आप ही बताइये कि परमात्मा का दुर्लभ दर्शन कैसे प्राप्त हो सकता है।

**5- मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।**
**तेरा तुझको सौंपता, क्या लागे है मोर।**

अर्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि मुझमें मेरा कुछ भी नहीं है, जो कुछ है वो सब तेरा (परमात्मा का) है। यदि परमात्मा का परमात्मा को सौंप दिया जाये तो मेरा क्या है। भाव यह है कि मनुष्य अपने अहंकार में हमेशा मेरा-मेरा करता रहता है जबकि उसका कुछ भी नहीं हैं। सब उस परमात्मा का है।

❖❖❖

# जिन्दगी का सफर

● कु. संतोषी
बी.ए. तृतीय वर्ष

मुसाफिर बन बैठा हूँ इस जिन्दगी का
अकेला चलने लगा हूँ इस जिन्दगी के सफर में

थोड़ा-थोड़ा जिन्दगी की गहराईयों को समझने लगा हूँ
क्योंकि कुछ इस तरह से जिन्दगी जी रहा हूँ

जहाँ सबके सफर में तो साथ हूँ
पर खुद के सफर में अकेला खड़ा हूँ

कह देने भर से जिन्दगी जी नहीं जाती
जिन्दगी के हालातों से बढ़ना पड़ता है।

कुछ हद से ज्यादा उम्मीद कर बैठा हूँ इस जिन्दगी से
अब मुसाफिर बन ही बैठा है तो
कुछ अल्फाज है हमारे

कहा जाए अगर जिन्दगी के हकीकत के बारे में
तो इसका मुसाफिर बनो

जो कुछ भी नहीं होता है, उसे बहुत कुछ बना देती है
मंजिल मिले ना मिले, फिर भी सफर तय करना है

इस जिन्दगी का क्योंकि सुना है
कि अकेला सफर दुनियाँ की हकीकत बनाती है
और इश्क मुसाफिर बनाती है।

❖❖❖

**खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।**

-स्वामी विवेकानन्द

# क्या है बड़ी दी?

● कु. पूजा
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर

संयुक्त परिवार की बड़ी बेटी है बड़ी दी।
माँ की बड़ी बेटी है, बड़ी दी।
पापा की बड़ी बेटी है, बड़ी दी।
भाइयों व बहनों की बड़ी बहन है, बड़ी दी।

दादा-दादी की बड़ी पोती है, बड़ी दी।
ताऊ-ताई की बड़ी बेटी है, बड़ी दी।
चाचा-चाची की बड़ी बेटी है, बड़ी दी।
इन सब का प्रेम और विश्वास है, बड़ी दी।

छोटों को अच्छी सीख है सिखाती।
गलती करने पर बहुत है, डाँट लगाती।
कुछ गलत करने पर खुद भी।
बहुत है डाँट पाती।

छोटों को प्रेमता का पाठ पढ़ाती।
सब के साथ प्रेम से है, रहती।
बड़ों का आदर है, करती।
विनम्रता से छोटों के साथ है, रहती।

बड़ों से मिले अच्छे संस्कारों को।
छोटों को भी प्यार से है, सिखाती।
सब के साथ मिलजुल कर रहती।
छोटों को भी मिलजुल कर रहना, सिखाती।

अपनी जिम्मेदारियों से पीछे नहीं हटती।
बड़ी दी, होने का पूरा फर्ज है, निभाती।
क्या ऐसी ही होती है, बड़ी दी।
काश मेरी भी होती ऐसी ही, बड़ी दी।

❖❖❖

# मेरी माँ

● कु. अल्पना
बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर

अपनी सारी खुशियाँ हम पर लुटा देती हो
माँ तुम इतना सब कुछ कैसे कर लेती हो।
जब-जब भी ये तकदीर दगा देती है
माँ की मुस्कुराहट उम्मीद जगा देती है।

मेरे हौसले को उड़ान तुम देती हो
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो।
दूर जब भी तुमसे होती हूँ माँ
सच कहूँ तो अकेले में रोती हूँ माँ।

मेरी हर ख्वाहिश तुम पूरी कर देती हो
माँ तुम इतना सब कैसे कर लेती हो।
सच की राह पर चलना सिखाया है हमको
जीने का मतलब बताया है हमको।

जीवन की अनमोल बातें सिखा देती हो
माँ तुम इतना सब कुछ कैसे करती हो।
मेरे दु:खी होने से तकलीफ तुम्हें ज्यादा होती है।
मेरे खुश होने से खुशी तुम्हें ज्यादा होती है।

❖❖❖

**आत्म विश्वास और सामर्थ्य ही आपकी सफलता के अमर दीप हैं।**

– सुकरात

**अपनी भूलों को मानना ही मानव की महानता का द्योतक है।**

–गौतम बुद्ध

# बेरोजगारी

● दीपक सिंह बिष्ट
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

जिन्दगी करती गई यूँ Skip मुझे,
जैसे मैं youtube का अनचाहा प्यार तो नहीं।

लोग करने लगे हैं कुछ यूँ Ignore मुझे,
कहीं में दीवार में गढ़ा कील तो नहीं।

लोगों ने जब चाहा निकाल दिया,
बेकीमत सिक्के की तरह उछाल दिया।
लोगों ने कैलेंण्डर तो बहुत बदल दिए,
पर उस कील को नजर अन्दाज कर गए।

अब तो कभी-कभी समझ नहीं आता,
मैं waste और Busy, PUB G हूँ।

हूँ मैं Subway suffer का चोर,
जिसे भगा रहा है, जिन्दगी का शोर।

अब शोर हो भी क्यों ना,
बेरोजगार को ताने तो सब सुनाएंगे।
अपने तो सुनाएंगे ही,
पर पड़ोस वाले सुनाकर भी खुश हो जाएंगे।

फिर कभी ख्याल आता है कि,

सरकारी नौकरी लगने का अब इंतजार मत कीजिए,
Over age हो जाएंगे, अब कोई स्वरोजगार कीजिए।
कभी Exam कभी Result तो कभी Joining का,
सिर्फ इंतजार है, नौकरियों में इसे अब परिहार कीजिए।

ये जान लीजिए कि कोई भी धंधा छोटा नहीं होता,
सरकार भी कहती है, बेगार से अच्छा रोजगार कीजिए।

❖❖❖

# मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़! ....

● कु. उर्मिला
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।
कभी नहीं जो तज सकते हैं, अपना न्यायोचित अधिकार,
कभी नही जो सह सकते हैं, शीश नवाकर अत्याचार।
एक अकेले हो, या उनके साथ खड़ी हो भारी भीड़,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

निर्भय होकर घोषित करते, जो अपने उदगार विचार,
जिनकी जिह्वा पर होता है उनके अंतर का अंगार।
नहीं, जिन्हें चुप कर सकती है, आतताइयों की शमशीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

नहीं झुका करते जो दुनिया से करने को समझौता,
ऊँचे से ऊँचे सपनों को देते रहते जो न्योता।
दूर देखती जिनकी पैनी आँख, भविष्यत का तम चीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

जो अपने कन्धों से पर्वत से बढ़ - टक्कर लेते हैं,
पथ की बाधाओं को जिनके पाँव चुनौती देते हैं।
जिनको बाँध नहीं सकती है लोहे की बेड़ी जंजीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

जो चलते हैं अपने छप्पर के ऊपर लूका धर कर,
हर जीत का सौदा करते जो प्राणों की बाजी पर।
कूद उदधि में नहीं पलट कर जो फिर ताका करते तीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

जिनको यह अवकाश नहीं है, देखे कब तारे अनुकूल,
जिनको यह परवाह नहीं है, कब तक भद्रा कब दिक्शूल।
जिनके हाथों की चाबुक से चलती है, उनकी तकदीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

तुम हो कौन, कहो जो मुझसे सही-गलत पथ लो तो जान,
सोच-सोच कर पूछ कर बोलो, कब चलता तूफान।
सत्पथ वह है, जिस पर अपनी छाती ताने जाते वीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।

❖❖❖

महिला दिवस पर विशेष –

# क्यों?

● कु. रचना गड़िया
बी.ए. द्वितीय वर्ष

क्यों इस दुनिया की भीड़ में अक्सर बिखर जाती हूँ,
क्यों इतनी स्ट्रांग होते हुए भी मैं डर जाती हूँ।
क्यों अचानक चलते-चलते लगता है, कि कई नजरें घूर रही हैं,
क्यों मुड़कर देखती हूँ और सन्नाटा भी जी जोड़ देता है।
अरे! लड़की हूँ शो पीस नहीं, यूँ घूरना बंद करो,
टांगे हैं हर किसी की तरह यूँ जज करना बंद करो।
सिर्फ किचन में खाना बनाना नहीं आता,
प्रजेन्टेशन भी देती हूँ।
अरे कभी पूछकर तो देखो अन्दर से क्या महसूस करती हूँ,
हाँ शायद ज्यादा रोती हूँ, ज्यादा इमोशनल हूँ।
पर ये कमजोरी नहीं ताकत है मेरी,
हर किसी के बस की बात नहीं।
क्यों बचपन में खिलौनों के नाम पर,
किचन के बर्तन थमा दिए जाते हैं।
क्यों फरारी और बाइक के ट्राई मॉउल भाई के पास ही जाते हैं
स्टीयरिंग तो दो हाथ में पूरी दुनिया घुमा दूंगी,
बाइक क्या चीज है, हवाई जहाज उड़ा दूंगी।
शिक्षा मेरी भी उतनी महत्वपूर्ण है,
जितनी कि तुम्हारे बेटे की समाज में।
स्पेशल राइज का टैग लगाकर तो उसे भी नहीं भेजा था भगवान ने
अगर तुम्हारा नाम वो आगे बढ़ाता है तो बदनाम मुझसे कैसे हो।
अगर पराया धन ही समझा है तो क्यों रोकते हो,
क्यों बचपन से ही मन में ये डर डाल दिया जाता है।
कि घर से मत निकलो बाहर अकेले दस बार समझा दिया जाता है
पर गलत तो वो भी नहीं, माँ बाप हैं,
बाहर निर्भया और उन्नाव जैसे हालत हैं।
मत जकड़ों जंजीरों में हमें खुले आसमान में रहने दो,
चैन की साँस ले सके, हमें भी एक जहान दो।
कोई मूरत नहीं हूं मैं मेरे अंदर भी जज्बात हैं,
काश! मैं भी एक दिन वो चैन की साँस ले पाती।
आज समाचार में कोई ऐसी हैडलाइन नहीं,
वो एहसास ले सकूं।

❖❖❖

# हसीन लम्हें

● कु. लीला
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

जियूं इन हसीन लम्हों को,
मौका फिर जाने मिलें या ना।
अहा! क्या खूब नजारे हैं,
क्या खूब बहारें हैं।
झूम लूं यहां जी भर कर,
मौका फिर जाने मिले या ना।
मंजिले आसान दिखती हैं यहाँ,
राह भर फूलों की सुगंध,
ये भी पल यही बीत जाने दो।
मौका फिर जाने मिले या ना,
विभा पटल पर बिखरी है,
भोर ऐसी फिर जाने हो या ना।

# कविता

नई बिधाएँ दिशाएं गगन में झूम
कर इतराती हैं।
नव सृजन का यह उल्लाश बनकर
माटी सींचती जाने कितनी ही
कोंपलें नव जीवन की
नव-सृजन की यह उदेष्णा।
कितने ही रंग बनकर बिखरेंगे
संजोए जाने कितने ही ख्वाब
परफुल्लित होंगे।

पौरुष और प्रकृति का अनूठा
यह मिलन है
कुछ और नहीं यह ही नव
सृजन है।
कितना भी परिपूर्ण ही यह
संसार होगा
नव सृजन हो तभी यह संपन्न होगा।

❖❖❖

# भ्रूण हत्या

● कु. उर्मिला
बी.ए. द्वितीय वर्ष

एक माँ की कहानी कहाँ से होगी?
ममता की निशानी कहाँ से होगी?
गर्भ में हो रही जिस भ्रूण की हत्या
वह जगत जननी कहाँ से होगी?
गर्भस्थ कन्या की वह व्यथा,
विकल हो गयी ममता सारी,
कन्या भ्रूण हत्या की ये, देखो फैल रही कैसी महामारी
बेटे की चाहत के जज्बात, देश में घट रहा है लिंगानुपात
पूज्य थी नारी जहां,
क्यों कोख में ही मारी जा रही है वहाँ?
गर्भस्थ बेटी कर रही पुकार,
बन्द करो भ्रूण हत्या, अत्याचार
मत मारो मुझे गर्भ में ही बापू-माँ,
बिन बेटी दुनिया सोचो होगी क्या?
कुलदीपक आयेगा, कुल को आगे बढ़ायेगा
जब नारी ही मिट जायेगी जहाँ से,
तो कुलदीपक कहां से आयेगा?
जिस पर है दुनिया थमी हुई, क्यों उस पर है हिस्सा लदी हुई
जग में आने की आस थी, दुनिया को पाने की चाह थी
पर उस माँ ने छोड़ दिया, ममतामयी श्रृंखला को तोड़ दिया।
कन्या भ्रूण हत्या से हो रहे हैं जीवन तबाह
नहीं चल पायेगा जीवन चक्र
जब नहीं होगा बिन बधु विवाह
क्यों खामोश है जब इस तरह खतम हो रही लड़कियाँ
साथियों कहीं ऐसा न हों कि
जुबान पर ही रह जायें लड़कियां
अपना ही घर बना रहा लड़कियों का शमशान
तेरी करनी पर है इन्सान!
रो रहा है आज भगवान।
संभल जाओ रे! कन्या भ्रूण के हत्यारे
वरना एक दिन कयामत आयेगी
अगर अब भी न संभले, तुम्हारे कदम तो दुनिया
वीरान हो जायेगी।

❖❖❖

# जीवन का लक्ष्य

● कु. दीपा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

जीवन में एक लक्ष्य बनाना,
आगे-आगे बढ़ते जाना।
कांटों पर भी चलना सीखो,
फूलों जैसा खिलना सीखो।

आगे चलकर कुछ कर दिखाना है,
माँ-बाप का नाम रोशन कर।
दुनियां में नाम कमाना है,
मेहनत हमको करनी होगी।

हर एक मंजिल अपनी होगी,
दहेज रूपी दानव को, समाज से हटाना है।
भ्रूण हत्या के कारण, समाज को समझाना है,
लड़कियां नहीं होगी, समाज कैसे बढ़ेगा।

बंद हो जाए दहेज, सोचना हमें होगा,
लड़कियों को जनम से पहले।
क्यों मार दिया जाता है,
वहीं आगे चलकर दुनियां में नाम कमाती हैं।

हम सबको यह अहसास दिलाना होगा,
लड़का-लड़की एक समान।
मत करो इतना अत्याचार क्योंकि,
यही भविष्य की है पहचान।

घर-घर में यहीं गूँज सुनानी होगी,
फिर एक मंजिल पानी होगी।
शिक्षा से कभी न भटकना,
कभी न करना इसका गलत प्रयोग।

शिक्षा ही भविष्य की पहचान है,
और यही एक मंजिल है और इसे,
ही प्राप्त कर हमें आगे बढ़ना है।

❖❖❖

# एक बेटी

● दया कृष्ण
बी.ए. प्रथम वर्ष

एक बेटी पैदा होते ही मर जाती है,
कुछ बड़ी होते ही जिम्मेदारियों तले दब जाती है।
एक समय बाद घरवालों का बोझ बन जाती है,
समस्याओं से वह पत्र लिख भी नहीं पाती है।
वह आश क्या लगाए किसी से,
इस प्रकार वह लाचार हो जाती है।
एक बेटी.....

वह रो जाती है,
वह बड़ी सहम जाती है।
वह अन्दर ही अन्दर अपना दु:ख छुपा जाती है,
वह अपना स्वाभिमान भी खत्म कर जाती है।
और अंत में डोली में बैठकर वह ससुराल भी चली जाती है।
सच बताऊ तो एक बेटी.....

उसका दहेज के लिए शोषण किया जाता है।
वह अनेकों प्रकार से भी प्रताड़ित होती रहती है
वह ससुराल में भी खुश नहीं रह पाती है।
और वह खिलती कली अपना पूरा जीवन
संघर्ष में ही बिता जाती है।
एक बेटी.....

❖❖❖

**आपकी कीमत इसमें है कि आप क्या हैं, इसमें नहीं कि आपके पास क्या है।**

-Thomas Alva Edison

***

**उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।**

-स्वामी विवेकानन्द

# मेरा सलाम

● **कु. बबली**
बी.ए. प्रथम वर्ष

सलाम है उनको जिन्होंने वीर सपूतों को जन्म दिया
सलाम है उनको जिन्होंने वीर सपूतों व जवानों को
लाड़ प्यार कर बड़ा किया।

नमन है मेरा उन बहनों को जिन्होंने अपनी राखी को
बेनाम होने दिया।

उन वीर जवानों को सलाम है मेरा जिन्होंने देश के लिए
सीने पर गोली खाई मरते दम तक दुश्मनों से लड़ते रहे।

नमन है मेरा उन माता-पिता को जिन्होंने सीने
पर पत्थर रखकर उन जवानों को विदा किया

मेरा सतत् प्रणाम जवानों को हम भारत माता के वीर सपूत
मातृ शक्ति के अग्रदूत हैं हम तो बन्दूकों में दुश्मनों का
अनजाम लिए फिरते।

हम तो मुट्ठी में अपनी जानें लिए फिरते हैं।

❖❖❖

# तुम चलो तो सही

● **कु. एकता जोशी**
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

राह में मुश्किल होगी हजार
तुम दो कदम बढ़ाओ तो सही
हो जाएगा हर सपना साकार
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

मुश्किल है पर इतना भी नहीं
कि तू कर ना सकें
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं
कि तू पा ना सके
तुम चलो तो सही

एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा
तुम्हारा भी सत्कार होगा
तुम कुछ लिखो तो सही
तुम कुछ आग पढ़ो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

सपनों के सागर में कब तक गोते लगाओगे
तुम एक राह चुनो तो सही
तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे
जिंदगी का अनुभव साथ ले जाओगे
गिरते पड़ते संभल जाओगे
फिर आखिर में तुम जीत ही जाओगे

तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

❖❖❖

***तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता। तुमको सब कुछ खुद अन्दर से सीखना है। आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नहीं है।***

*–स्वामी विवेकानन्द*

# शेष चुभन

● कुलदीप महर
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

चुभन बाकी रह गई....
जाने प्रेम कहाँ खो गया।
आलिंगन प्रेम का भूल
मेरा छुना उसे याद रह गया।
सिर्फ बुराइंयाँ सामने हैं....
प्रेम में समर्पण जानें कहाँ खो गया।
मौन रह गया मैं,
देख खेल भावनाओं का।
वो मलंग-सा मन जाने कहाँ खो गया,
उड़ती पतंग सी जिन्दगी थी...
जाने कब वो डोर थाम गया
मैं सूखा पत्ता सा गिर पड़ा...
जाने कब वो मौसम सा बदल गया
शेष चुभन रह गई
जाने प्रेम कहाँ खो गया...

# सब कुछ आपका है

आसमान का सपना देखने वालों
इस जमीं का जिम्मा आपका है।
बुझाकर दिया अंधेरा देखा
अब रोशनी का जिम्मा, आपका है।
दर्द पर लतीफे पढ़ने वालो
अगला पन्ना, आपका है
बारिश के तूफान में ओले पड़े
खेत-खलिहान, किसान का है
बची धान सरकारें खाएं
सड़क पर किसान, आपका है।
शहर की आग के पीछे तेज हवा
अब अगला गांव, आपका है
मैं बिखरा तो वो टूटा
आगे उनसे रिश्ता, आपका है।
पेड़ कटा हवा जहरीली हुई
ये कुदरत का तोहफा, आपका है।
कुछ चले गए, कुछ जाने वाले हैं
अब सिर्फ इंतजार आपका है।

❖❖❖

# कन्या भ्रूण हत्या

● कु. ममता बिष्ट
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

मां-बाप की आँखों का नूर है तू,
हर अपने के दिल का गुरूर है तू।
जाने क्यों तरस आता है मुझे इस जमाने के कमीनेपन पर
कि सब होकर भी कितनी मजबूर है तू।

जाने क्यू ये दुनिया तुझसे इतना जलती है।
माँ-बीबी तो सबको चाहिए पर बेटी से डरती है।
हर वक्त ये दुनिया तुझसे दुश्मनी निभाती है।
खिलने से पहले तुझे मसल देना चाहती है।

क्यूं नहीं समझते ये पागल कि तुझसे ही दुनिया गुलजार है।
किसी मासूम की मासूमियत में किसी दिवाने का खुमार है।

ऐ-खुदा कर रहम इनपे देख इनकी बेरूखी।
क्यों नहीं समझते ये इक मासूम की बेबसी।

क्यूं छीनता है ये हक जो तूने इन्हें बक्सा है।
उनका ये अनमोल जीवन क्या इतना ही सस्ता है।

❖❖❖

## महात्मा गाँधी के विचार

**आपकी मान्यताएं आपके विचार बन जाते हैं,**
**आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं,**
**आपके शब्द आपके कार्य बन जाते हैं,**
**आपके कार्य आपकी आदत बन जाते हैं,**
**आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं,**
**आपके मूल्य आपकी नियति बन जाती है।**

# सपना मेरा

● **प्रदीप कुमार**
एम.ए. प्रथम वर्ष

किसी कोने में पड़ा यह सपना मेरा,
मुझे तीव्र गति से विचलित करता है।
आगे क्या होगा? प्रश्न के साथ मेरी मन: स्थिति में
तूफान खड़ा करता है।
मेरी सारी उम्मीदों, विश्वासों, धैर्य, ठोकरों, जवाबों का
पुँज है यह सपना मेरा
इसीलिए मस्तिष्क में डर पैदा कर यह मुझे
अर्द्धरात्रि के समय सोने को मजबूर करता है।

माहौल बहुत कुछ शांत-सा हो चुका है।
कमरे के बाहर का मेरे
अंदर विचारों का सैलाब-सा आया हुआ है।
अपने विचारों से व्याकुल तकिये से सिर को
दबाकर लेटता हूँ
भीतर बहुत अशांति है मेरे इसीलिए कमरे के बाहर बैठकर
चाँद को देखता हूँ।

कोई तो ऐसी चीज हो जो इस चाँद की तरह
मेरे भीतर प्रकाश फैलाये
सोचता हूँ काश कोई तो ऐसा विचार हो
जो मेरे भीतर शीतलता लाये।
सपने की चिंता के कारण ये आँखें अब तक जगी हैं।
पुन: सपने की सुखद कल्पना कर मुझे अब
नींद-सी आने लगी है।

❖❖❖

# मेरा बचपन

● **कु. साक्षी बिष्ट**
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

वो बचपन याद आता है।
स्कूल न जाने का बहाना और
जाने पर घण्टों आँसू बहाना
वो पेन्सिल का खो जाना और
दूसरों की रबड़ चुराना
आज याद आता है मेरा बचपन।

वो जरा सी बात पर झगड़ना और
गलतियों पर थप्पड़ पड़ना
वो धूप में मिट्टी से खेलना और
घर आकर मार खाना
आज याद आता है, मेरा बचपन।

वो सहेलियों के साथ गुड़िया, गुड़ियों से खेलना।
और रस्सी कूद, कबड्डी और दौड़ना
कभी-कभी दोस्तों के साथ मेला जाना और
जलेबी और आइसक्रीम खाना
आज याद आता है, मेरा बचपन
आज याद आता है, मेरा बचपन।

❖❖❖

**व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित प्राणी है। वह जो सोचता है वही बन जाता है।**
**खुद को पाने का सबसे अच्छा तरीका है दूसरों की सेवा में खुद हो खो देना**
**मौन सबसे सशक्त भाषण है, इसलिए मौन रहिए**
**धीरे-धीरे पूरी दुनिया आपको सुनेगी।**

-महात्मा गाँधी

# संस्कृत अनुभाग

# संस्कृत–भाषाया महत्त्वम्

● कु. सीमा
बी.ए. प्रथम वर्ष

संस्कृतं पुरा भारतीयानां लोकप्रिया जनभाषा आसीत्। कामं तत्स्याल्लोक-भाषा केवलं शिष्टानामेव यथा आर.जी. भाण्डारकर आह 'न संस्कृतवैयाकरणाः स्वबुद्धयाऽऽविष्कारमात्रामुमस्थापयाञ्चक्रुर्निजग्रन्थेषु'। रामायणमहाभारतकाले संस्कृतं जनभाषारूपेण प्रचलित - मासीत्। वाल्मीकिरिमां गिरं मानुषीति नाम्ना निर्दिशति।

पतञ्जलिर्महाभाष्ये स्फुटं निर्दिशति यत् व्याकरणं न शब्दानुत्पादयति तत्तु केवलं शब्दापशब्दौ विवेचयति। यथा कश्चिन्मनुष्यो घटार्थं कुम्भकारं प्रार्थयते - 'घटं मे कुरू' इति। न तथा लोको व्याकरणज्ञं गच्छति - 'शब्दं मे कुरू प्रयोक्ष्ये इति प्रार्थयितुम।' महाभाष्ये वयं वैयाकरण - सूतयोर्मध्ये प्राजितृशब्दमुद्दिश्य संस्कृतगिरि विवादं श्रृणुमः।

संस्कृतमेवाधुनिक-प्रान्तीयभाषाणामेक-जननी अस्ति। सर्वास्वपि भारतीयासु बंगाल-उडिया-मराठी-गुजराती-पंजाबी-हिन्दी-प्रभृतिषु प्रान्तीय-भाषासु आन्ध्रतामिलमलयालम - कन्नडादिषु चार्येतरभारतीयभाषासु प्रतिशतकषष्ठिशब्दाः संस्कृतभाषाया एव सन्ति। एवं संस्कृतमेव प्रान्तीय भाषासु जीवनं संचारयितुं प्रभवति साम्प्रतम्। अस्या ज्ञानादेव प्रान्तीय भाषाणां सम्यग् ज्ञानं भवितुमर्हति।

अधुना हिन्दी - भाषा मन्ये राष्ट्र भाषा एव सञ्जाता। संस्कृतस्य शब्दाकोशो विशालः सम्पन्नश्चास्ति। संस्कृतमेव एकमात्रं हिन्दीभाषां समृद्धां सम्पन्नाञ्च कर्त्तुं प्रभवति। यतो जननी स्तनन्धयां स्वपुत्रीं लालयति पालयति च।

संस्कृतस्य व्याकरणमप्यप्रतिममस्ति। अस्य व्याकरणस्य शब्द - रचनाशक्तिरपूर्वाऽऽस्ते। यथा आङ्गलभाषा लेटिनतः शब्दानङ्गीकृत्याऽऽत्मानं भरति, तथैव हिन्दी - भाषाऽपि संस्कृतभाषायाः शब्दान् गृहीत्वा निजशब्दाक्षराणि प्रवर्धनेनात्मानं सम्पन्नासमृद्धां च कर्त्तुं पारयति।

भाषाविज्ञानस्य सम्यग् ज्ञानार्थं संस्कृतस्य ज्ञानमनिवार्यम्। अतः भाषाविज्ञानदृष्ट्याऽपि संस्कृतमद्यं महत्वपूर्ण स्थानमधितिष्ठति।

समालोचनाशास्त्रस्यापि सम्यग् विवेचनं संस्कृतस्य ज्ञानं बिना को नु कर्त्तुं शक्नोति? भारतीय पुरातत्त्वविद्यार्थिने तु संस्कृतस्य ज्ञानमनिवार्यं वर्तते। यतः प्राचीनाः शिलालेखाः संस्कृते लिखिताः सन्ति। प्राच्य-भारोपीयभाषाणां परिशीलनाय सम्यगध्ययनाय संस्कृत - भाषापरिज्ञानमनिवार्यम्।

साहित्यदृष्ट्यापि इयं भाषा समृद्धा सम्पन्ना चास्ति।

संस्कृतभाषाया इदमन्यद् गुरुतरं वैशिष्ट्यमस्ति, यदस्यामेकस्य शब्दस्यानेकेः समानार्थाः सन्ति। इदं वैशिष्टयं नहि अन्यत्र दृश्यते। अस्य व्याकरणमप्यनुपमम्। नहि केवलमस्मदीया धर्मग्रन्थाः संस्कृते लिखिताः सन्ति, अपितु जैनानामपि ग्रन्थानां बाहुल्यतः संस्कृतभाषायामेवास्ते। बौद्धा अपि पालीभाषाया मोहं परित्यज्य संस्कृतमन्वसरन्। विदेशेष्वप्यस्या महान्प्रचारः पुरा आसीत्। जावा, यवद्वीप, सुमात्रा, बकुलद्वीप - सुवर्णद्वीप, बलिद्वीप, कम्बुज-ब्रहमदेश, प्रभृतिषु सुदूरपूर्वदेशेषु संस्कृतस्य सार्वत्रिकः प्रचारः आसीत्। चम्पानिवासिनो रामायणमहाभारत - कौटिल्य - अर्थशास्त्र - नारदीयधर्मशास्त्र-भारतीय - दर्शनप्रभृतिभिः सम्यक्पुरा परिचिता आसन्। एतेषा देशानां शिलालेखा अप्यस्मदीयकथनस्य अनुत्तमानि प्रमाणानि सन्ति।

**एवं संस्कृतभाषाया महत्वं सर्वैर्विदितम्**
**''जयतु संस्कृतम्'' ''जयतु भारतम्''**

❖❖❖

**इमं लोकं मातृभक्त्या पितृभक्त्या तु मध्यमम्। गुरुशुश्रूषया त्वेवं ब्रह्मलोकं समश्नुते॥**

**अर्थात्**- मनुष्य अपनी माता की सेवा से भूलोक को, और पिता की सेवा से स्वर्ग लोक को, तथा गुरू की भक्ति सेवा से विष्णु लोक को प्राप्त होता है।

# नीतिवचनाभूषणानि

● कु. गायत्री
बी.ए. प्रथम वर्ष

**१ ) अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।**
**ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रञ्जयति।**
(नीतिशतकम्-3)

**अर्थात्**- जो कुछ नहीं जानता है उसे सरलता से समझाया जा सकता है, तथा जो (सर्वज्ञ) सब कुछ जानता है वह अनायास ही सब कुछ समझता है। किन्तु जो व्यक्ति ज्ञान के अंश मात्र को ग्रहण कर अपने को विद्वान समझता है उसे सृष्टिकर्ता ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते, अर्थात् वही वास्तविक मूर्ख है।

**२ ) दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाभूषितोऽपि सन्।**
**मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः?**
(नीतिशतकम्-53)

**अर्थात्**- विद्या से युक्त होने पर भी दुष्ट व्यक्ति को त्याग देना चाहिए। क्या मणि से विभूषित सर्प भयङ्कर नहीं होता है?

**३ ) साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।**
**तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥**
(नीतिशतकम्-12)

**अर्थात्**- One who does't know literature music and other fine arts is evidently a best but lacking only so far as he has not got tail and horns.

**४ ) विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं**
**विद्या भोगकरी यशः सुखकरी, विद्या गुरूणां गुरूः।**
**विद्या बन्धुजनो विदेशगमने, विद्या परं दैवतं,**
**विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं, विद्याविहीनः पशुः॥**
(नीतिशतकम्-20)

**अर्थात्**- Here is one greater Ornament namely knowledge. This is an internal and hidden Knowledge - treasure. It producs comforts fame and pleasures. It is a preceptor of preceptors, when one is in unknown lands it is in vidye or knowledge that has got a relation vidya is the supreme deity. Among kings knowledge alone is honored and not wealth. there fore one who is destitute of learning should be considered a beast.

❖❖❖

# गीतासूक्ति – मौक्तिकम्

● कु. ईशा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

**१ ) अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।**
**गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः॥**
(गीता 2/11)

**अर्थात्**- हे अर्जुन! तुम शोक न करने योग्य मनुष्यों के लिए शोक कर रहे हो और बुद्धिमान की भांति वचन बोल रहे हो। किन्तु जिनके प्राण चले गये हैं और जिनके प्राण नहीं गये हैं, बुद्धिमानजन किसी के लिए भी शोक नहीं करते।

**२ ) कर्मण्येवाधिकारकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**
**मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोत्स्वकर्मणि॥**
(गीता 2/17)

**अर्थात्**- हे अर्जुन तुम्हारा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। अतः तुम कर्मों के फल का कारण न हो, तथा कर्म करने में भी तुम्हारी आसक्ति न हो।

**३ ) क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।**
**स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥**
(गीता 2.63)

**अर्थात्**- क्रोध करने से सम्मोह उत्पन्न हो जाता है। उससे स्मृति भ्रमित हो जाती है। स्मृति भ्रम होने से बुद्धिनाश अर्थात् ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि विनष्ट होने से मनुष्य अपने स्तर व स्थिति से पतित हो जाता है।

**४ ) प्रसादे सर्वदुखानां हानिरस्योपजायते।**
**प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥**

**अर्थात्**- अन्तःकरण की प्रसन्नता होने पर इसके समस्त दुःखों का अभाव हो जाता है, और उस प्रसन्न चितवाले कर्मयोगी की बुद्धि शीघ्र ही सब ओर से हटकर परमात्म तत्व में भलीभाँति स्थिर हो जाती है।

❖❖❖

# संस्कृत–गीतम्
# रे चटक!

● कु. लीला
बी.ए. तृतीय वर्ष

**१- चटक, चटक रे चटक!**
**चिवँ् - चिवँ् कूजसि त्वं विहगे।**
**नीडे निवससि सुखेन डपसे**
**खादसि फलानि मधुराणि।**
**विहरसि विमले विपुले गगने**
**नास्ति जनो खलु वारयिता॥**

- अरे चिड़िया! तुम चूं-चूं करती हुई आकाश में कूजती हो। तुम घोंसले में निवास करती हो और सुख पूर्वक उड़ती हो, मीठे-मीठे फल खाती हो और स्वच्छ तथा विशाल आसमान में विचरण करती हो। जहाँ से तुम्हें हटाने वाला कोई भी नहीं है।

**२- मातापितराविह मम न स्तः,**
**एकाकी खलु खिन्नोऽहम्।**
**एहि समीपं चिवँ्-चिवँ् मित्र,**
**ददामि तुभ्यं बहुधान्यम्॥**

- मेरे माता-पिता अभी घर पर नहीं हैं और मैं अकेली खिन्न हो रही हूं। हे मित्र चिड़िया! चूं-चूं करती हुई मेरे पास आओ। मैं तुम्हें बहुत सारा अनाज देती हूँ।

**३- चणकं स्वीकुरु पिब रे नीरं**
**त्वं पुनरपि रट चिवँ् - चिवँ् - चिवँ्।**
**तोषय मां कुरू मधुरालापं**
**पाठय मामपि तव भाषाम्॥**

- तुम चने खाकर पानी पिओ और फिर चूं-चूं करती रहो। अपने इस मधुर आलाप से मुझे प्रसन्न करो और मुझे भी अपनी सुन्दर भाषा का ज्ञान कराओ।

❖❖❖

# एहि हसामः अहं चितः अस्मि

● कु. बबली
बी.ए. प्रथम वर्ष

कश्चन सन्दर्शनार्थं गतः। सन्दर्शकः उक्तवान्- ''अहं कानिचन पदानि वदामि। तेषां विरूद्धार्थक-पदानि वक्तव्यानि भवता।''

''अस्तु'' इति अङ्गीकारं सूचितवान् अभ्यर्थी।
''कोपः''- सन्दर्शकः उक्तवान्।
''शान्तता''।
''धनिकः''
''निर्धनः''
(प्रशंसाभावेन) ''साधुः''
''असाधुः''
(कोपेन) ''रे मूर्ख''
(शान्ततया) ''श्रीमन् बुद्धिमान्''
''अलम् । गच्छतु।''
''अपर्याप्तम् । उपविशतु।''
(कोपेन) ''उत्तिष्ठतु रे!''
''उपविशतु श्रीमन्।''
''निर्गच्छतु इतः।''
''आगच्छतु ततः।''

- भवान् उद्योगार्थम् अयोग्यः।

- अहमेव उद्योगार्थम् चितः।

अनुवाद- कोई व्यक्ति साक्षात्कार के लिए गया। साक्षात्कर्त्ता ने उससे कहा कि मैं कुछ शब्दों को बोलता हूँ। तुम उसके विलोम शब्द बोलना। उसने ठीक है ऐसा कहकर स्वीकार किया।

| | | |
|---|---|---|
| साक्षात्कर्त्ता ने कहा | - | क्रोध |
| अभ्यर्थी | - | शान्त |
| साक्षात्कर्त्ता ने कहा | - | धनवान |
| अभ्यर्थी | - | निर्धन |

इतना सुनकर वह साक्षात्कर्त्ता खुश हुआ और अभ्यर्थी की प्रशंसा करते हुए बोला (बहुत सुन्दर)।

अभ्यर्थी विलोम शब्द बोला - बहुत बेकार

(इस पर साक्षात्कर्त्ता को क्रोध आया) - अरे मूर्ख।

अभ्यर्थी - श्रीमान् बुद्धिमान

साक्षात्कर्त्ता - ठीक है। जाओ

अभ्यर्थी - कुछ भी ठीक नहीं है बैठो

(साक्षात्कर्त्ता क्रोध में) - खड़ा उठ

अभ्यर्थी - बैठो श्रीमान

साक्षात्कर्त्ता - चले जा यहाँ से

अभ्यर्थी - आ जाओ यहाँ पर

साक्षात्कर्त्ता - तुम इस नौकरी के योग्य नहीं हो।

अभ्यर्थी - मैं इस नौकरी के योग्य हूँ।

❖❖❖

# अर्धोरुकम् एव सीवयतु

भीमः सौचिकसमीपं गत्वा पृष्टवान् - ''मम उरुकं सीवयितुं धनं कियत् दातव्यम्?'' इति।

तदा सौचिकः - ''षष्टि (60-00) रुप्यकाणि'' इति उक्तवान्।

एतत् श्रुत्वा भीमः पृष्टवान् - ''अर्धोरुकस्य सीवनमूल्यं कियत्? इति।

तदा सौचिकः उक्तवान् ''विंशतिः (20-00) रूप्यकाणि'' इति।

एतत् श्रुत्वा भीमः - तर्हि मम अर्धोरूकम् एव सीवयतु। किन्तु तस्यपादः दीर्घः भवतु इति।

**अनुवाद**- भीम दर्जी के पास जाकर पूछता है- मेरी पैन्ट सिलाई करो।

कितने पैसे देने होंगे।

दर्जी - 60 (साठ) रुपये।

भीम - हाफ पैण्ट की सिलाई कितनी है?

दर्जी - 20 रुपये।

(कुछ विचार करके) भीम ने कहा - तो फिर मेरे लिए हाफ पैण्ट ही सिलना, किन्तु उसके पैर (पतलून) की लम्बाई पैण्ट के बराबर ही कर देना।

❖❖❖

**कार्यार्थी भजते लोकं यावत्कार्यम् न सिध्यति। उत्तीर्णे च परे पारे नौकायां किं प्रयोजनम्।।**

**अर्थात्**- जब तक काम पूरे नही होते हैं तब तक लोक दूसरों की प्रशंसा करते हैं। काम पूरा होने के बाद लोग दूसरे व्यक्ति को भूल लाते हैं। ठीक उसी तरह जैसे नदी पार करने के बाद नाम का कोई उपयोग नहीं रह जाता है।

***

**अपि मेरुसमं प्राज्ञमपि शूरमपि स्थिरम्। तृणीकरोति तृष्णैका निमेषेण नरोत्तमम्।।**

**अर्थात्**- भले ही कोई व्यक्ति मेरु पर्वत की तरह स्थिर, चतुर बहादुर दिमाग का हो, लालच उसे पल भर में घास की तरह खत्म कर सकता है।

***

**मूर्खा यत्र न पूज्यन्ते धान्यं यत्र सुसञ्चितम्। दाम्पत्यो कलहो नास्ति तत्र श्रीः स्वयमागता।।**

**अर्थात्**- जहाँ पर मूर्खो की पूजा नहीं होती (अर्थात् उनकी सलाह नहीं मानी जाती), धान्य को भलीभाँति संचित करके रखा जाता है और पति पत्नी के मध्य कलह नहीं होता वहाँ लक्ष्मी स्वयं आ जाती है।

# English Section

# Digital Addiction: Time to Detox

● **Dr. Lalit Joshi**
HOD, Poltical Science

Digital addiction as (DA) define as "Digital addiction denotes a problematic relation to the technology described by being compulsive,obsessive, impulsive and hasty" In order to explain what digital addiction is, it is important to define an addictive behaviour. Addiction according to cash (2012) begins to take hold when we do it too much, the brain is forced to withdrawn Neuro-receptors in an effort to restore balance, especially when we no longer get the high from the same level of activity or drug use. Digital addict is colloquially used to describe a person whose interaction with technology is verging on excessive.

**Categories of Digital Addiction**

The following categories listed by Gandolfi (2010) are-

1- **Information Overload:** Too much online surfing leads to decreased productivity at work and fewer interactions with family members.

2- **Compulsive Addiction:** Excessive time spent on the phone or in online activities such as gaming, trading of stocks, gambling and even auctions often leads to overspending and problems at work.

3- **Cybersex Addictions:** Too much surfing of pornsite often affects real life relationships.

4- **Cyber Relationship Addiction:** Excessive use of social networking sites to create relationships rather than spending time with family may destroy real life relationships.

5- **Virtual Addiction**

6- **Internet Addiction**

7- **Online Solicitation**

**Signs of Trouble : If you...**

1- Check your phone or laptop in the middle of the night.

2- Are willing to sacrifies sleep, work, food or relationship for more screen time.

3- Feel stressed, angry or depressed when you are denied access to a screen.

4- Cant attend offline experiences without posting about them online.

5- Spend more than eight hours a day on a screen.

6- have your phone impacting your job or academic performance.

**How to break a Digital Addiction**

1- Turn off push notifications. Disable pop-up alerts to stop your phone from interrupting you.

2- Schedule times to check your phone, or at least be mindful about it.

3- Use a timer to block your usage.

4- Replace smartphone use with something you value like going for a walk, reading a book etc.

5- Don't take your phone to bed because it can cut into sleeping hours.

6- Set expectations around email response times.

7- Find activities outside as you can take part in games, volunteering programmes, civic groups and spend your quality time.

**Conclusion**

Using these tips can be proven very beneficial, when you are willing to get yourself out of this mess. To avoid falling into internet addiction again and again, make sure you know how to control yourself once you realise that you are getting addicted to it. Keeping your eyes and mind open is a good way of staying alert and healthy. Use these tips and make sure to follow them regularly.

❖❖❖

## The Life is Beautiful

**Dr. Jamashed Ansari**
(Department of English)

This life is beautiful;
If you can make it beautiful.
Every tune is of Love,
If you can sing from the heart.

The moon and the stars are also all yours;
If you can bring it to the ground by pluking it with the sky.
This life is beautiful,
If you can make it beautiful.

Every single season is the spring of love;
If you can bloom the flowers of spring, even in the sky.
This life is beautiful,
If you can make it beautiful.

The beautiful destination of our love is near;
If you can burn the lamp of heart in the path of the loyalty.
This life is beautiful,
If you can make it beautiful.

# Mathematics as a Tool for Happiness

● **Kuldeep Joshi**
(Department of Mathematics)

In day to day life we are getting angry, having stress. Fighting with our old veliefs, having ego, coming under the influences of superttions, having greed, getting frustrated if our actions don't meet the desires, putting ourself in a bad mood if events are not going in our favour, feeling jealous of others, seeking the chances to take revenge, hate to something or somebody. So with the help of Mathematics, we can remove maximum number of negativie emotions and can always keep us happy.

There are certain things which we have to bring into our consciousness daily.

- The expected value of feeling of our body is always positive whenever availability approaches to meet the desire.
- Make self image as an increasing function of age.
- Keep always the ration of our desire to our need which satisfy us very close to one.
- Think that the provability of uncertain negative events always zero and of certain positive events is one.
- The rate of rejecting past negative beliefs with respect to time must be greater than or equal the rate of acceptance any positive new veliefs.
- Due to different past beliefs and expereicnes, there is always assymmetry in thinking pattern of our brain and other's brain for the same event.
- What we get from somebody is directly proportional to what we have about somebody.
- Don't expect those things from others which are in our domain.
- If things are not going our way so think that it is the shortest path which take shortest time to reach our goals.
- Whatever we achieved is the decimal percent of which someone has already achieved.

❖❖❖

# The Shakespearean Theatre

● **Km. Ritika**
(B.A. III year)

Before Shakespeare's time and during his boyhood, group of actors. Performed whereever they could in halls, courts, courtyards, and any other open spaces, available. However, in 1574, when Shakespeare was ten years old, the common council passed in Londan to be licenced, In 1576 actor and future lord Chamberlian's Man, James Burbage, built the first permanent theatre, called "The Theatre", outside London City walls. After this many more theaters were established, including the Globe Theater.

Elizabethan theatres were generally built after the design of the orignal theatre. Built of wood, these theaters comprised three tiers of seats in a circular shape, with a stage area on one side of the circle. The audiences seat and part of the stage were roofed, but much of the main stage and the area in front of the main satage in the center of the circle were open to the elements.

In Shakespeare's time, a stage wasn't just one type of space; play had to be versatile. The same play might be produced in an outdoor play house, an indoor theater, a royal palace or, far a company on tour, the courtyard of an inn.

In any of these settings, men and boys played all the characters, male and female; acting in Renaissance England was an exclusivelly male profession. Audiences had their favorite performers, looked forward to hearing music with the productions, and relished the luxurious costumes of the leading characters. The stage itself was relatively bare. Far the most part, play wrights used vivid words instead of scenery to picture the scene onstage.

**Stage and Screen after Shakespeare-**

In 1642, the English playhouses and theater were closed down (and often dismantled for building materials) as the English civil war began, with the restruction of the English Monarchy in 1660, theatre returned- as did Shakespeare's Plays, now with both male and female performers. The first recorded performance of an actress occured in December 1660. although were not sure of her name; She appeared as Desdemona in Othello.

Shakespeare's works have also been frequently intepreted on film. Brooklyn's Vitagraph Company, far one, produced several silent. One-reel movies of the plays starting in 1908.

Since then, literally hundreds of Shakespeare films- Including works like Baz Luhrmann's Romeo and Juliet (1996) - have appered, opening a new cinematic stage for Shakespear's words.

❖❖❖

# Shelley's Major Poetic Works

● **Km. Deveshwari Rawat**
(B.A. II year)

**1. Queen Mab (1813)**

Its is a long narrative poem, immature in its poetic quality but fully expressive of his rebellious spirit against all authority. It was produced in 1813, when the poet was hardly twenty years old. The poem is clearly immature and contain much of Shelley's cruder atheism. It represents that sate of Shelley's mind for which he was expelled from oxford university and treated with contempt by his father. The poem is an attack on dogmatic relegion, government, industrial tyranny and war. the poem, in fact, is the poet's outcry against the unsprited force that weighs down humanity.

**2. Alstor or The Sprit of Solitude (1816)**

It is Shelley's spritual autobiography in an allegorical from. It is remarkable for its lyrical clement and imagery. It deplicts the predicament of a utopian, the discomfiture of a visionary. " It is the revolt of the imagination against the imitations of human life.

In this poem the chief character, a shadowy projection of Shelley's own moods, travel through a wilderness quest of the ideal beauty. The Poem is long, rather obscure and formless and is remembered chiefly for its lyrical passages and striking typically Shellyan imagery". The poem represent the wanderings of Shelley an a traveller (Shelley Himself) in search of ideal beauty.

**3. The Prometheus Unbound (1818-19, Published in 1820)**

The Prometheus Unbound again a revolutionery work, is a lyrical drama. It enshrines the universal regeneration of mankind, when liberty, love justice and brotherhood will prevail throughout the world. In the Greek Hero, Prometheus, Shelley find the model of a revolutionary, "Friend of Humanity". Prometheus, chained and tortured by Jupiter, an evil tyrant, refuses to yield. At the appointed hour Jupiter is overthrown by Demagargon and Prometheus is emancipated. The drama celebrates the overthrown of tyranny and the emancipation of humanity from the bondages of slavery and injustice.

**4. The Cenci (1819)**

The Cenci, which was written in Leghorn in the autumn of 1819, was intended for the theatre, but though it contains a few scenes of dramatic power and of an intensity almost websterian, it has never proved to be suited to the stage. The conflict presented between good and evil bears an obvious resemblance to Prometheus. This Work is a drama dealing with a gruesome family affair. The play vibrates with passion. It is marked by an oustere atmosphere and an undeviating thread of tragedy. It bears an influence of Shakespeare.

**5. Adonais (1822)**

It is a pastoral elegy, written on the death of John Keats, and published in the year 1822, a few months before Shelley's own death. It is written in Spenserian stanza, and represents Shelley's admiration of Keats. The poet represents in the earlier stanzas of the elegy a number of mourners in a peculiarly Shelley an imagery. He then attacks the critics who were harsh on Keats and in the concluding part he represents Pantheistic philosophy pointing out to the immortality of the soul and the supreme power of the Almighty God permeating the universe:

*The one remains, the many change and pass;*
*Heaven's light for ever shines, earth's shadows fly;*
*Life like a dome of many-coloured glass,*
*Stains the white rediance of eternity,*
*until death tramples it to fragments.*

**6. The Triumph of Life (1822)**

In the spring of 1822 Shelley changed his residence. He and his wife began to live at Palazzo near the wild Spezzian bay. Here he wrote the splendid Triumph of Life. But he could not complete it because of his death. In this poem the familiar thaughts of Shelley's philosophy are wrought into imaginative allegory, full of drama and pathos. Life triumphs over those that are alive:

*From every form the beauty slowly waned;*
*From every firmest limb and fairest face,*
*The strength and freshness fell like dust.*

The spailers are spoiled-Voltaire, Frederick, Catherine, Lepolds the great thinkers fail to know themselves. The great conqueror, seeking to win the world, loses all.

❖❖❖

# Biography of Thomas Hardy

● **Km. Roshni Rawat**
(B.A. II Year)

Thomas Hardy, (born June 2, 1840, Higher Bockhampton, Dorset, England—died January 11, 1928, Dorchester, Dorset), English novelist and poet who set much of his work in Wessex, his name for the counties of southwestern England. Hardy was the eldest of the four children of Thomas Hardy, a stonemason and jobbing builder, and his wife, Jemima (née Hand). He grew up in an isolated cottage on the edge of open heathland. Though he was often ill as a child, his early experience of rural life, with its seasonal rhythms and oral culture, was fundamental to much of his later writing.

He spent a year at the village school at age eight and then moved on to schools in Dorchester, the nearby country town, where he received a good grounding in mathematics and Latin. In 1856 he was apprenticed to John Hicks, a local architect, and in 1862, shortly before his 22nd birthday, he moved to London and became a draftsman in the busy office of Arthur Blomfield, a leading ecclesiastical architect. Driven back to Dorset by ill health in 1867, he worked for Hicks again and then for the Weymouth architect G.R. Crickmay.

Though architecture brought Hardy both social and economic advancement, it was only in the mid-1860s that lack of funds and declining religious faith forced him to abandon his early ambitions of a university education and eventual ordination as an Anglican priest. His habits of intensive private study were then redirected toward the reading of poetry and the systematic development of his own poetic skills.

In 1867–68, he wrote the class-conscious novel **The Poor Man and the Lady,** which was sympathetically considered by three London publishers but never published. George Meredith, as a publisher's reader, advised Hardy to write a more shapely and less opinionated novel. The result was the densely plotted **Desperate Remedies** (1871), which was influenced by the contemporary "sensation" fiction of Wilkie Collins. In his next novel, however, the brief and affectionately humorous idyll Under the Greenwood Tree (1872), Hardy found a voice much more distinctively his own. In this book he evoked, within the simplest of marriage plots, an episode of social change (the displacement of a group of church musicians) that was a direct reflection of events involving his own father shortly before Hardy's own birth. In March 1870 Hardy had been sent to make an architectural assessment of the lonely and dilapidated Church of St. Juliot in Cornwall. There—in romantic circumstances later poignantly recalled in prose and verse—he first met the rector's vivacious sister-in-law, Emma Lavinia Gifford, who became his wife four years later. She actively encouraged and assisted him in his literary endeavours, and his next novel, A Pair of Blue Eyes (1873), drew heavily upon the circumstances of their courtship for its wild Cornish setting and its melodramatic story of a young woman (somewhat resembling Emma Gifford) and the two men, friends become rivals, who successively pursue, misunderstand, and fail her.

Hardy's break with architecture occurred in the summer of 1872, when he undertook to supply Tinsley's Magazine with the 11 monthly installments of A Pair of Blue Eyes—an initially risky commitment to a literary career that was soon validated by an invitation to contribute a serial to the far more prestigious Cornhill Magazine. The resulting novel, Far from the Madding Crowd (1874), introduced Wessex for the first time and made Hardy famous by its agricultural settings and its distinctive blend of humorous, melodramatic, pastoral, and tragic elements. The book is a vigorous portrayal of the beautiful and impulsive Bathsheba Everdene and her marital choices among Sergeant Troy, the dashing but irresponsible soldier; William Boldwood, the deeply obsessive farmer; and Gabriel Oak, her loyal and resourceful shepherd.

Hardy and Emma Gifford were married, against the wishes of both their families, in September 1874. At first they moved rather restlessly about, living sometimes in London, sometimes in Dorset. His record as a novelist during this period was somewhat mixed. The Hand of Ethelberta (1876), an artificial social comedy turning on versions and inversions of the British class system, was poorly received and has never been widely popular. The Return of the Native (1878), on the other hand, was increasingly admired for its powerfully evoked setting of Egdon Heath, which was based on the sombre countryside Hardy had known as a child. The novel depicts the disastrous marriage between Eustacia Vye, who yearns romantically for passionate experiences beyond the hated heath, and Clym Yeobright, the returning native, who is blinded to his wife's needs by a naively idealistic zeal for the moral improvement of Egdon's impervious inhabitants. Hardy's next works were The Trumpet-Major (1880), set in the Napoleonic period, and two more novels generally considered "minor"— A Laodicean (1881) and Two on a Tower (1882). The serious illness which hampered completion of A Laodicean decided the Hardys to move to Wimborne in 1881 and to Dorchester in 1883.

It was not easy for Hardy to establish himself as a member of the professional middle class in a town where

his humbler background was well known. He signaled his determination to stay by accepting an appointment as a local magistrate and by designing and building Max Gate, the house just outside Dorchester in which he lived until his death. Hardy's novel The Mayor of Casterbridge (1886) incorporates recognizable details of Dorchester's history and topography. The busy market-town of Casterbridge becomes the setting for a tragic struggle, at once economic and deeply personal, between the powerful but unstable Michael Henchard, who has risen from workman to mayor by sheer natural energy, and the more shrewdly calculating Donald Farfrae, who starts out in Casterbridge as Henchard's protégé but ultimately dispossesses him of everything that he had once owned and loved. In Hardy's next novel, **The Woodlanders** (1887), socioeconomic issues again become central as the permutations of sexual advance and retreat are played out among the very trees from which the characters make their living, and Giles Winterborne's loss of livelihood is integrally bound up with his loss of Grace Melbury and, finally, of life itself.

**Wessex Tales** (1888) was the first collection of the short stories that Hardy had long been publishing in magazines. His subsequent short-story collections are **A Group of Noble Dames** (1891), **Life's Little Ironies** (1894), and A Changed Man (1913). Hardy's short novel **The Well-Beloved** (serialized 1892, revised for volume publication 1897) displays a hostility to marriage that was related to increasing frictions within his own marriage.

❖❖❖

# Othello

● **Km. Indra Arora**
(B.A. III year)

Othello was written about 1604, through it was not published untill 1622. It portrays the growth of unjustified jealousy in the noble protagonist, Othello a 'Moor' serving as a general in the Venetian army. The innocent object of his jealousy is his wife Desdemona. In this domestic tragedy, Othello's evil lieutenant logo draws him into mistake jealousy in order to rain him. Othello is destroyed partly through his gullibility and willingness to trust lago and partly through the manipulations of his villain who clearly enjoys the exercise of evil doing just as he hates the spectacle of goodness and happiness around him. At the end of the play, Othello comes to understand his terrible error; but as always in tragedy that knowledge comes too late and he dies by his own hand in atonement for his error. In his final act of self-destruction, he becomes again and far a final time the defender of Venice and Venetian values.

❖❖❖

# The Renaissance (1485-1649)

● **Km. Roshni Joshi**
(B.A. III year)

Renaissance means re-birth. From about 1500 to 1600 the world was reborn in many ways. The Renaissance began in Italy, especially in art and architecture, in the fifteenth century. As England became the most powerful nation in Europe in the late sixteenth century, new worlds were discovered and new ways of seeing and thinking developed. Columbus discovered America in 1492, Copernicus and Galileo made important discoveries about the stars and planets, Ferdinand Magellan sailed all round the world. The Renaissance was worldwide.

The literary decline after chaucer's death was due to considerable measure to political reasons. The distute about the throne, which culminated in the war of Roses, dissipated the energy and resources of the country and finally destroyed in large measure the noble families. The art and literature depended on their patronage. The accession of Henry VII in 1485 brought about a period of quiet and recovery Henry VII established a strong monarchy and restored social and poltical order.

He curtailed the powers and privileges of barons and patronised the new rich class. The country resumed its power among European nation and began through them to feel the simulus of the Renaissance.

Caxton's Press which was established in 1476 in London was the earliest forerunner of Renaissance in England.

Rickett remarks: The Renaissance had come with Caxton?

It began in London with the publication of English masterpieces that awakened a sense of their national life in the minds of the people.

King Henry VIII, who acceded to the throne of England in 1509 began an era of significant and purposeful changes. He ruled in the spirit of modern statecraft. He encouraged trade and manufacturers and increased the decline of feudalism by allowing men of low birth to high position.

Thus the court became the feild for the display of individual ambition.

Men of telent and learning found honourable place in his court. During his reign England contributed her part to the spread of the new civilisation and new learning.

Education was popularised. Cardinal's college and Christ Church College at Oxford were founded.

❖❖❖

# Career in Chemistry after Graduation

● **Dr. Shankar Ram**
(Assistant Professor, Chemistry)

Chemistry is a fundamental part of our daily life: from the air; we breathe to the soil on which, we grow fruits and vegetables somehow associates with the wide spectrum of chemistry.

❖ **Employment Areas for the Scope of B.Sc Chemistry**

- Pharmaceutical Companies
- Healthcare Centers
- World Health Organization (WHO)
- Medical Research Institutes
- UNESCO
- Space and Astronomical Research
- Biotech Companies

❖ **Scope for Gigher Studies after B.Sc in Chemistry**

After completing their graduate degree in B.Sc chemistry, candidates have various opportunities for their higher studies. Various higher study options after B.Sc chemistry are:

- M.Sc in Organic Chemistry
- M.Sc in Inorganic Chemistry
- M.Sc in Physical Chemistry
- M.Sc in Applied Chemistry
- M.Sc in Molecular Chemistry
- M.Sc in Bio-Chemistry
- M.Sc in Matcrial Chemistry
- M.Sc in Analytical Chemistry
- M.Sc in Drug Chemistry
- M. Teach in Chemical Engineering
- M. Phil in Chemistry
- Ph. D in Chemistry
- Ph. D in Applied Chemistry
- D Phil in Chemistry

❖ **Job Positions Available for Graduates in Chemistry**

- Lab technician (Government Funded Academic Institutes)
- Data Entry Operators in Hospitals
- Junior Research Fellow (Research Institutes in India, CSIR etc.)

❖ **Career Options After B. Sc Chemistry**

There are lots of job opportunities for graduates in B.Sc chemistry both in Government and private sectors.

- Professor in Universities and Colleges
- Lab Assistant
- Scientific Data Entry Specialist
- Research and Development Manager
- Product Officer
- Production Chemist
- Water Quality Chemist
- Food and Flavor Chemist
- Toxicologist
- Quality Controller
- Lab Assistant
- Industrial Research Scientiest
- Chemical Engineer

❖❖❖

# Few Lines on Moral Values

● **Km. Rachna**
B.A I[ST] Year

1. Moral values or morality comes from a Latin word 'moralis' which means manner, characters and proper behaviours.
2. Moral values describe the ideals and principles of behaviour and it teachs about what is right and wrong.
3. The ideals and principles of moral values which we learn throughout our life in building our nature and behaviour.
4. From ancient times, our country India is well known for best moral values and practices and is regarded as a well cultured country.
5. If a person has never learned about moral values then he will not be able to differentiate between right and wrong.
6. Moral Values indicate an indivisual's character as well as his nature and behaviour.
7. Practicing moral values help us in builling good relationship personal as well as in professional life.
8. Moral values can help in ending the problems like-dishonesty, voilence, cheating, jealousy etc.

❖❖❖

# Next Generation Technology

● **Dr. Neetu Pandey**
(Assistant Professor Physics)

Technology plays an important role in the development of any society. There are two distinct way through which the relationship between technology & society can be conceived Several technological critiques have raised the spectre of technological determinition,emphasising thereby the integrate logical momentum of technology that pushes. Society to the brink of alienation and catastrophe.[1] This tear of technology allow little scape for humen agency or any passifility of societical development in productive way. On the other hand is the Framework of technological newtrality, according to which socity has complete freedem to shape technological present & future, suggesting thereby that we have consciously rejected a stict adherence to both technological determinition & technological newtrality. Instead an appropriate method or way to be found between there for transforming emering technology to the society.

The world has dematically charged over the last two year due to COVID - 19 pandemic, impacting every corner of life.

The new technologies have shown their important to overcome the situation. Here, dissussing same future a next generation technology which can imput our life or intervention of these technology totally change the human lifes.

**(i)** **Artificial Intelligence (AI) & Machine Learneing -** The capability of a Machine to imitate intelligent human behaviour, such as visual perseption, speech recognization, decision making translator a other task.

**(ii)** **3 D Printing -** Process of machinery 3 D Solid object fram a digital model and achieved using additive process. Where an object is created by laying down sucessive layer of material.

**(iii)** **Genonics & Gene Editing -** Altering the genetic structure of living organisim.

**(iv)** **Artificial Photosynthesis -** This is used for any scheme for capturing and storing energy from sunlight in the chemical bonds of a fuel. (a solar fuel)

**(v)** **Augmented Reality & Virtual Reality -** Augemented reality add elements on your surrounding by adding digital elements to a live view. While in virtual realing is a completly immersive experience that replaces a real life envirenment with simulated one.

**(vi)** **Internet of Thing (IOT) -** In this technology every smart devices & object connected through internet. Such devices are constantly gatering & transmitting data, futher fueling by AI & mechine learing technology.

**(vii)** **Block Chain Technology -** This is super secure method for stoving, authantically & protecting data. The taking sector will be charged in future due to this technology.

**(viii)** **Lab on Chip -** This is a class of devics that integates and automates multiple laboration techiques into system to fits on a chip. This technology is helpful for healthcare services at the remote locations.

**(ix)** **Interactive Foods/ Smart Food -** Building on the concept of on demand food, the idea of interation food is allow to modify the food on consumer demand. [according to its taste & needs]. The concept is that thousand of nano capsule containting the flavour / color enhance a neutrional elements would remain derment in the food and only be released when friggered by consumer.

**(x)** **Real time - Translation -** Highly intelligent and ineractive system that will allow seamless translation of languages autonomously with reasonable time delay.

**(xi)** **Robotics -** Robotics has patential in empowering human being to work efficiently in many area like home automation, industrial autemention. Indrithial automation. health are , defince, spaces survillence etc.

Above discussed technology there are many more which patential to change human lifestyle clearically.

**Reference-**
1. Technology vision 2035 - TIFACS. Publish in year -2015
2. Google com.

❖❖❖

# Time

● **Km. Himani**
B.A IInd Year

Let me tell you this time.
When we get wores than this.
If you listen to hoslo's vision it will be a lot.
But, now we will show our passion.

It is human's nature to get down in the sea.
We will find even fatter than this reference.
It you want to fly, then even say the spirit such clouds.

When will you teach him to fly like this.
The world will seem so small, when we;
We will become a heap in this world too.
These problems will keep asking us to know.

Because, we will blow them in the wind.
This time will keep gazing at us.
It knows, we'll leave it behind.
Don't save time.
Because, time is not saved.

No one has bread for a while.
No one has time for bread.
Also flow with a lot of caurage.
We will teach you to fly these hoes too.

Learned to live in life, we will learn to live life also.
Have learned to fly in this colour stage of life.
We will take wings on happiness.
To this unsolved tale of life,
We will teach you to live happily

❖❖❖

# Don't Give Up

● **Km. Ekta Joshi**
B.SC IInd Year

Don't give up and don't give in.
it's all in the lord's hands.
no matter what your facing;
he is the one who can.

In any situation.
His grace can turn it around.
so you can be victorious;
As his love does abound.

the begining and the end he knows.
and all that's in between.
so put your total trust in him,
to him it's all foreseeh.

he knowns about your struggles,
he knowns about your pain your hardships and your sorrows
and he will help you to reigh.
So don't give up and don't give in don't give in.

don't quit before it's time.
god's grace will give your power;
to make it to the finish line,
in his way and time.

❖❖❖

# A Mother's Love

● **Km. Alpna**
B.A VI Sem.

A Mother's love is something,
That no one can explain.
It is made of deep devotion,
And of sacrifice and pain.

It is endless and unselfish,
And enduring come what may,
For nothing can destroy it,
Or take that love away.....

It is patient and forgining,
When all others are forsaking,
And it never fails or falters,
Even though the heart is breaking....

It belives beyond believing,
When the world around condemns,
And it glows with all the beauty,
Of the rarest, brightest gems...

It is for beyond defining,
It defies all explanation,
And it still remains a secret.
Like the mysteries of creation ....

# Higher Study and Career Options after B.Sc. in Zoology

**Dr. Nisha Dhoundiyal**
Zoology

Zoology is a branch of biology which specialises in study of animals both living and extinct including their anatomy and phyriology, embryology, genetics, evaluation, classification, behaviour and distribution. It provides vast areas for students who are intrested in study of animals. After compeling their graduation courses candidates can either opt for higher studies or they can search for jobs.

**Scopes for Higher Studies**

There are various higher study options available for an aspirant with B.Sc. Biology degree. Some of the important higher study options in Zoology that can be choosen by candidates includes following:-

- Master of Science in Zoology.
- Master of Science in Zoology. (Honors)
- Master of Phillosphy in Zoology.
- Master of Phillosphy in life Science.
- Master of Science in Biology
- Master of Science in Applied Zoology/Biology.
- Master of Science in Conversation Biology.
- Master of Science in Computational Biology
- Master of Science in Environmental Biology.
- Master of Science in Environmental Microbiology.
- Master of Science in Biotechnology.
- Master of Science in Biochemistry.
- Master of Science in Toxicology.
- Master of Science in Biomedical Science.
- Master of Science in Food Science.
- Master of Science in Forensic Science.
- Master of Science in Microbiology.
- Master of Science in Genetics.
- Master of Science in Molocular Biology.
- Master of Science in Virology.
- Post Graduating Diploma in Life Science.
- Post Graduating Diploma in Computational Biology.
- Post Graduating Diploma in Medical Lab Technology.
- Post Graduating Diploma in Clinical Research.

Students can also study following certificate courses after completing B.Sc. biology to improve their career scopes.

- Certificate in Dialysis Technology.
- Certificate in Medical Record Management.
- Certificate in Clinical Postoral Education.
- Certificate in Pulmonary function Testing and Polysomonography.
- Certificate Course in Radiography.
- Certificate Course in OT Technician.
- Certificate Course in ECG.
- EEG-ENMG Technician Course Certificate.
- Hospital Aids Certificate Course.
- Opthalmic Technician Course.
- Plaster Technician Certificate Course in Orthopaedies.
- Post Graduate Certificate in Health Care Administration.

**Career Scopes After B.Sc.**

There are numerous career opportunities for candidates compeling their graduation in both public and private sectors. It offers ample employment opportunities in an area such as:-

- Zoo
- Televisions/Channels.
- Aquarium.
- Veterinary Hospitals.
- Animal Clinics and Breeding Centers.
- College and Universities.
- Research Institutes.
- Wild Life Management Firms.
- Fishing and Aqua Culture.

- Pest Control Companies.
- Animal Care Taking Providers.
- Museums.
- Botanical Garden
- Conservation Organisation
- Nature Reserves
- Waste Management Firms.
- Medical Laboratory
- Food Institutes.
- Fertilizer and Chemical Plants.
- Environmental Management Firms.
- Apiculture and Sericulture Department.

**Job Positions-**

Different job positions available for graduates after B.Sc. Zoology are as follows:-

- Animal Behaviourist.
- Conservationist/Conservation Officer.
- Wildlife Educator/Biologist.
- Zoo Curator/ Zoo Officer/ Zoo Keeper.
- Animal Rehabitator.
- Forensic Experts.
- Lab Technician.
- Veterinarian.
- Environmental Consultant.
- Research Scientist.
- Marine Biologist.
- Toxicologist.
- Lecturer & Professor.
- Science Writer.
- Animal Trainer.
- Animal Breeder.
- Ecologist.
- Nutrition Specialist.
- Sustainability Officer.
- Documentary Maker.
- Clinical Business Associates
- Medical Representatives.
- Forester.
- Geneticist.

❖❖❖

# विभागीय गतिविधियाँ
# (Departmental Reports)

# हिन्दी-विभाग

1- दिनांक 14/09/2021 को हिंदी दिवस के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, कविता पाठ, लोकगीत, स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य प्रो. (डॉ0) योगेन्द्र चन्द्र सिंह जी द्वारा किया गया। हिंदी विभाग की ओर से कार्यक्रम का संचालन डॉ0 पुष्पा रानी द्वारा किया गया। डॉ0 सुनील कुमार द्वार हिंदी के इतिहास, दशा व दिशा पर प्रकाश डाला गया।

2- हिंदी विषय में परास्नातक स्तर पर वर्तमान में प्रथम सेमेस्टर में 07 तथा एम.ए. तृतीय सेमेस्टर में 14 छात्राऐं शिक्षणरत हैं। स्नातक स्तर पर बी.ए. प्रथम वर्ष 80 द्वितीय वर्ष 50 व तृतीय वर्ष में 60 छात्र/छात्राऐं शिक्षणरत हैं। वर्तमान में हिंदी विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ0 पुष्पा रानी, डॉ0 सुनील कुमार व डॉ0 सुनीता भण्डारी कार्यरत हैं।

3- 23 अक्टूबर 2021 को हिंदी विभाग की ओर से एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार शीर्षक : ''**हिंदी साहित्य दर्पण में उत्तराखण्ड**'' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसके संरक्षक प्राचार्य डॉ0 योगेन्द्र चन्द्र सिंह थे। मुख्य वक्ता (1) प्रो0 देव सिंह पोखरिया, आचार्य, हिन्दी विभाग, से0नि0 सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड (2) डॉ0 प्रीति आर्या, एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड (3) प्रो0 शम्भू दत्त पाण्डेय 'शैलेय' हिंदी विभाग, शहीद भगत सिंह, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूदपुर, उत्तराखण्ड, (4) श्री पंकज बिष्ट, हिंदी वरिष्ठ साहित्यकार, नई दिल्ली, वेबिनार की संयोजक हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ0 पुष्पा रानी, सहसंयोजक डॉ0 सुनील कुमार, हिंदी विभाग, तकनीकी सहायक डॉ0 जमशेद अंसारी अंग्रेजी विभाग व धन्यवाद ज्ञापन राजनीति विज्ञान विभागाध यक्ष डॉ0 ललित जोशी द्वारा किया गया।

**हिंदी विभाग की ओर से शिक्षण संस्थान में आयोजित कार्यक्रम** -

| क्र.सं. | कार्यक्रम का नाम | प्रतिभागियों की संख्या | | | कार्यक्रम में पुरस्कार पाने वाले छात्र/छात्राओं के नाम | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | I | II | III |
| 1. | निबंध प्रतियोगिता | 12 | 10 | 22 | प्रियंका, B.A.II Yr. | दीपा, B.A. II Yr. | कलावती, B.A. I Yr. |
| 2. | भाषण प्रतियोगिता | 08 | 08 | 16 | इन्दरा अरोड़ा, B.A.III Yr. | रिया मौर्या, B.Sc. I Yr. | अनिल कुमार, B.A. I Yr. |
| 3. | कविता पाठ | 06 | 05 | 11 | नेहा मिश्रा, B.A.III Yr. | प्रियंका, B.A. II Yr. | अशोक कुमार, B.A. I Yr. |
| 4. | लोकगीत | 09 | 09 | 18 | नेहा मिश्रा ग्रुप, B.A.III Yr. | प्रियंका ग्रुप, B.A. II Yr. | रिया मोर्या, B.Sc. I Yr. |
| 5. | स्लोगन | 09 | 09 | 18 | नेहा मिश्रा, B.A.III Yr. | पूजा, M.A. I Yr. | रोशनी, B.A. III Yr. |

# संस्कृत विभाग

राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी, संस्कृत विभाग सत्र 2019-20 में स्नातक प्रथम वर्ष में लगभग 45 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत रहे। जिनमें कि मुख्यत: लीला, सूरज, मंजू आदि छात्र-छात्राएं शैक्षणिक गतिविधियों में अहम भूमिका निभाने वाले रहे। कोरोना काल में चले ऑनलाइन शिक्षण में इन्होंने बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाई।

स्नातक तृतीय सत्रार्द्ध (B.A. 3rd Semester) में अनुमानित 50 छात्र-छात्राएं थी। जिनमें कि कंचना, नेहा, ऐश्वर्या, गोदा, कविता बहुगुणा, पंकज आदि छात्र-छात्राएं थी। इन सब में कंचना हर प्रकार के सहयोग करने में अग्रणी रही।

स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध (B.A. 6th Semester) में अनुमानित 28 छात्र-छात्राएं थी। जिनमें कि डौली, चंद्रकला, पूजा आदि मुख्य छात्राएं थीं। ऑनलाइन कक्षा के संचालन में डौली की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस वर्ष अध्यापन कार्य पूर्ण रूप से ऑनलाइन रहा तथा कोरोना संकट के बावजूद भी सभी छात्र-छात्राओं को पाठ्यक्रम भली भांति पूर्ण करवाया गया। जिसके फलस्वरूप सभी छात्र-छात्राओं ने सत्र 2019-20 को पूर्ण करने में सफलता अर्जित की।

सत्र 2020-21 में स्नातक प्रथम वर्ष में कोरोना काल की विषम परिस्थितियों के मध्य 50 नवीन छात्र-छात्राओं का प्रवेश हुआ। जिसमें कि मुख्यत: सुमन मिश्रा, दीपा, नेहा, प्रियंका, ईशा, रेखा आदि छात्राएं हैं। इनमें सुमन मिश्रा व दीपा ऑनलाइन शिक्षण में अपना सहयोग भली-भांति प्रदान करती रही।

स्नातक द्वितीय वर्ष में पढ़ने वाले छात्रों को इस वर्ष प्रोन्नत

किया गया। स्नातक षष्ठ सत्रार्द्ध में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं प्रदत्त कार्य (असाइनमेंट वर्क) करने में तथा विधिवत पढ़ने में भी कुशल रहे। कंचना, नेहा मिश्रा, गोदा आदि छात्राओं ने इस हेतु अपेक्षित सहयोग किया। इस वर्ष OMR प्रणाली पर आधारित परीक्षा होने के कारण छात्र असमंजस की स्थिति में रहे। जिसके फलस्वरूप वे उचित प्रदर्शन नहीं कर सके। किन्तु अधिकांश छात्रों ने इस वर्ष भी उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों को प्राप्त किया। नेहा मिश्रा ने महाविद्यालय के विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्तम सहयोग प्रदान किया।

सत्र 2021-22 में स्नातक प्रथम वर्ष में 50 छात्र-छात्राओं ने प्रवेश लिया। प्रवेश प्रक्रिया के दौरान हमने छात्रों की काउंसलिंग करके उन्हें उचित विषय में प्रवेश लेने हेतु सुझाव दिए। जिसमें कि मुख्यतः गायत्री, दीपा जोशी, किरन जोशी, रोशनी, दयाकृष्ण, राकेश, शंकर, ऋतु आदि छात्र-छात्राएं पठन-पाठन में अग्रणी हैं। दूरस्थ गांव वाण की निवासी होने पर भी गायत्री कक्षा में शत-प्रतिशत उपस्थित रहती हैं तथा महाविद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी पूरी भागीदारी निर्वहन करती हैं। इस वर्ष भौतिक रूप से कक्षा संचालित होने पर छात्र-छात्राओं को संपूर्ण पाठ्यक्रम अवधानपूर्वक पूर्ण कराया गया तथा अनुमानित प्रश्न-पत्रों के द्वारा होने वाली परीक्षा के लिए तैयार किया गया।

स्नातक द्वितीय वर्ष में 24 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। जिनमें कि दीपा, सुमन मिश्रा, नेहा, प्रियंका व ईशा आदि छात्राएं मुख्य रूप से पठन-पाठन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सम्मिलित रहती हैं। दीपा का प्रत्येक संस्करण में सहयोग सराहनीय है।

स्नातक तृतीय वर्ष में 23 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। जिनमें कि लीला, दीपक, सूरज, मंजू, अंजलि आदि प्रमुख हैं। कुमारी लीला जहां कक्षा-कक्षीय कार्यों में सहयोगी है, वहीं सूरज कक्षेतर कार्यों में सदैव अपनी सहभागिता प्रदान करता है। इस वर्ष अगस्त 2022 को महाविद्यालय में विश्व संस्कृत दिवस का आयोजन प्राचार्य महोदय की अध्यक्षता में सम्पन्न किया गया।

## Department of English

रा0म0 तलवाड़ी में स्नातक स्तर पर 135 छात्र/छात्राऐं अध्ययनरत् हैं। अंग्रेजी विभाग द्वारा तैयार कलैण्डर के अनुसार विभिन्न दिवसों में चर्चा-परिचर्चा का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष उल्लेखनीय रूप से 23 अक्टूबर 2021 को हिन्दी विभाग द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार शीर्षक ''**हिन्दी साहित्य दर्पण में उत्तराखण्ड**'' विषयक का आयोजन किया गया। जिसमें तकनीकी सहायक के रूप में डॉ0 जमशेद अंसारी (अंग्रेजी विभाग) द्वारा योगदान दिया गया। डॉ0 अंसारी का National Journal for Generation culture and Media Studies में एक Research Paper का प्रकाशन वर्ष 2021 में हो चुका है।

## Department of Physics

Physics department of Government Degree College Talwari, situated in lap of nature with spectacular mountain & scenery surrounded by greenry everywhere. The department established in year 1997 & running three year degree course at graduation level. In its 25 year of journey lots of student graduated in physics with this college. The department is well established & provides all the basic facilities to study physics at graduation level. At present, Dr. Neetu Pandey is leading the department with her lab assistant Mr. Hukum Singh & Lab bearer Mrs. Deepa Rawat. After joining the department by Dr. Neetu in year 2020, Contineous efforts has been made by her to improve the department. It is renovated in supervision of her last year, under Rusa funded project.

The strength of students also increases in last session which was getting low from last few years due to lack of staff & Covid-19 Pandmic.

2021-22 Session of the Physics students started with student induction/orientation programme organised by combined efforts of department of Physics & Mathmatics.

Student's participated in the programme with great enthusicum & explore their talents & learn lot of new programmes and plateforms to enhance their skill through various online scheme governed by government & private institution and ed-tech companies.

The effort has also been made by the department to enhance the communication & presentation skill of students as the students of colleges comes from rural background. In this view department organises "Presenttion Day" on every friday. The student present their presentation on given topic provided by teacher on this day. Teacher students interaction during presentation built confidence among students & motivates him to work on their weaknesses.

To Inculate scientific temperment among student demonstration based teaching opted by the teacher. Further practical based knowledge is given emphasis to create intrest in Physics.

**Achivements:-**

- Yearly results of all Physics student were 100% in last session.
- 80% Admission in B.Sc. I Year (Physics) last year

which was getting very low from last few year.

- Students of Physics participated in Model Competition on science day organised by G.D.C., Talwari and scored the second & third position in the competition.

**Staff Achivements:-**

- Participation of teacher induction/orientation programme by Dr. Neetu Pandey. Organised by HRDC-Nainital and completed with the A+ grade.
- Participated in one day online webinair, based on NEP-200 organised by HRDC-Nainital on 10 August 2021.
- Special lecture in invited lecture provided by Dr. Neetu on "Scintillation Counter" in National level Physics lecture series, organised by Shri Radhey Hari P.G. College, on 19/11/20.
- Organising secutery of National level webinar orgnised by Department of Botony (G.D.C. Talwari) on Chimate change dated on 11/10/2021
- Special lecture on "Raman Effect" provided by Dr. Neetu on science day to the students of G.D.C. Talwari.
- Special Lecture on "7 Habbits of most effective people" provided by Dr. Neetu in 7 Days's NSS Camp organised by G.D.C., Talwari.

At last but not least, Department of Physics contineuously making effort to improve its quality and quantity of students.

To achiving all the mentioned teaching related activities. the Department of Physics thanks to all college staff parents, student and expect to give their support for its contineous progress.

## Department of Zoology

Science stream of this village comprises of various principal subjects which includes zoology as well. Zoology was being provided for all first, second and third year graduating Biology students. In the academic year 2021-22, number of students enrolled in first, second and third year are 40, 35 and 27 respectively.

Department of Zoology has one spacious and well organised and equipped laboratory for carring out practical sessions. Laboratory have enough instruments and equipments to perform various experiments. University syllabus, department has also socilated with diffrent teaching aids such as models, charts, specimens and permanent charts etc.

Faculty of Zoology opted student centric methods in teaching and learning. Faculty have actively participated in completing curricula of university courses. We organised presentation program for B.Sc. first, second and third year students in which most of the students participated actively. While B.Sc. III year students has been taken to near by area of 300-500 meter so that they can explore animal diversity in localities. Which make students aware about nature.

**Faculty-**

**Teaching:** Dr. Nisha Dhoundiyal (Guest), M.Sc. Ph.D

**Non-teaching:** Mr. Dhirendra Singh Negi (Lab Assistant).

This is Dr. Nisha Dhoundiyal, Assistant Professor Zoology in Talwari Government Degree College. She was awarded with Ph.D Degree in the year 2020. My reserch specialisation is in "Phthirapteran Pararitology". My Ph.D reserch topic is "Biodiversity and prevalance of Campanulotes bidontatus compar infesing pigeons of Kumaon Regions". Meanwhile I have also studied biodiversity and prevalence of Phthirapteran ectoparasites infeshing poultry birds of Kumaon Region. During my research dissertation. I have also done a minor work on prevalence of phthiraptean species of domestic mammals. I am still exploring various aspects of diffrent phthirapteran ectoparasites infeshing domestic mammals and birds.

However, In last few years, I have published six research papers in which three are in national journals. I have also participated in three national and two international seminars and two national workshops.

## इतिहास-विभाग

इतिहास विभाग राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी चमोली में कला संकाय में स्नातक का पाठ्यक्रम संचालित करता है। इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के पश्चात छात्र विभिन्न क्षेत्रों जैसे- शिक्षण, सिविल सेवा, टूरिस्ट गाइड, संग्रहालय, अभिलेखागार, शोधार्थी आदि में उज्ज्वल भविष्य प्राप्त करने में सक्षम हैं। विभाग छात्रों को सामाजिक मुद्दों, गाँधीवादी मूल्यों, विश्व राजनीति, राष्ट्रीय आन्दोलन के आदर्शों, समाजवादी आन्दोलन, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों में परिचित कराता है। शैक्षणिक सत्र- 2021-22 में इतिहास विभाग में प्रथम वर्ष में 60 विद्यार्थी, द्वितीय वर्ष मे 32 विद्यार्थी, तृतीय वर्ष में 31 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

## अर्थशास्त्र-विभाग

अर्थशास्त्र विभाग राजकीय महाविद्यलय, तलवाड़ी चमोली में कला संकाय वर्ग में स्नातक का पाठ्यक्रम संचालित करता है। यह पाठ्यक्रम भविष्य की संभावनाओं के कारण छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय है। इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद छात्र विभिन्न क्षेत्रों जैसे बैंकिंग, डाटा विश्लेषक, शिक्षण, वित्तीय योजनाकार, आर्थिक शोधकर्त्ता, सिविल आदि में उज्ज्वल भविष्य प्राप्त करने में सक्षम हैं।

विभाग न केवल कैरियर अवसर प्रदान करता है बल्कि छात्रों को सामाजिक मुद्दों, बाजार तंत्र, देश का आर्थिक स्वरूप तथा वैश्विक मुद्दों के बारे में भी जागरूक करता है।

महाविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग की शुरुआत शैक्षणिक सत्र 2018-19 से हुई। सत्र 2020-21 में 12 विद्यार्थियों का बैच महाविद्यालय से पहली बार स्नातक की डिग्री अर्थशास्त्र विषय के साथ लेकर उत्तीर्ण हुए। शैक्षणिक सत्र 2021-22 के लिए अर्थशास्त्र विषय में स्नातक प्रथम वर्ष में 53 विद्यार्थी, द्वितीय वर्ष में 29 विद्यार्थी तथा तृतीय वर्ष में 34 विद्यार्थी नामांकित हैं। विभाग द्वारा वर्ष भर में अनेक विभागीय कार्यक्रम कराए गए जिसमें समूह चर्चा, विषय पर वाद-विवाद तथा विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में प्रस्तुतीकरण प्रमुख है। शैक्षणिक सत्र 2022-23 में विभाग के विभिन्न कार्यक्रमों हेतु विभागीय परिषद का गठन भी किया गया है जो इस प्रकार है-

1) अध्यक्ष - प्रवीण चंद
2) उपाध्यक्ष - दीक्षांत कुनियाल
3) सचिव - खिलपा दानू
4) उपसचिव - नदीम अंसारी
5) कोषाध्यक्ष - लक्ष्मी नेगी

विगत वर्षों में महाविद्यालय में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में विभाग के अनेकानेक छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। भविष्य में भी अर्थशास्त्र विभाग के समस्त छात्र-छात्राएं महाविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर प्रतिभाग करने को तत्पर हैं एवं एक शिक्षित व संतुलित समाज के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध हैं।

## राजनीति विज्ञान-विभाग

राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी में राजनीति विज्ञान विषय में वर्तमान में परास्नातक प्रथम सेमेस्टर में 08 तथा एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर में 11 छात्र-छात्राऐं एवं स्नातक स्तर पर 80 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत् हैं। राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा तैयार कलैण्डर के अनुसार विभिन्न दिवसों पर बौद्धिक चर्चा-परिचर्चा तथा गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष उल्लेखनीय रूप से 26 नवंबर को संविधान दिवस तथा 10 दिसम्बर को प्राचार्य महोदय की संरक्षता में मानवाधिकार दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ0 ललित जोशी तथा सहायक प्राध्यापक, श्री मनोज कुमार तथा सुनील कुमार के नेतृत्व में अपने विद्यार्थियों के बौद्धिक, शैक्षिक, नैतिक व सामाजिक विकास हेतु निरंतर अग्रसर हैं।

## रोवर्स एण्ड रेंजर्स

राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी में रोवर्स रेंजर्स इकाई का गठन 2021-22 में हुआ, जिसमें रोवर्स एवं रेंजर्स पंजीकृत रहे। डॉ. पुष्पा रानी के नेतृत्व एवं प्रशिक्षण में रोवर्स एण्ड रेंजर्स इकाई का गठन हुआ। इनके कुशल निर्देशन में रोवर्स रेंजर्स दल ने स्काउट गाइड इतिहास, गाँठ बंधन, प्रथम शिक्षिका सावित्री बाई फुले के जन्म दिवस पर चर्चा-परिचर्चा, नाट्य, निबंध, क्विज, समूहगान, हस्तकौशल, तम्बू निर्माण आदि प्रतियोगिताओं की उत्कृष्ट स्तर की तैयारी कराते हुए 6 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। आपदा प्रबंधन, प्राथमिक चिकित्सा, मार्च-पास्ट, वी.पी. सिक्स आदि के बारे मे प्रशिक्षित किया गया।

## Department of Mathematics

There are 28 Students Enrolled at Graduate level out of which 18,9,3 got Admitted in B.Sc. I, II, III Respectively.

Previous session result of department of Mathematics was above 90%

In session 2021-22 induction programme was organised with the joint efforts of Mathematics and Physics Department to Enhance the Scientific Attitude and Scientific Temperament among the students of P.C.M. group.

At starting Phase, classes were Organized online with the help of Zoom App due to Pandemic of Covid-19.

Assignment and lecture notes were also provided to the students during online teaching.

Dessertation work regarding future application of Mathematics in latest technology were provided at the beginning of session to the B.Sc. students.

Some students of Mathematics actively participated in Annual N.S.S. 7 days camp.

Moreover, Mathematics students participated at different events organized by colleges!

## वनस्पति विज्ञान विभाग

सत्र 2021-22 में वनस्पति विज्ञान विभाग में B.Sc. प्रथम वर्ष में **39** छात्र, B.Sc. द्वितीय वर्ष में **35** छात्र एवं B.Sc. तृतीय वर्ष में **27** छात्र पंजीकृत हुए। छात्र-छात्राओं को श्री देव सुमन विश्वविद्यालय से उपलब्ध पाठ्यक्रम को लिखित एवं प्रायोगात्मक रूप से विस्तार से पढ़ाया जाता है।

वनस्पति विज्ञान विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ. प्रतिभा आर्य

द्वारा **''जलवायु परिवर्तन का स्थानीय वनस्पतियों पर पड़ रहे दुष्प्रभाव''** पर एक द्विवसीय ऑनलाईन वेबिनार का आयोजन 11-10-2021 को किया गया। जिसमें कुमाऊँ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एस.सी. सती एवं कुमाऊँ विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. पी. सी. तिवारी एवं गोविन्द बल्लभ पंत संस्थान, कोसी कटारमल, अल्मोड़ा के वैज्ञानिक डॉ. जी.सी.एस. नेगी जी ने जलवायु परिवर्तन का पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ रहे प्रभाव, बदलते मौसम का हिमालयी क्षेत्र की वनस्पतियों में पड़ रहे प्रभाव एवं जलवायु परिवर्तन का वनस्पतियों पर ही नहीं बल्कि हमारे भूगोल पर पड़ रहे प्रभाव पर व्याख्यान दिया गया। इस वेबिनार में वनस्पति विज्ञान विभाग के समस्त छात्र-छात्राओं ने एवं महाविद्यालय के शिक्षकों एवं अन्य महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों ने प्रतिभाग किया।

## राष्ट्रीय सेवा योजना

सत्र 2021-22 में राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी के राष्ट्रीय सेवा योजना में इकाई - 01 में कुल 81 छात्र-छात्राओं (विज्ञान संकाय) एवं इकाई - 02 में कुल 81 छात्र-छात्राओं (कला संकाय) ने पंजीकरण कराया।

राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रथम कार्यक्रम अधिकारी डॉ. प्रतिभा आर्य एवं द्वितीय कार्यक्रम अधिकारी श्री रजनीश कुमार के देखरेख में एक दिवसीय एवं सात दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रमों में निम्न प्रतियोगिताओं का समय-समय पर आयोजन किया गया।

**1) 8-3-2021 अंतराष्ट्रीय महिला दिवस**- अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में पोस्टर प्रतियोगिता एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन।

**(i) भाषण प्रतियोगिता** - (''विकासशील भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण एक मिथक है'')

| **प्रतियोगी का नाम** | **कक्षा** | **स्थान** |
|---|---|---|
| (i) शिवानी | B.Sc V Sem | प्रथम |
| (ii) पूजा | M.A. I Sem | द्वितीय |
| (iii) सूरज देवराड़ी | B.Sc I Year | तृतीय |

**(ii) पोस्टर प्रतियोगिता** -

| **प्रतियोगी का नाम** | **कक्षा** | **स्थान** |
|---|---|---|
| (i) दिव्या | B.Sc V Sem | प्रथम |
| (ii) किरन | B.Sc V Sem | द्वितीय |
| (iii) रोशनी | B.Sc V Sem | तृतीय |

**2) 23-3-2021 आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत कार्यक्रम** -

**क्विज प्रतियोगिता** -

| **प्रतियोगी का नाम** | **कक्षा** | **स्थान** |
|---|---|---|
| (i) इन्दरा अरोड़ा | B.A III Year | प्रथम |
| (ii) रोशनी जोशी | B.A III Year | द्वितीय |
| (iii) रेनू रावत | B.A I Year | तृतीय |

**3) 2-10-2021 गांधी जंयती एवं आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत कार्यक्रम** -

**(i) पोस्टर प्रतियोगिता** -

| **प्रतियोगी का नाम** | **कक्षा** | **स्थान** |
|---|---|---|
| (i) साक्षी बिष्ट | B. Sc II Year | प्रथम |
| (ii) नेहा मिश्रा | B.A III Year | द्वितीय |
| (iii) नवीन चन्द्र | B.Sc III Year | तृतीय |

**(ii) स्वलिखित कविता** -

| **प्रतियोगी का नाम** | **कक्षा** | **स्थान** |
|---|---|---|
| (i) अशोक | B. A I Year | प्रथम |
| (ii) नेहा मिश्रा | B.A III Year | द्वितीय |
| (iii) मीना | B.Sc III Year | तृतीय |

**(iii) देशभक्ति गायन** -

| **प्रतियोगी का नाम** | **कक्षा** | **स्थान** |
|---|---|---|
| (i) नेहा मिश्रा | B. A III Year | प्रथम |
| (ii) दीपा, उर्मिला | B.A II Year | द्वितीय |
| (iii) रोशनी, इन्दरा | B.A III Year | तृतीय |

**(iv) भाषण प्रतियोगिता** -

| **प्रतियोगी का नाम** | **कक्षा** | **स्थान** |
|---|---|---|
| (i) रोशनी | B. A III Year | प्रथम |
| (ii) मीना | B.Sc III Year | द्वितीय |
| (iii) इन्दरा अरोड़ा | B.A III Year | तृतीय |

**4) 12-11-2021 एवं 13-11-2021 उत्तराखण्ड राज्य के 21 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में उत्तराखण्ड महोत्सव के अन्तर्गत** -

**(i) ऐपण प्रतियोगिता** -

| प्रतियोगी का नाम | कक्षा | स्थान |
|---|---|---|
| (i) रिया मौर्य | B. Sc I Year | प्रथम |
| (ii) मनीषा | B. Sc I Year | द्वितीय |
| (iii) इन्दरा अरोड़ा | B.A III Year | तृतीय |

**(ii) पोस्टर प्रतियोगिता –**

| प्रतियोगी का नाम | कक्षा | स्थान |
|---|---|---|
| (i) रिया मौर्य | B. Sc I Year | प्रथम |
| (ii) इन्दरा अरोड़ा | B. A III Year | द्वितीय |
| (iii) नरेन्द्र चन्द्र | B.Sc III Year | तृतीय |

**(iii) स्लोगन प्रतियोगिता –**

| प्रतियोगी का नाम | कक्षा | स्थान |
|---|---|---|
| (i) नीतू | B. Sc I Year | प्रथम |
| (ii) अनुराधा | B. Sc I Year | द्वितीय |
| (iii) मंयक बिष्ट, सचित | B.Sc I Year | तृतीय |

**(iv) भाषण प्रतियोगिता –**

| प्रतियोगी का नाम | कक्षा | स्थान |
|---|---|---|
| (i) रोशनी | B. A III Year | प्रथम |
| (ii) मनीष साह | B. A I Year | द्वितीय |
| (iii) किरन | B.Sc I Year | तृतीय |

**5) 28-2-2022 अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में –**

**(i) मॉडल प्रस्तुतीकरण-**

| प्रतियोगी का नाम | कक्षा | स्थान |
|---|---|---|
| (i) रिया मौर्य | B. Sc I Year | प्रथम |
| (ii) गौरव, कुलदीप सिंह | B.Sc III Year | द्वितीय |
| (iii) आशीष, अमन | B.Sc III Year | तृतीय |

**(ii) वाद-विवाद प्रतियोगिता –**

| प्रतियोगी का नाम | कक्षा | स्थान |
|---|---|---|
| (i) अशोक | B.A. I Year | प्रथम |
| (ii) रिया मौर्य | B.Sc I Year | द्वितीय |
| (iii) अनिल | B.A. I Year | तृतीय |

**6) 8-3-2022 अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में –**

**(i) भाषण प्रतियोगिता-**

| प्रतियोगी का नाम | कक्षा | स्थान |
|---|---|---|
| (i) आंचल नेगी | B.Sc III Yr. | प्रथम |
| (ii) बबीता | B.A. III Yr. | द्वितीय |
| (iii) मीना | B.Sc III Yr. | तृतीय |

**(ii) पोस्टर प्रतियोगिता –**

| प्रतियोगी का नाम | कक्षा | स्थान |
|---|---|---|
| (i) रिया मौर्य | B.Sc I Yr. | प्रथम |
| (ii) इन्दरा अरोड़ा | B.A III Yr. | द्वितीय |
| (iii) नरेन्द्र चन्द्र | B.Sc. III Yr. | तृतीय |

**(iii) कविता प्रतियोगिता –**

| प्रतियोगी का नाम | कक्षा | स्थान |
|---|---|---|
| (i) मनीषा | B.Sc I Yr. | प्रथम |
| (ii) अशोक कुमार | B.A I Yr. | द्वितीय |
| (iii) साक्षी बिष्ट | B.Sc. II Yr. | तृतीय |

**विज्ञान- संकाय विभागीय परिषद्**

**अध्यक्ष**- अमन सिंह – B.Sc. II Yr.

**उपाध्यक्ष**- सचिन जोशी – B.Sc. I Yr.

**सचिव**- सचिन जोशी – B.Sc. I Yr.

**सहसचिव**- सीमा जोशी – B.Sc. III Yr.

**कोषाध्यक्ष**- ममता बिष्ट – B.Sc. II Yr.

## छात्र संघ सत्र (2019-20)

राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी, चमोली का छात्र-संघ चुनाव 2019-20 महाविद्यालय के प्राचार्य के दिशा-निर्देशन एवं छात्र-संघ प्रभारी, डा0 प्रतिभा आर्य के नेतृत्व एवं महाविद्यालय के समस्त शिक्षकों एवं शिक्षेणत्तर कर्मचारियों के सहयोग से दिनांक 09-09-2019 को सम्पन्न हुआ। जिसमें 75% छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। मतगणना के दिवस में ही चुनाव परिणाम घोषणा के साथ ही सफल पदाधिकारियों को महाविद्यालय प्राचार्य द्वारा गोपनीयता की शपथ एवं सर्वदा महाविद्यालय के हित में कार्य करने की प्रतिज्ञा दिलाई गई।

सत्र 2020-21 एवं सत्र 2021-22 का छात्र-संघ चुनाव कोविड - 19 के कारणों से शून्य रहा है।

## छात्र संघ सत्र 2019-20

1) कु0 गरिमा -M.A. I Sem - अध्यक्ष

2) कु0 मनीषा -B.A. I Sem - उपाध्यक्ष
3) कु0 कविता -B.A. I Sem - सचिव
4) मनीष कुमार-B.A. I Sem - सह-सचिव
5) आशीष कुमार-B.Sc. I Sem - कोषाध्यक्ष
6) कृष्णा सिंह -B.A. I Sem - विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

## रसायन विज्ञान विभाग

राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी चमोली में रसायन विज्ञान विभाग की स्थापना 1997-98 में स्नातक स्तर के साथ हुई। इस विभाग में कुल तीन पद स्वीकृत हैं जिसमें एक प्राध्यापक डॉ0 शंकर राम, एक प्रयोगशाला सहायक श्री नीतिश कुमार एवं एक प्रयोगशाला वाहक श्री रमेश चन्द्र कार्मिक कार्यरत है। स्नातक स्तर पर इस विभाग में कुल 60 सीट छात्र-छात्राओं के लिए स्वीकृत हैं।

सत्र 2020-21 में बी0एस0सी0 प्रथम वर्ष में 60 (साठ), बी0एस0सी द्वितीय वर्ष में 32 (बत्तीस) तथा बी0एस0सी तृतीय वर्ष में 14 (चौदह) छात्र-छात्राओं ने प्रवेश लिया एवं परीक्षा दी। इस सत्र में परीक्षाफल बी0एस0सी0 प्रथम वर्ष में 77 प्रतिशत, बी0एस0सी0 द्वितीय वर्ष में 94 प्रतिशत, बी0एस0सी0 तृतीय वर्ष में 79 प्रतिशत रहा है। वर्तमान सत्र 2021-22 में बी0एस0सी0 प्रथम वर्ष में 60, बी0एस0सी0 द्वितीय वर्ष में 45 तथा बी0एस0सी0 तृतीय वर्ष में 30 छात्र-छात्राओं ने प्रवेश लिया है।

सत्र 2020-21 में प्रथम श्रेणी के साथ उत्तीर्ण दो छात्राऐं (कु0 बबीता देवराड़ी एवं कु0 ममता जोशी) राजकीय महाविद्यालय गोपेश्वर, चमोली से रसायन विज्ञान विषय में एम0एस0सी0 कर रही हैं।

वर्तमान में रसायन विज्ञान विभाग में कार्यरत डॉ0 शंकर राम ने अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल में तीन शोध पत्र प्रकाशित किये हैं। समय-समय पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में भाग लिया है।

1. Palladium catalyzed ortho-halogen induced deoxygenative approach of alkyl aryl ketone to 2-vinyl benzoic acid. (I.F=6.222)
   *Chemical Communication*, 56(73), **2020,** 10674-10677.
2. Supported palladium catalyzed aminocarbonylation of aryl iodides employing bench stable CO and NH3 surrogates. (I.F = 3.876)
   *Organic and moleculer chemistry,* 18(36), **2020**, 7193-7200.
3. Supported palladium-gold catalyzed carbonylative methyl thioesterification of aryl iodides using oxalic acid and DMSO as CO and CH3SH surrogates. (I.F. = 3.319)
   *Asian Journal of organic chemistry, 9(12),* **2020,** 2099-2102.

## समाजशास्त्र विभाग

विगत शैक्षिक वर्ष 2021-22 में मेरे द्वारा समाजशास्त्र विषय के प्रोन्नयन एवं शैक्षिक उत्कृष्टान हेतु बतौर सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र के रूप में अकादमिक शिक्षण एवं शैक्षिक नवाचार हेतु महाविद्यालय द्वारा आंवटित कार्यो में यथासम्भव योगदान दिया गया। इस समय समाजशास्त्र विभाग में कुल 123 कुल छात्र व छात्राओं की संख्या है। जिसमें बी.ए. प्रथम वर्ष में 56, बी.ए. द्वितीय वर्ष में 36 और बी.ए. तृतीय वर्ष में 31 छात्र व छात्राऐं पंजीकृत हैं। विगत वर्ष समाजशास्त्र विभाग का परीक्षाफल 75% से अधिक रहा। शैक्षणिक कार्यो के साथ-साथ महाविद्यालय में संचालित अनेक कार्यक्रमों में समाजशास्त्र विभाग के छात्र व छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 8 मार्च को महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें समाजशास्त्र विभाग ने अपनी सहायक भूमिका अदा की। कार्यक्रम के दौरान भाषण प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता और कविता पाठ का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा बबीता ने द्वितीय, पोस्टर प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय की छात्रा इंदिरा अरोड़ा और कविता पाठ में बी.ए. प्रथम वर्ष के छात्र अशोक कुमार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

## सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

## राष्ट्रीय सेवा योजना
## (National Service Scheme)

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) भारत सरकार युवा मामलों ओर खेलों, खेल मंत्रालय की एक केन्द्रीय क्षेत्र की योजना है। जिसे औपचारिक रूप से 24 सितम्बर 1969 को शुरू किया गया। यह ग्याहरवी और बाहरवी कक्षा के छात्रों और स्कूलों के छात्र तथा युवाओं को अवसर प्रदान करता है। भारत के कॉलेजों और विश्वविद्यालय स्तर पर तकनीकी संस्थान स्नातक

और स्नातकोत्तर स्तर पर विभिन्न सरकारी नेतृत्व वाली सामुदायिक सेवा गति-विधियों और कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए एक सक्रिय सदस्य होने के नाते हम छात्र स्वयंसेवकों के पास एक कुशल सामाजिक नेता कुशल प्रशासक और नेतृत्व मानव स्वभाव को समझने वाले व्यक्ति होने का प्रदर्शन और अनुभव होगा।

**राष्ट्रीय सेवा योजना आदर्श वाक्य** -

**NOT ME BUT YOU**

**मैं नहीं किन्तु आप**

**हमारा सात दिवसीय शिविर** - 25 मार्च 2022 से 31 मार्च 2022 तक चला जिसका नेतत्व डॉ0 प्रतिभा आर्या, असि. प्रोफेसर वनस्पति विज्ञान तथा श्री रजनीश कुमार, असि. प्रोफेसर अर्थशास्त्र ने किया।

**राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर प्रथम दिवस** - हमारे शिविर का प्रथम दिवस उद्घाटन के रूप में हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि - शिक्षक अभिभावक संघ के अध्यक्ष सेवानिवृत सैनिक श्री गोपाल सिंह फरस्वांण तलवाड़ी, ग्राम सभा तलवाड़ी, प्रधान श्रीमती गीता जी तथा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 योगेन्द्र चंद्र सिंह थे।

हमारे शिविर में कुल 40 लोग थे, जिसमें 15 लड़कियां तथा 25 लड़के थे। सर्वप्रथम हमने अपनी आवश्यक सामग्री को अपने स्थान में रखा। उसके बाद अतिथियों के बैठने की व्यवस्था की। तथा कुछ समय बाद उनके नाश्ते की व्यवस्था की। कुछ समय पश्चात हमारे अतिथियों ने हमें अपने सुखी जीवन के कुछ पल बताए। हमारे अच्छे जीवन बिताने को लेकर भाषण दिए। अतिथियों को विदा करने के बाद हमारे चाय पीने का समय था। जिसमें कुछ स्वयंसेवियों ने चाय बनाई। सभी को चाय प्रदान कराई। कुछ समय के विश्राम के बाद रात के खाने के लिए कुछ स्वयं-सेवियों को भेजा गया तथा अन्य को सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार करने को बोला गया। बाकी सभी स्वयंसेवी सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी कर रहे थे। उसके पश्चात सबको खाने के लिए बुलाया गया और सबको भोजन प्रदान कराया गया। कुछ देर विश्राम के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू हुआ। कार्यक्रम खत्म होने के पश्चात सबको सोने के लिए भेज दिया जिसमें दूसरी मंजिल में स्वयं सेविकाएं तथा पहली मंजिल स्वयंसेवी थे। सभी थके हुए थे जल्द ही सो गए।

**राष्ट्रीय सेवा योजना का द्वितीय दिवस** - शिविर का प्रथम दिवस खत्म होने के बाद द्वितीय दिवस को हम सुबह छः बजे उठे तथा हमने शीघ्र ही नित्यकर्म पूर्ण किया उसके बाद सभी को एकत्र किया तथा रजनीश सर ने सभी को व्यायाम तथा योग कराया। हमारा व्यायाम तब तक जारी रहता था जब तक जो स्वयंसेवी नाश्ता बना रहे हैं। नाश्ता न बना ले उसके बाद 15 से 20 मिनट विश्राम के बाद हम नाश्ते के लिए बैठते थे। उसके पश्चात हमें बुलाया तथा 40 स्वयंसेवियों में से 8-8 का समूह बनाया गया, तथा सभी को अलग-अलग काम दिया गया। जिसमें एक समूह को खाना बनाने बाकी समूहों को साफ सफाई के कार्य में लगाया हमने महाविद्यालय का मार्ग उसके आस-पास का क्षेत्र अच्छी तरह से साफ किया तथा कंटीली झाड़ियाँ काटी।

सभी स्वयंसेवी श्रमदान के पश्चात विश्राम के लिए उपस्थित हुए तथा कुछ देर बाद सभी ने दोपहर का भोजन ग्रहण किया। इसके पश्चात हमारा बौद्धिक सत्र शुरू हुआ जिसमें हमारे इतिहास के प्रोफेसर श्री अनुज कुमार जी हमारे अतिथि थे। उन्होंने हमें सामाजिक परिवेश के बारे में जानकारी दी।

बौद्धिक कार्यक्रम खत्म होने के बाद चाय पी तथा 30 मिनट का समय खेलने के लिए दिया गया। भोजन करके व सांस्कृतिक कार्यक्रम करने के तत्पश्चात सभी स्वयंसेवी शयन के लिए चले गये।

**राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का तृतीय और चतुर्थ दिवस**- तृतीय व चतुर्थ दिवस की शुरूआत दैनिक दिनचर्या का पालन करते हुए, प्रार्थना व व्यायाम से हुई। तत्पश्चात सभी स्वयंसेवकों ने श्रमदान किया जिसमें हमने तलवाड़ी गाँव व बाजार हनुमान मंदिर व महाविद्यालय परिसर के मध्य में साफ-सफाई एवं सौंदर्यीकरण का कार्य किया। दोपहर भोजन के पश्चात बौद्धिक सत्र का कार्यक्रम किया गया। बौद्धिक सत्र में हमारे प्राचार्य डा0 योगेन्द्र चंद्र सिंह द्वारा आधुनिक जीवन में मानसिक संतुलन की आवश्यकता पर व्याख्यान दिया गया। जिसमें उन्होंने बताया की एक व्यक्ति किस प्रकार अपने जीवन में मानसिक विकारों से छुटकारा पा सकता है। अपने व्यक्तित्व को कैसे बहुमुखी बना सकता है। इसी श्रृंखला में राजनीति विज्ञान के प्राध्यापक डा0 ललित जोशी जी द्वारा जीवन के लक्ष्य निर्धारण के लिए

शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान विषय पर व्याख्यान दिया। इसके पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम व भोजन करके सब सो गए।

शिविर का तृतीय दिवस व चतुर्थ दिवस सफलतापूर्वक सहयोगी श्री रजनीश कुमार जी तथा कार्यक्रम अधिकारी डॉ. प्रतिभा आर्या की देखरेख में पूरा हुआ।

**राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का पांचवा और छठवा दिवस**- शिविर के पांचवे व छठे दिवस के कार्यक्रमों की शुरूआत सुबह योगाभ्यास एवं प्रार्थना के साथ हुई। पांचवे दिन हम स्वयंसेवको ने पर्यावरण प्रदूषण एवं कन्या भ्रूण हत्या जैसे मुद्दों पर आस-पास के ग्रामों में रैली का आयोजन किया। जिसमें हमने अपने स्लोगन (नारों) से लोगों को बताया कि किस प्रकार सुरक्षित पर्यावरण सभी के लिए आवश्यक है तथा समाज में कन्या भ्रूण हत्या से , कैसी समस्या उत्पन्न हो रही है। रैली का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य, डा. योगेन्द्र चंद्र सिंह जी द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। सम्पूर्ण रैली का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रथम अधिकारी डा. प्रतिभा आर्य तथा श्री रजनीश कुमार जी की देखरेख में किया गया। शिविर के छठे दिन बौद्धिक सत्र में प्राध्यापक सुनील कुमार जी ने स्वयंसेवकों से आधुनिकता के दौर में सामाजिक समस्याओं के बारे में बात की। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के प्राध्यापक शंकर राम जी अनुज कुमार जी तथा डा. नीतू पाण्डे उपस्थित रहे।

**राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का सातवां तथा अंतिम दिवस**- हमारे शिविर का अंतिम दिवस, जिसमें सभी के चेहरे में एक दूसरे के लिए अपनापन था। इस दिन रात्रि शिविर का नहीं था। आज सबको वापस जाना था सबने नाश्ता किया। आज हमारे मुख्य अतिथि प्राचार्य महोदय तथा सभी अध्यापक थे। आज सांस्कृतिक कार्यक्रम पूरे ड्रेस (गणवेश) के साथ हुआ था। हम सबने इस शिविर से कई नई बातें सीखी। अन्त में सब अपने घर को रवाना हुए।

**राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में मेरा अनुभव** - राष्ट्रीय सेवा योजना के इस शिविर में मुझे मेरा अकेलापन जो शायद मुझमें था, मेरा समूह के बीच में रहना सबको एक मित्र जो सभी मेरे लिए समान थे उनको समझने व समझाने का अवसर मिला।

मैं अपने घर से कभी दूर नहीं रहा किन्तु इस सात दिवसीय शिविर में मुझे घर से दूर रहने का अनुभव प्राप्त हुआ। मुझे कई बातें सीखने को मिली। शिविर के दौरान हमें अपने अध्यापकों के करीब व उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। हम 40 लोग एक परिवार जैसे रहे।

**यह था हमारा सात दिवसीय शिविर**
**मैं नहीं किन्तु आप**
**NOT ME BUT YOU**

**राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवी**
नदीम अंसारी B. A I Year
राहुल कुमार B. A I Year

## शिक्षक - अभिभावक संघ

शैक्षणिक सत्र 2020-21 एवं 2021-22 में राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी - थराली में अभिभावक-शिक्षक संघ में - श्री गोपाल सिंह फरस्वाण अध्यक्ष, श्री खिलाप सिंह रावत सदस्य, श्री कुँवर सिंह सदस्य एवं श्री मोहन सिंह मेहरा सदस्य तथा डॉ. प्रतिभा आर्य, श्री अनुज कुमार एवं श्री सुनील कुमार शिक्षक सदस्य चुने गये। महाविद्यालय में शिक्षक-अभिभावक संघ का गठन महाविद्यालय में शैक्षिक स्तर को ऊपर उठाना एवं महाविद्यालय के विकास में निरन्तर अपनी भागीदारी प्रदान करना है।

**डॉ. प्रतिभा आर्य**
संयोजक

## आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC)

'आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ' का गठन 14-11-17 से महाविद्यालय स्तर पर हुआ है। यह प्रकोष्ठ महाविद्यालय प्राचार्य की अध्यक्षता व दिशा-निर्देशन में रहते हुए महाविद्यालय की गुणवत्ता संवर्धन गतिविधियों की योजना के लिए कार्यरत है। IQAC के अन्तर्गत गुणवत्तापूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम आधारभूत संरचना तैयार करना है। महाविद्यालय में छात्र-केन्द्रित शिक्षण वातावरण बनाना है एवं नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा में नित नए नवाचार के लिए नवीनतम तकनीक का कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए शिक्षकों को सक्षम बनाना है।

**डॉ. प्रतिभा आर्य**
संयोजक

## AISHE

(All India Survey of Higher Education) केन्द्रीय उच्च शिक्षा मंत्रालय द्वारा उच्च शिक्षा की स्थिति को चित्रित करने के लिए AISHE (उच्च शिक्षा पर वार्षिक वेब आधारित अखिल भारतीय सर्वेक्षण) के तहत राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी का डाटा 2011-12 से निरन्तर दिया जा रहा है। जिसमें शिक्षक, छात्र नामांकन, परीक्षा परिणाम, शिक्षा वित्त, बुनियादी ढाँचे जैसे कई मापदण्डों पर डाटा दिया जा रहा है।

**डॉ. प्रतिभा आर्य**
संयोजक

## एण्टी ड्रग्स प्रकोष्ठ
## (Anti Drug Cell)

महाविद्यालय में 2021 से एण्टी ड्रग्स प्रकोष्ठ गठित है, जो महाविद्यालय में छात्रों को नशे (ड्रग्स एडिक्शन) से बचाने के लिए निरन्तर कार्यरत है। महाविद्यालय के एन.एस.एस. एवं IQAC के अन्तर्गत नशा-विरोधी विभिन्न कार्यक्रमों-गोष्ठी एवं रैली तथा नुक्कड़ नाटकों का आयोजन महाविद्यालय स्तर पर किया जाता है जिससे छात्रों को नशे के दुष्प्रभाव की जानकारी देते हुए जागरूक किया जाता है।

**डॉ. नीतू पाण्डे**
संयोजक

## पुस्तकालय

राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी शैक्षिक प्रक्रिया में पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका को अंगीकार करते हुए पृथक रूप से पुस्तकालय भवन 307.75 स्क्वायर मीटर में निर्मित है और इस नए कक्ष में सत्र 2021-22 से संचालित किया जा रहा है। इसमें कला एवं विज्ञान संकाय की कुल 8559 किताबें विद्यार्थियों के हितार्थ उपलब्ध हैं। जिसमें सत्र 2019-20 में नई आगत की कुल 467 किताबें भी शामिल हैं। उपलब्ध किताबों में पाठ्यपुस्तकें सहित पाठ्येत्तर किताबें, पत्रिकाएं एवं संदर्भ ग्रन्थ भी हैं। पुस्तकालय कक्ष में सम्बद्ध वाचनालय की भी व्यवस्था है तथा ई-लाइब्रेरी का कार्य गतिमान है। पुस्तकालय प्रभारी श्री नीतिश कुमार द्वारा आगत-निर्गत पंजिका, डेली विजिट पंजिका तथा प्राध्यापकों एवं गैर शैक्षणिक कर्मचारियों, पुस्तकें निर्गत करने हेतु पृथक-पृथक पंजिकाएं संरक्षित की गई हैं। वर्तमान में हमारे ग्रंथालय की ग्रंथ/पुस्तक सूची राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय सूचना केन्द्र द्वारा संचालित ई-ग्रंथालय योजना में आच्छादित हैं। समग्र रूप से हमारा पुस्तकालय शैक्षणिक उन्नयन की दिशा में निरन्तर प्रगतिशील रुप से शिक्षण प्रक्रिया से नाभिनालबद्ध रूप से सम्बद्ध है।

**डॉ. ललित जोशी**
संयोजक

## मुख्यमंत्री फ्री टेबलेट योजना

उत्तराखण्ड में मुख्यमंत्री फ्री टेबलेट योजना की शुरुआत 15 अगस्त 2021 को हुई। राजकीय महाविद्यालय तलवाड़ी, चमोली में कुल 57,00000=00 लाख की धनराशि प्राप्त हुई। महाविद्यालय में कुल 475 छात्र-छात्राओं में से 450 ने फ्री टेबलेट योजना हेतु एफिडेविट के साथ अपना आवेदन - पत्र जमा किया था। महाविद्यालय में आवेदन करने वाले सभी 450 छात्र/छात्राओं के खाते में प्रति छात्र 12000=00 के हिसाब से 54,00000=00 की धनराशि हस्तांतरित कर दी गयी है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. योगेन्द्र चन्द्र सिंह के निर्देशन में ''मुख्यमन्त्री फ्री टेबलेट योजना'' का शत-प्रतिशत सफल क्रियान्वयन किया गया। महाविद्यालय में टेबलेट समिति का कार्य डॉ. प्रतिभा आर्या, डॉ. नीतू पाण्डेय, अनुज कुमार, डॉ. ललित जोशी, डॉ. पुष्पा रानी, हुकुम सिंह द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया।

**डॉ. प्रतिभा आर्य**
संयोजक, टेबलेट समिति विज्ञान

**अनुज कुमार**
संयोजक, टेबलेट समिति कला

**जीवन का सबसे महत्वपूर्ण सवाल यही है कि आप दूसरों के लिये क्या कर रहे हो।**
- मार्टिन लूथर किंगजूनियर

# महाविद्यालय परिवार

## डॉ0 वाई.सी. सिंह

**प्राचार्य**

**प्राध्यापक वर्ग (नियमित)**

1. डॉ. प्रतिभा आर्य (असि. प्रोफेसर) वनस्पति विज्ञान विभाग
2. श्री शंकर राम (असि. प्रोफेसर) रसायन विज्ञान विभाग
3. श्री अनुज कुमार (असि. प्रोफेसर) इतिहास विभाग
4. डॉ. नीतू पाण्डे (असि. प्रोफेसर) भौतिक विज्ञान विभाग
5. श्री रजनीश कुमार (असि. प्रोफेसर) अर्थशास्त्र विभाग
6. डॉ. ललित जोशी (असि. प्रोफेसर) राजनीति विज्ञान विभाग
7. डॉ. पुष्पा रानी (असि. प्रोफेसर) हिन्दी विभाग
8. श्री सुनील कुमार (असि. प्रोफेसर) राजनीति विज्ञान विभाग
9. श्री मनोज कुमार (असि. प्रोफेसर) राजनीति विज्ञान विभाग

**गैस्ट फैकल्टी प्राध्यापक वर्ग**

1. डॉ. सुनील कुमार – हिन्दी
2. श्री कुलदीप जोशी – गणित
3. डॉ. सचिन सेमवाल – संस्कृत
4. डॉ. जमशेद अंसारी – अंग्रेजी
5. श्री मोहित उप्रेती – समाजशास्त्र
6. डॉ. सुनीता भण्डारी – हिन्दी
7. डॉ. निशा ढौंडियाल – जन्तु विज्ञान
8. डॉ. संतोष पन्त – संस्कृत

**शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | श्री प्रमेन्द्र सिंह रौथाण | वरिष्ठ सहायक (कार्यालय) |
| 2. | श्री महिपाल सिंह | कनिष्ठ सहायक (कार्यालय) (उपनल) |
| 3. | श्री नीतिश कुमार | प्रयोगशाला सहायक रसायन विज्ञान |
| 4. | श्री हुकुम सिंह | प्रयोगशाला सहायक भौतिक विज्ञान (उपनल) |
| 5. | श्री धीरेन्द्र सिंह | प्रयोगशाला सहायक जन्तु विज्ञान (उपनल) |
| 6. | श्री रमेश चन्द्र | प्रयोगशाला परिचर रसायन विज्ञान |
| 7. | श्री प्रताप सिंह, | कार्यालय परिचर |
| 8. | श्रीमती दीपा रावत | प्रयोगशाला परिचर वनस्पति विज्ञान |
| 9. | श्री पंकज रावत | अनुसेवक-संबद्ध |
| 10. | श्री शम्भू प्रसाद चमोली | अनुसेवक-संबद्ध |
| 11. | श्री गुड्डू सिंह | कार्यालय, सफाई, चौकीदार (उपनल) |

❖❖❖

# अनमोल विचार

1- समय सबसे बुद्धिमान सलाहकार है – पेरिक्लेस
2- समय जिसके दांत सब कुछ चबा जाते हैं, वह सत्य के सामने शक्तिहीन है। –थोमस हक्सले
3- पैसा बर्बाद करने से बस आपके पास पैसा नहीं होगा, लेकिन समय बर्बाद करके आप जिदंगी का एक हिस्सा खो देते हैं। –माइकल लेबोईक
4- आप बिलम्ब कर सकते हैं पर समय नहीं करेगा। –बेंजामिन फ्रैंकलिन
5- मुझे घड़ी पर शासन करना है, उससे शासित नहीं होना है। –गोल्डा मेसर
6- समय धन है। –बेंजामिन, फ्रैंकलिन
7- समय आपके जीवन का एक सिक्का है। आपके पास बस यही एक सिक्का है और सिर्फ आप ही तय कर सकते हैं कि इसे कैसे खर्च करना है? –कार्ल सैंडबर्ग
8- समय वह स्कूल है जिसमें हम सीखते हैं, समय वो आग है जिससे हम जलते हैं। –डेलमोर स्वार्त्ज
9- बुद्धि का सही संकेत ज्ञान नहीं बल्कि कल्पनाशीलता है। – अल्बर्ट आइंस्टीन
10- क्रोध मूर्खों की छाती में बसता है। – अल्बर्ट आइंस्टीन
11- आप अपनी तुलना किसी से भी न करें अगर आप ऐसा करते हो तो आप खुद की बेइज्जती कर रहे हो। –बिल गेट्स
12- आप एकाग्रचित होकर ही महान कार्य कर सकते हैं। चाहे आप कितने ही योग्य क्यों न हों। –बिल गेट्स
13- सफलता मिलने के बाद खुशियाँ मनाना तो ठीक है परन्तु गलतियों से सीखना और भी महत्वपूर्ण है। –बिल गेट्स
14- जब हमारे सिग्नेचर, ऑटोग्राफ में बदल जाये तो वह सफलता की निशानी है। –अब्दुल कलाम
15- शिखर पर पहुंचने का सामर्थ्य होना चाहिए, फिर वह एवरेस्ट का शिखर हो या आपके करियर का। –अब्दुल कलाम
16- आत्म विश्वास और कड़ी मेहनत से असफलता को हराया जा सकता है। –अब्दुल कलाम
17- इंतजार करने वालों को उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले बाकि छोड़ देते हैं। –अब्दुल कलाम
18- एक अच्छी पुस्तक हजार दोस्तों के बराबर होती है, वहीं एक सच्चा दोस्त पूरी पुस्तकालय के बराबर होता है। –अब्दुल कलाम
19- सपने वो नहीं जो आपकी नींद में आएं, सपने तो वो हैं जो आपको नींद न आने दें। –अब्दुल कलाम
20- हिम्मत डर और आत्मविश्वास का जरिया है। –अरस्तु
21- सफलता पाने के लिए आत्मविश्वास जरूरी है और आत्मविश्वास के लिए तैयारी। –आर्थर ऐश
22- जीवन में सफल होने के लिए आपको दो चीजें चाहिए- अनभिज्ञता व आत्मविश्वास। –मार्क ट्वैन
23- गहरे ध्यान में एकाग्रता का प्रवाह, तेल के निरंतर प्रवाह की तरह होता है। –महर्षि पतंजलि
24- जो व्यक्ति हमेशा अपने गुणों का बखान करता है वो सबसे कम गुणी होता है। –जवाहर लाल नेहरू
25- हमेशा ही अज्ञानता बदलाव से डरती है। –जवाहर लाल नेहरू
26- संस्कृति मन और आत्मा का विस्तार है। –जवाहर लाल नेहरू
27- जीवन लम्बा होने के बजाय महान होना चाहिए –बी.आर. अम्बेडकर
28- मैं एक ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाए। –बी.आर अम्बेडकर
29- अनुशासन लक्ष्यों और उपलब्धि के बीच का एक पुल है। –मदर टेरेसा
30- उठो, जागो और तब तक रूको नहीं जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। –स्वामी विवेकानन्द
31- जो दूसरों से घृणा करते हैं वो खुद को दूषित करते हैं। –स्वामी विवेकानन्द
32- आपका जितना बड़ा संहर्ष होगा उतनी बड़ी आपकी जीत भी होगी। –स्वामी विवेकानन्द
33- अच्छे चरित्र का निर्माण हजारों ठोकरों के बाद होता है। –स्वामी विवेकानन्द
34- तुम्हारी आत्मा के अलावा तुम्हारा कोई और गुरू नहीं है। –महात्मा गाँधी
35- वास्तविक सुन्दरता हृदय की पवित्रता में है। –महात्मा गाँधी
36- बिना जिज्ञासा के ज्ञान नहीं मिलता और दु:ख के बिना सुख नहीं होता। –महात्मा गाँधी
37- पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि पुस्तकें आत्मा को भी उज्जवल करती हैं। –महात्मा गाँधी
38- प्रेम दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है। –महात्मा गाँधी
39- शब्द अनजान जगहों में हमारे लिए पुल का निर्माण करते हैं। –अडोल्फ़ हिटलर
40- चरित्र की शुद्धि ही ज्ञान पाने का उद्देश्य होना चाहिए। –महात्मा गाँधी
41- पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। –महात्मा गाँधी
42- साथ एक है और उसको पाने के रास्ते बहुत हैं। –महात्मा गाँधी

## Quotations

1. Actions speak outer them words.
2. All's well that ends werl
3. All that glitters is not gold
4. Charity begums at home
6. A room without books is like a body without srol
7. Live as if you were to die tomorrow. Learn as if you were to live forever.
8. You educate a main, you educate a man. You you educate a woman you educate severation
9. Education the most powerful weapon which you can use to change the world
10. The grates to every of knowledge is not gnarane, it is illusion as knowledge.